नवरात्रि द्वितीय दिवस

आज होगी माता ब्रह्मचारिणी की पूजा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17 | 5 आज होगी माता ब्रह्मचारिणी की पूजा | सम्पादकीय ऐसे ही नहीं मिल जाती 'राम रहीम' को पैरोल | एथेनॉल निर्माताओं की लिवाली से मक्का में उछाल 5

वर्ष 11 अंक 132 E-mail: dholpur@hotmail.com फरीदाबाद, शुक्रवार 04 अक्टूबर 2024 ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

मोदी सरकार ने किसानों के लिए 1 लाख करोड़ की 2 योजनाओं का किया ऐलान

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने किसानों और मध्यम वर्ग की आय को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि यह निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में लिया गया।

कृषि विकास योजनाओं की मंजूरी

बैठक में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना और कृषोन्नति योजना को मंजूरी दी गई है। इन योजनाओं का कुल बजट 1,01,321 करोड़ रुपये होगा। इन दोनों योजनाओं के अंतर्गत 9 अलग-अलग योजनाएं शामिल हैं, जो किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद करेंगी।

खाद्य तेल उत्पादन के लिए नया मिशन

केंद्रीय कैबिनेट ने 10,103 करोड़ रुपये के राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन - तेल बीज को भी मंजूरी दी है। इस योजना का लक्ष्य 2031 तक खाद्य तेलों का उत्पादन 1.27 करोड़ टन से बढ़ाकर 2 करोड़ टन करना है।

चेन्नई मेट्रो के दूसरे चरण को मंजूरी

इसके साथ ही, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने चेन्नई मेट्रो के दूसरे चरण को मंजूरी देने का भी ऐलान किया। इस परियोजना पर 63,246 करोड़ रुपये की लागत आएगी। दूसरे चरण की कुल लंबाई 119 किलोमीटर होगी और इसमें कुल 120 स्टेशन होंगे, जो सभी वॉकिंग डिस?टेंस पर होंगे। इस परियोजना में भारत सरकार और तमिलनाडु सरकार की 50-50 फीसदी हिस्सेदारी होगी, और इसका निर्माण चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड करेगी। चेन्नई में 2026 में जनसंख्या 1.26 करोड़ और 2048 में 1.80 करोड़ होने का अनुमान है।

केंद्र सरकार के इन निर्णयों से न केवल किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी, बल्कि मध्यम वर्ग की खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी। इसके अलावा, चेन्नई मेट्रो के विस्तार से शहर की यातायात समस्याओं में सुधार होगा। यह योजनाएं सरकार की विकासशील नीतियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में हरियाणा में किया रोड शो

हरियाणा में तीसरी बार प्रचंड बहुमत से बनेगी भाजपा की सरकार

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को हरियाणा विधानसभा चुनाव के प्रचार के अंतिम दिन पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में जिला झज्जर के मातनहेल और भिवानी जिले के तोशाम विधानसभा के तोशाम में रोड शो कर पार्टी प्रत्याशियों को ज्यादा से ज्यादा मतों से जिताने की अपील आम जनता से की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रोड शो के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि हरियाणा में एक बार फिर हर तरफ भाजपा का माहौल है और तीसरी बार प्रचंड बहुमत से फिर भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी। आज जहां मैंने पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में रोड शो किया वहां हमें ऐतिहासिक जीत हासिल होगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी हरियाणा में पिछले दो चुनावों में फेल हो चुके हैं और अब तीसरी बार हरियाणा में भी फेल होंगे।

हरियाणा की जनता समझदार, भाजपा को चुनेगी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हरियाणा की जनता बहुत समझदार है। यहां की जनता अपने प्रदेश और देश के विकास के लिए भाजपा को ही अपना आशीर्वाद दे रही है। झज्जर विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी श्री कप्तान बिरधाना और तोशाम विधानसभा से पार्टी प्रत्याशी व पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बंसीलाल की पोती श्रुति चौधरी क्षेत्र के विकास के प्रति प्रतिबद्ध हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हरियाणा में अभी डबल इंजन की सरकार कार्य कर रही है। विपक्षी दलों के पास विकास का कोई विजन नहीं है। हरियाणा के विकास के लिए भाजपा यहां तीसरी बार ऐतिहासिक बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है।

साफा पहनाकर किया स्वागत, रोड शो में उमड़ा जनसैलाब

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का ने झज्जर विधानसभा में लगभग 15 किमी लंबा रोड शो किया। उनका काफिला मातनहेल, तुच्छकवास, खेड़ी और खातिवास से निकला। तोशाम विधानसभा के तोशाम में आयोजित रोड शो डॉ. यादव का भव्य स्वागत किया गया। रोड शो के दौरान लगातार 'भाजपा जिंदाबाद', 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जिंदाबाद' के नारे लगाए जा रहे थे। रोड शो का सड़क किनारे हजारों लोगों ने पुष्पवर्षा और साफा पहनाकर डॉ. यादव का कर स्वागत किया। चौक-चौराहों पर आतिशबाजी और पटाखा फोड़कर रोड शो का स्वागत किया गया। रोड शो के दौरान भाजपा प्रत्याशियों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करने और मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत करने के लिए जन सैलाब उमड़ पड़ा।

अनुराग जैन ने मुख्य सचिव का पदभार ग्रहण किया

भोपाल। राज्य शासन के 35 वें मुख्य सचिव के रूप में 1989 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अनुराग जैन ने आज मंत्रालय में पदभार ग्रहण किया। मुख्य सचिव जैन को वरिष्ठ अधिकारियों ने पुष्प-गुच्छ भेंट किए।

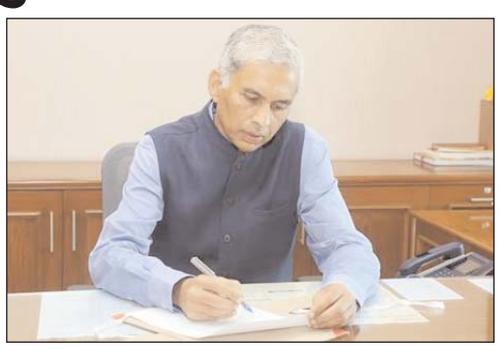

मुख्य सचिव जैन का जन्म 11 अगस्त 1965 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर में हुआ। भारतीय प्रशासनिक सेवा में जॉइनिंग के बाद जैन की पहली पोस्टिंग सागर में सहायक कलेक्टर के पद पर जून 1990 में हुई। बहुमुखी प्रतिभा के धनी जैन की शैक्षणिक योग्यता बी.टेक. इंजीनियरिंग एवं एम.ए.लोक प्रशासन (यू.एस.ए.) है।

मुख्य सचिव जैन मंडला, मंदसौर और भोपाल जिले में कलेक्टर के पद पर पदस्थ रहें। जैन ने मध्यप्रदेश शासन में सचिव, प्रमुख सचिव, और अपर मुख्य सचिव के रूप में विभिन्न विभागों के दायित्वों का निर्वहन किया। मुख्य सचिव जैन भारत सरकार में भी प्रतिनियुक्ति पर प्रमुख पदों पर पदस्थ रहे।

मणिपुर : उखरुल में पुलिस थाने से लूटे हथियार

उखरूल। मणिपुर के उखरुल कस्बे में दो गुटों के बीच झड़प के दौरान भीड़ ने एक पुलिस थाने पर धावा बोल दिया और हथियार लूट लिए। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। कस्बे में 'स्वच्छता अभियान' के तहत, एक विवादित भूमि की सफाई को लेकर बुधवार को दो गुटों के बीच हुई गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई और 20 लोग घायल हो गए।

हिंसा के दौरान पुलिस थाने पर हमला किया गया। नगा समुदाय के दो गुटों के बीच झड़प के बाद शहर में निषेधाज्ञा लागू कर दी गई और मोबाइल इंटरनेट सेवाएं निलंबित कर दी गईं। यहां एक अधिकारी ने बताया, ''उखरूल कस्बे में हिंसा भड़कने के बाद अधिकतर युवाओं की भीड़ ने विनो बाजार स्थित पुलिस थाने पर धावा बोल दिया और

सरकारी हथियार लूटकर भाग गए।''

अनाधिकारिक सूत्रों ने दावा किया है कि एके-47 और इंसास राइफलों को लूटा गया है। जातीय संघर्ष से ग्रस्त इस राज्य में पहले भी विभिन्न पुलिस थानों से हथियारों की लूट की खबरें आई थीं, लेकिन उन सभी मामलों में आपस में एक दूसरे के विरोधी मेइती या कुकी समुदाय का प्रभुत्व था।

यहां एक सूत्र के अनुसार, नागा बहुल क्षेत्र में किसी पुलिस थाने पर पहली बार हमला किया गया है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एल कैलुन ने बुधवार को सभी जिला पुलिस अधीक्षकों और अन्य अधिकारियों को ''हाई अलर्ट'' पर रहने तथा हथियारों और गोला-बारूद की उचित सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

नारी सशक्तिकरण के बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता: केन्द्रीय मंत्री सिंधिया

नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में वैश्य समाज की पहल सराहनीय

स्वच्छता की शुरुआत अपने घर और कार्यालय से करें

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। किसी भी देश की तरक्की उसकी आधी आबादी के सशक्तिकरण पर निर्भर करती है। जब तक हम महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ाने का कार्य नहीं करेंगे तब तक हम विकास के पूर्ण लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते। यह बात केंद्रीय दूरसंचार एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने गांधी जयंती के अवसर पर फूलबाग मैदान में वैश्य समाज द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान एवं महिला सुरक्षा जागरूकता रैली को संबोधित करते हुए कही। सिंधिया ने अपने भाषण में देश की 70 करोड़ महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि देश का विकास महिला सशक्तिकरण से सुनिश्चित होगा और इसकी शुरुआत भारत की वर्तमान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी से हो चुकी है। इसके अलावा केन्द्रीय मंत्री ने भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण एवं उनके कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चलाई जा रही उज्जवला योजना के अंतर्गत 10 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को सिलेंडर बांटकर उनके घरों में चूल्हा जलाने का काम किया गया। वहीं जन-धन योजना के तहत 40 करोड़ महिलाओं के बैंक खाते खोले गए जिसकी वजह से हमारे प्रदेश की महिलाओं को लाड़ली बहना जैसी योजना का लाभ मिल पा रहा है।

इस मौके पर सिंधिया ने देश की आजादी में वैश्य समाज के महापुरुषों द्वारा दिए गए योगदान को भी याद किया। उन्होंने कहा कि आज वैश्य समाज देशभर में अपने उद्योग- धंधे और व्यवसाय की बदौलत करोड़ों लोगों को रोजगार मुहैया कराता है, और इस समाज के साथ सिंधिया परिवार का जुड़ाव काफी गहरा है। इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री ने समाज द्वारा महिला सुरक्षा की दिशा में लिए गए 5 संकल्पों की प्रशंसा की।

इस दौरान कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत स्वच्छता की शपथ दिलाई। मंत्री ने स्वच्छता पर बोलते हुए कहा कि इसकी शुरुआत सभी लोग अपने घर और कार्यालय से करें। साथ ही महिला सुरक्षा जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में आए वैश्य समाज के लोग एवं स्थानीय जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

केन्द्रीय मंत्री सिंधिया का तीन दिवसीय शिवपुरी व गुना दौरा 7 से

नईदिल्ली। केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया आगामी 07 अक्टूबर से 09 अक्टूबर तक गुना व शिवपुरी के दौरे पर रहेंगे। श्रीमंत सिंधिया 07 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे ग्वालियर से सड़क मार्ग द्वारा शिवपुरी के लिए प्रस्थान करेंगे। यहां उनके द्वारा हतोड़ में प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना कार्यक्रम में सहभागिता की जाएगी। यह कार्यक्रम पूर्वान्ह 11 बजे होगा। यहां से रवाना होकर केन्द्रीय मंत्री सिंधिया निवोड़ा पहुंचेंगे। दोपहर 1:30 बजे कोलारस व 5:15 बजे बमोरी में आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता करेंगे। शाम 5:30 बजे केन्द्रीय मंत्री सिंधिया परांठ व 5:50 बजे बमोर तथा रात्रि को 8 बजे रतनपुरा में आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता करेंगे। 8:45 बजे श्रीमंत सिंधिया गुना के लिए रवाना हो जायेंगे। रात्रि विश्राम उनके द्वारा अशोकनगर में किया जाएगा। 08 अक्टूबर को केन्द्रीय मंत्री सिंधिया प्रातः 9:30 बजे से 10:30 बजे तक जनसंपर्क कार्यालय में रहेंगे। पूर्वान्ह 11:15 बजे पिपरई व 12 बजे मुंगावली, 2:45 बजे ईसागढ़ व शाम को 5 बजे अशोकनगर में आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता करेंगे। शाम को 7:30 बजे केन्द्रीय मंत्री सिंधिया गुना पहुंचेंगे, जहाँ उनके द्वारा रात्रि विश्राम किया जाएगा। 09 अक्टूबर को प्रातः 9:30 से 10 बजे तक जनसंपर्क ऑफिस में रहेंगे। प्रातः 10:15 से 10:45 बजे तक अस्पताल की आधारशिला रखेंगे। दोपहर 2:15 बजे माधव चौक शिवपुरी पहुंचेंगे। अपरान्ह 3:45 बजे नक्षत्र गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता करेंगे। शाम को 6:45 बजे ग्वालियर लौट आयेंगे।

नवरात्रि राक्षस महिषासुर पर देवी माँ दुर्गा की विजय का प्रतीक है: स्वामी अवधेशानंद जी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

हरिद्वार। श्रीमत् परमहंस, परिव्राजकाचार्य, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, जूनापीठाधीश्वर, आचार्य महामण्डलेश्वर, अनंत श्री विभूषित स्वामी अवधेशानंद गिरिजी महाराज ने कहा कि - शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर सभी देशवासियों को शुभकामनाएँ देते हुए अपने बधाई सन्देश में कहा - शारदीय नवरात्र का महत्व आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यन्त सराहनीय है। नवरात्र का समय देवी भगवती की उपासना के माध्यम से आत्मिक शक्ति, मानसिक शान्ति और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने का एक अनूठा अवसर होता है। इस कालखण्ड में आहार-विहार का संयम और साधना, व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने और आंतरिक शक्तियों को जाग्रत करने का कार्य करता है। देवी दुर्गा, जो इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति की प्रतीक हैं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आधारभूत और क्रियात्मक शक्ति के रूप में आराधित होती हैं। माँ ललिता त्रिपुरसुन्दरी की उपासना से भक्तों को आत्मिक बल, जीवन में संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। नवरात्र के नौ दिनों में किया गया तप और साधना व्यक्ति को सभी प्रकार की नकारात्मक शक्तियों से मुक्त कर कल्याणकारी जीवन की ओर प्रेरित करता है। यह कालखण्ड निस्संदेह आत्मिक उत्थान और व्यक्तिगत विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है ..! मानव मन में अंतर्निहित दुष्प्रवृत्तियों का निर्मूलन माँ पराम्बा की कृपा अर्थात् निर्मल मति और आत्म-शक्ति के जागरण से सम्भव है। अंतःकरण की पूर्ण सुचिता के उपरान्त प्रस्फुटित 'शुभता और दिव्यता' ही शक्ति आराधना की फलश्रुति है। इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति के रूप में जो सचराचर जगत में विद्यमान हैं, उन माँ पराम्बा के आराधना का पवित्र पर्व शारदीय नवरात्रि आप सभी के लिए मंगलमय हो। सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति का मूल कारण शक्ति ही है जिसे ब्रह्मा, विष्णु व शिव तीनों ने

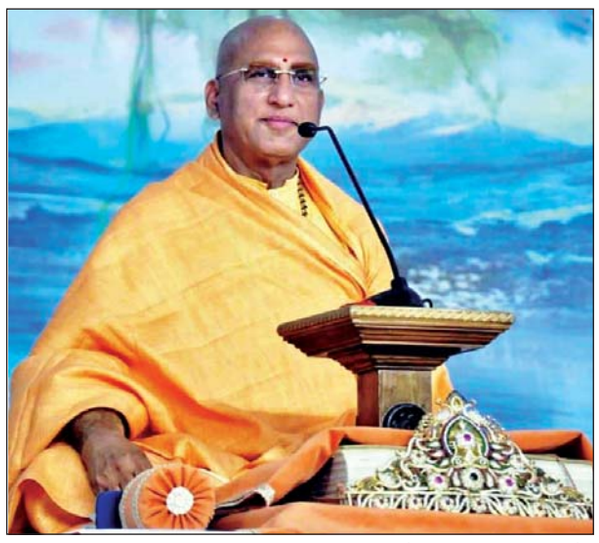

मिलकर माँ नवदुर्गा के रूप में सृजित किया, इसलिए माँ दुर्गा में ब्रह्मा, विष्णु व शिव तीनों की शक्तियाँ समाई हुई हैं। जगत की उत्पत्ति, पालन एवं लय तीनों व्यवस्थाएँ जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वही हैं - पराम्बा माँ भगवती आदिशक्ति। शारदीय नवरात्रि का महात्म्य सर्वोपरि इसलिये है कि इसी कालखण्ड में देवताओं ने दैत्यों से परास्त होकर आद्या शक्ति की प्रार्थना की थी और उनकी पुकार सुनकर देवी माँ का आविर्भाव हुआ। उनके प्राकट्य से दैत्यों के सँहार करने पर देवी माँ की स्तुति देवताओं ने की थी। नवरात्रि राक्षस महिषासुर पर देवी माँ दुर्गा की विजय का प्रतीक है, जो नकारात्मकता के विनाश और जीवन में सकारात्मकता के पुनरुद्धार का प्रतीक है।

स्वामी श्री अवधेशानंद जी ने कहा कि - देवी माँ दुर्गा का हर रूप एक अद्वितीय गुण या शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, शैलपुत्री शक्ति और स्थिरता का प्रतिनिधित्व करती हैं, ब्रह्मचारिणी तपस्या का प्रतीक हैं, और सिद्धिदात्री परम तृप्ति और ज्ञान प्रदान करती हैं। आदि शक्ति या आदि परा शक्ति या महादेवी माँ दुर्गा को सनातन, निराकार, परब्रह्म, जो कि ब्रह्माण्ड से भी परे एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में माना जाता है। शाक्त सम्प्रदाय के अनुसार यह शक्ति मूल रूप में निर्गुण है, परन्तु निराकार परमेश्वर जो न स्त्री है न पुरुष, को जब सृष्टि की रचना करनी होती है तो वे आदि पराशक्ति के रूप में उस इच्छा रूप में ब्रह्माण्ड की रचना, जनन रूप में संसार का पालन और क्रिया रूप में वह पूरे ब्रह्माण्ड को गति तथा बल प्रदान करते है। नवरात्रि माँ के अलग-अलग रूप के अविलोकन करने का दिव्य पर्व है। माना जाता है कि नवरात्र में किए गए प्रयास, शुभ-संकल्प बल के सहारे देवी दुर्गा की कृपा से सफल होते हैं। काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदि जितने भी राक्षसी प्रवृति हैं, उसका हनन करके विजय का उत्सव मनाते हैं। हर एक व्यक्ति जीवनभर या पूरे वर्षभर में जो भी कार्य करते-करते थक जाते हैं तो इससे मुक्त होने के लिए इन नौ दिनों में शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि और बुद्धि में शुद्धि आ जाए, सत्व शुद्धि हो जाए; इस तरह के शुद्धिकरण करने का, पवित्र होने का त्योहार है ङ्क यह नवरात्रि। नवरात्रि उत्सव बुराइयों से दूर रहने का प्रतीक है। यह लोगों को जीवन में उचित एवं पवित्र कार्य करने और सदाचार अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इस पर्व पर सकारात्मक दिशा में कार्य करने पर मन्थन करना चाहिए, ताकि समाज में सद्भाव के वातावरण का निर्माण हो सके। नवरात्रि काल आहार की शुद्धि के साथ मंत्र की उपासना का काल है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तरंगों से भरा हुआ है। मंत्र के माध्यम से उन तरंगों को जो शक्ति और सामर्थ के रूप में बिखरी हुई है, उन्हें आकर्षित किया जा सकता है। इस काल की तरंगें बहुत सामर्थवान है। उनके साथ एकीकृत होकर हम अप्रत्याशित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। अतः मन्त्र वातावरण से सकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित कर आपके पास लाते हैं और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करते हैं। स्वामी जी ने कहा कि देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना का यह पर्व हमें मातृशक्ति की उपासना तथा सम्मान की प्रेरणा देता है। समाज में नारी के महत्व को प्रदर्शित करने वाला यह पर्व हमारी संस्कृति एवं परम्परा का प्रतीक है। माँ ही आद्यशक्ति है, सर्वगुणों का आधार, राम-कृष्ण, गौतम, कणाद आदि ऋषि-मुनियों, वीर-वीरांगनाओं की जननी हैं। नारी इस सृष्टि और प्रकृति की 'जननी' है। नारी के बिना तो सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जीवन के सकल भ्रम, भय, अज्ञान और अल्पता का भंजन एवं अंतःकरण के चिर-स्थायी समाधान करने में समर्थ हैं - विश्वजननी कल्याणी ललिताराजराजेश्वरी पराशक्ति श्री माँ दुर्गा जी की उपासना का ये दिव्य पर्व शारदीय नवरात्र।

अपना सपना-हरा-भरा सतना अभियान में पितृ मोक्ष अमावस्या पर पौधा रोपण संस्कार देता है: डॉ. राकेश मिश्र

- डॉ. राकेश मिश्र जी के द्वारा ग्रीन एंबुलेंस का संचालन अद्वितीय कार्यः डॉ. मानिकचंद गुप्ता

- ट्रीगार्ड पर हमारे पूर्वजों का नाम लिखा होने से हमारा भावनात्मक लगाव हो जाता हैः डॉ. गुप्ता

- स्वच्छता परमो धर्मः भाव से सांई मंदिर परिसर में हुआ सेवा कार्यः मनीषा सिंह

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

सतना। डॉ. राकेश मिश्र अध्यक्ष पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास द्वारा नगर को प्रदूषण मुक्त करने के उद्देश्य से पर्यावरण को संरक्षण करने के लिए चलाए जा रहे अभियान 'अपना सपना हरा भरा सतना' अभियान के अंतर्गत नगर के प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ. मानिकचंद गुप्ता जी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में वृक्षारोपण का संकल्प लिया था। नवरंग पार्क, बिरला रोड में स्व. बलराम गुप्ता जी शहडोल, स्व. दयानिधान गुप्ता जी शहडोल, स्व. हीरा चंद्र गुप्ता शहडोल की पुण्य स्मृति में डॉ. मानिकचंद गुप्ता ने पीपल, बरगद नीम का पौधा रोपण किया। सरंव पितृमोक्ष अमावस्या के पुण्य अवसर पर यह पेड़ लगाकर डॉ. गुप्ता के परिवारजनों ने और सब लोगों को पेड़ लगाने की अपील की।जन जागरूकता के माध्यम से नागरिकों से अनुरोध करते हुए कहा कि नगर को प्रदूषण मुक्त करने के उद्देश्य से डॉ.राकेश मिश्र के द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है। आप भी अपने पूर्वजों की पुण्य स्मृति में पौधारोपण करने का संकल्प लें। सबसे अच्छा है कि लगाये गये पेड़ों के ट्रीगार्ड पर हमारे पूर्वजों का नाम लिखा होता है, जिससे हमारा भावनात्मक लगाव हो जाता है। हम स्वयं पेड़ों की देखरेख करने लगते हैं। डॉ. राकेश मिश्र का यह आइडिया लाजवाब है।आपके द्वारा लिए गए संकल्प को पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास द्वारा पूरा किया जाएगा। डॉ. मानिकचंद गुप्ता के परिवारजन इस अवसर पर बोले कि पूर्व में हमारे निवास के सामने जो पौधारोपण हुआ था, आज वे सभी पौधे विशाल वृक्ष का रूप ले रहे हैं। सभी वृक्ष लहलहा रहे हैं, उन्हें देखकर हमें आनंद की अनुभूतियों होती है। जीवन जीने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है। इसलिए हम सभी नागरिकों का परम कर्तव्य है की पौधारोपण कार्य में सेवा न्यास का सहयोग प्रदान करें।

स्वच्छता परमो धर्मः भाव से सांई मंदिर परिसर में हुआ सेवा कार्यः मनीषा सिंह

स्वच्छता परमो धर्मः के भाव से महात्मा गांधी की जन्म जयंती पर पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास के सभी भाई बहनों ने सॉई मंदिर धवारी में पूरे मंदिर की सफ़ाई की और उसे पूरा पानी से धोकर पूजा की। लोगों को जनजागरूकता की शपथ दिलायी कि इस कार्य को निजी जीवन में उतारना है।आज सीलम सैनी, रश्मि सैनी, प्रिया त्रिपाठी, मनीषा सिंह, राजेश त्रिपाठी, नितिन मिश्रा, विजय सिंह पटेल सहित अनेक गणमान्य लोगों ने सेवा न्यास के साथ हाथ बँटाया। मनीषा सिंह ने कहा कि स्वच्छता का संदेश एक दिन के लिए नहीं है, बल्कि हम हमेशा प्लास्टिक मुक्त, पॉलीथिन मुक्त सतना को देखना चाहते हैं। इसलिए सभी नागरिकों से अनुरोध है कि वे अपने साथ बाज़ार में सेवा न्यास द्वारा उपलब्ध कराए गए कपड़े के थैले लेकर अवश्य जायें और कम से कम प्लास्टिक का उपयोग करें।

इनकी रही उपस्थिति

पौधारोपण में प्रमुख रूप से श्रीमती मनीषा सिंह, राजेश त्रिपाठी नीलू, अनिल द्विवेदी, प्रभा पांडे, आदर्श त्रिपाठी, राकेश सिंह, नितिन मिश्रा, अतुल सिंह, विनय सिंह उपस्थित रहे।

संभागायुक्त श्री गुप्ता और आईजी श्री सिंह ने टेकरी का निरीक्षण कर माताजी की पूजा अर्चना की

- श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रण में रखने के लिए चलायमान तरीके से दर्शन करायें: संभागायुक्त गुप्ता

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। संभागायुक्त उज्जैन संजय गुप्ता और आईजी संतोष कुमार सिंह ने गुरुवार को माताजी की टेकरी पर माँ तुलजा भवानी एवं माँ चामुंडा के दर्शन कर पूजा अर्चना की और टेकरी पर की गई व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान कलेक्टर ऋषव गुप्ता, पुलिस अधीक्षक संपत उपाध्याय, अपर कलेक्टर प्रवीण फुलपगारे, एएसपी जयवीर सिंह भदौरिया, एसडीएम बिहारी सिंह सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त श्री गुप्ता और आईजी श्री सिंह अधिकारियों को निर्देश दिये कि नवरात्रि पर्व के दौरान माताजी की टेकरी पर श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। संभागायुक्त श्री गुप्ता और आईजी श्री सिंह ने पार्किंग, श्रद्धालुओं की भीड़ ज्यादा होने पर प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को माताजी के दर्शन सुगमता से हो इस बात का ध्यान रखा जाएं। श्रद्धालुओं की भीड़ एक साथ न हो इसके लिए श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रण में रखने के लिए चलायमान तरीके से दर्शन कराये। दर्शनार्थियों को एक जगह ज्यादा देर खड़े न रहने दें।

लॉयंस क्लब इंटरनेशनल ने दिव्यांग सहायता शिविर में किया सेवा कार्य

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। लॉयंस क्लब इंटरनेशनल के दूसरे दिन दिव्यांग सहायता शिविर लॉयंस सेवा सप्ताह उत्साह के चेयरमैन लायन सुनील शर्मा की उपस्थिति में सभी क्लब द्वारा लगाया गया, जिसमें सर्वप्रथम लॉयंस श्रील द्वारा सेवा भारती दिव्यांग केंद्र पर 35 दिव्यांग बच्चों को कंबल और राशन का सामान आदि प्रदान किये। इसी प्रकार लॉयंस क्लब आस्था द्वारा रोशनी रामकृष्ण आश्रम में बच्चों को शिक्षा सामग्री, टॉयज, खाने का सामान आदि दिया गया। इसी तारतम्य में लॉयंस क्लब ओजस ने मर्सी होम सिटी सेंटर में फूड सर्व करने वाली गाड़ी प्रदान की। इसी प्रकार लॉयंस क्लब प्रेरणा ने भी सेवा भारती दिव्यांग केंद्र में 35 बच्चों को लोअर -टीशर्ट दिये गये एवं स्वलपाहार करवाया गया, साथ ही लॉयंस क्लब सेन्ट्रल द्वारा दिव्यांग स्कूल मोतीमहल में उनके हॉस्टल के लिए फाइबर सीमेंट बोर्ड जिसका उपयोग पार्टीशन रहित क्लासरूम बनाने के लिए किया जायेगा उस हेतु सहायता राशि प्रदान की गई एवं लॉयंस क्लब आरिश द्वारा दिव्य ज्योति संस्थान में खाने का सामान वितरित किया गया। इस अवसर पर उप प्रांतपाल प्रथम सुधीर बाजपेई, पूर्व प्रांतपाल लॉयन नितीन मांगलिक, सलाहकार डॉ. संदीपा मल्होत्रा, पूर्व आरसी जुबेर रहमान, सेवा सप्ताह सचिव राज शिवहरे, पीआरओ ज्योति अग्रवाल आदि उपस्थित रहे।

श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा ने प्रकाश एवं प्रदीप को सौंपी नई जिम्मेदारी

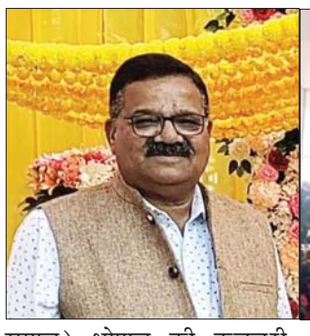

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। श्री सहस्त्रबाहु कलचूरि महासभा कलार समाज ने अपने कार्यकारणी में परिवर्तन कर कुछ पदाधिकारी को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसमें प्रकाश राय को श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार समाज) भोपाल की राष्ट्रीय प्रबंधकारिणी के राष्ट्रीय संयुक्त महासचिव एवं भवन प्रभारी के पद पर मनोनीत किया गया है। और प्रदीप राय को श्री सहस्त्रबाहु कलचुरि महासभा (कलार समाज) भोपाल की कलचुरी भवन संपत्ति प्रबंधन प्रकोष्ठ के अध्यक्ष एवं प्रदेश उप सचिव के पद पर मनोनीत किया गया है। यह नियुक्ति महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष विंग कमांडर विनोद राय ने दोनों पदाधिकारी को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस अवसर पर महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. एल.एन. मालविया प्रदेश अध्यक्ष एचपी शिवहरे, अशोक शिवहरे, रामकृष्ण चौकसे, विष्णु जायसवाल सहित अनेक कलचुरि महासभा के सदस्य उपस्थित रहे। उक्त जानकारी सुधाकर राऊत कलार समाज भोपाल ने दी।

कलश स्थापना के साथ शारदीय नवरात्रि महोत्सव प्रारंभ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। नगर में शुभ मुहूर्त के साथ शारदीय नवरात्रि का श्रीगणेश किया गया। नगर में दर्जन भर से अधिक स्थानों पर मातारानी के दरबार भी लगाए गए हैं। 03 अक्टूबर को नवरात्र महोत्सव का प्रारंभ शुभ मुहूर्त में विद्वान पंडितो द्वारा विधि विधान के साथ कराया गया। नगर के कोली पाड़ा में भक्तों द्वारा लगाई गई काली माता की मूर्ति सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। इसी प्रकार एसएएफ मैदान, मई वाले, कुएं के पास, गाड़ी स्कूल के पास, डाकखाना रोड पर, पुराना जौरा में, अस्पताल रोड पर, पचबीघा रोड, एमएस रोड, पंचमुखी हनुमान जी के सामने, सिंगला पाड़ा, संजय नगर सहित अन्य स्थानों पर भी मातारानी के दरबार आकर्षक ढंग से सजाए गए हैं। जगत जननी के सभी दरबारों में अभिजीत मुहूर्त में घट स्थापना की गई। विधि विधान के साथ मातारानी की स्थापना करने के बाद शाम को मातारानी के दरबार में दर्शनार्थ भक्तों की भीड़ देखी गई। ज्योतिषाचार्य अरविंद अग्रवाल का कहना है कि साल में आने वाली चार नवरात्रियों में से इस नवरात्रि पर्व को सबसे खास एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। इस साल नवरात्रि पर्व पर कई ऐसे दुर्लभ सहयोग भी बन रहे हैं, जो काफी शुभ हैं। इस बार मातारानी पालकी में सवार होकर आई हैं, जो सभी तरह से शुभ है। नवरात्रि महोत्सव 03 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक होगा।

कलश यात्रा के साथ श्रीमद् देवी भागवत कथा प्रारंभ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। नगर में श्रीमद् देवी भागवत कथा का श्री गणेश कलश यात्रा के साथ प्रारंभ हुआ। 03 अक्टूबर को मिश्रा वाटिका में श्रीमद् देवी भागवत कथा का शुभारंभ कथा व्यास आचार्य पंडित श्रीराम अवतार शर्मा बरोही भिंड के सानिध्य में किया गया। इससे पूर्व कथा स्थल मिश्र वाटिका से कलश यात्रा प्रारंभ हुई, जो नया बाजार, चंद्रशेखर आजाद रोड, ऑफीसर कॉलोनी, हनुमान चौराहा, सदर बाजार, 5 बीघा, एमएस रोड होती हुई जगह-जगह कलश यात्रा का स्वागत भी किया गया। श्रीमद् देवी भागवत कथा का आयोजन टीकाराम, मुन्नालाल, दिनेश कुमार, विनोद कुमार दुबे, मंजीतपुरा जौरा द्वारा कराया जा रहा है। कथा के पहले दिन कथा व्यास पं. रामअवतार शास्त्री ने अपने मुखारविंद से कहा कि माँ दुर्गा को सर्वप्रथम शैलपुत्री के रूप में पूजा गया है। हिमालय के यहां पुत्री के रूप में जन्म लेने के कारण उनका नामकरण शैलपुत्री हुआ। इनका वाहन भी वृषभ है।

देवी माँ ने दाएं हाथ में त्रिशूल धारण कर रखा है दुष्टों का नाश करती है। भक्तों का कल्याण भी मातारानी करती हैं। बाएं हाथ में कमल लिए मातारानी जगत जननी हैं। इन्हीं शैलपुत्री को प्रथम देवी दुर्गा माना गया है। यह श्रीमद् यहां श्रीमद् देवी भागवत कथा 11 अक्टूबर तक चलेगी। प्रसादी भंडारा 12 अक्टूबर को होगा। कथा का समय प्रतिदिन मिश्र वाटिका में दोपहर 12:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक रखा गया है।

दुनियादारी की होड़ में अब दया भी बिकाऊ

- अतुल मलिकराम
(लेखक और राजनीतिक रणनीतिकार)

दो मासूम.. एक की उम्र लगभग 5 या 6 वर्ष.. और एक की मुश्किल से 1 वर्ष.. शरीर पर आधे-अधूरे कपड़े.. चेहरे पर बेबसी.. आँसूओं से लबालब भीगी हुईं आँखें.. एक नहीं, दोनों की.. कौड़ियों के दाम बिकता बचपन.. अपनी उम्र से लगभग 50 वर्ष अधिक जी लेने वाला वह 5 वर्षीय बच्चा अपनी छोटी बहन को यूँ गले लगाए हुए था, मानो उसके सारे दुःख आज से उस भाई के और वो सारी खुशियाँ, जो असल में उसके हिस्से में थीं ही नहीं, जिस भी मोल में मिले, वह ले आएगा और वह सारी की सारी उसकी बहन की.. भूख की असहनीय पीड़ा.. तड़प रोटी की..

यह एक पेंटिंग थीं, जो मैंने अपने शहर के जाने-माने म्यूज़ियम में लगी देखी। पेंटिंग चीख-चीख कर इसकी 'हकीकत वाली कहानी' बयाँ कर रही थी। दरअसल, यह पेंटिंग असल जिंदगी में कहीं किसी सड़क किनारे बेबस मासूमों को देखकर बनाई हुई लग रही थी।

पेंटिंग को देखकर मेरे मन में यही प्रश्न उठा कि भूख से रोते-बिलखते उन नन्हें मासूम बच्चों का हकीकत में आखिर कौन पेट भरने गया होगा? गया भी होगा या नहीं? जो भी उस समय उनके आस-पास से गुजरा होगा, उनके मन में इन मासूमों को देखकर दया आई भी होगा या नहीं? वह पेंटिंग और उसमें गिरते आँसूओं को देखकर तो दया का दूर-दूर तक कोई नामों-निशान नहीं दिख रहा था.. मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ.. दया थी.. बेशक बहुत दया थी, लेकिन हकीकत का नहीं पता, पेंटिंग को देखकर म्यूज़ियम में उपस्थित लोगों के मन में जो दया थी, उसे शब्दों में बयाँ कर पाना मेरे लिए लगभग नामुमकिन ही है। इतनी दया कि गरीबी और लाचारी की पीड़ा सेहती वह पेंटिंग, चंद मिनटों में हजारों के दाम में बिक गई। म्यूज़ियम में प्रदर्शनी जो लगी थी।

एक से बढ़कर एक पेंटिंग.. कहीं प्रकृति की असीम सुंदरता को कैनवास पर उकेरती पेंटिंग, तो किसी पेंटिंग को देखकर लग रहा था, मानों ईश्वर धरती पर ही उतर आए हों। बात मैं इक्का-दुक्का पेंटिंग्स की ही बता रहा हूँ, लेकिन उस म्यूज़ियम में ऐसी सैकड़ों पेंटिंग्स थीं, जो कलाकारों की बेशकीमती कला का बखान कर रही थीं। वापस आ जाता हूँ उन मासूमों पर.. सच कहूँ, तो उस पेंटिंग में इस्तेमाल की गई सामग्री, यानि कलर्स, कैनवास आदि और उसमें लगी मेहनत को आँकने के बाद उसकी कीमत 500 रुपए से अधिक न थी.. मैं उसकी कीमत तय करने वाला वास्तव में कोई नहीं, लेकिन फिर एक सामान्य देखने वाले के तौर पर कहूँगा कि उसकी कीमत हजार रुपए की तो न थी, फिर भी हजारों के दाम लगे उसके, बोली के बीच जो जा बैठी थी। कारण सिर्फ और सिर्फ दया..

ऐसे फोटोज़ इंटरनेट और सोशल मीडिया पर भरपल्ले मिल जाएँगे, जिन पर लोग कमैंट्स के माध्यम से दया के आँसू गिराते दिख जाएँगे.. एक सवाल पूछना चाहता हूँ.. क्या दया भी अब ऑनलाइन हो गई है?? वास्तविक जीवन से इसका कोई लेना-देना नहीं?

लाल रंग को टार्गेट करने पर हमें अपने आस-पास के वातावरण में कोई और रंग नहीं दिखता, दिखती हैं, तो सिर्फ लाल रंग की वस्तुएँ..

बात सिर्फ एक पेंटिंग की नहीं है। हम अपने जीवन में बहुत सारी चीजों पर पैसा खर्च करते हैं, जो शायद हमारे लिए बहुत जरूरी भी नहीं होतीं। लेकिन, यदि हम अपने खर्चे का एक छोटा-सा हिस्सा भी जरूरतमंदों की मदद में लगाएँ न, तो हम बहुत सारे लोगों और जीवों की जिंदगी में बदलाव ला सकते हैं। महज़ एक रोटी की आस में भूख से तड़पते आपको ऐसे कई लोग मिल जाएँगे, जिन्हें इस बात से असल जीवन में हमारा ध्यान अपने और अपने लोगों से हटकर मोहल्लों-नुक्कड़ों पर या आस-पास बैठे लोगों पर जाए न, तो सच मानों, ये चंद रंगीन पेंटिंग्स के पीछे छिपे उन लोगों के असल जिंदगियों के बेरंग भी हमें दिख जाएँगे। बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह बिल्कुल भी फर्क नहीं पड़ता कि उन्हें रोटी ताजी मिले या गर्मागर्म, सुखी हुई और बासी रोटी भी उन्हें कोई दे जाए न, तो उनके लिए उस एक रोटी की कीमत पेट भरने के लिए ईश्वर के आशीर्वाद से कम नहीं और वहीं उसे रोटी देने वाला वह इंसान ईश्वर से कम नहीं..

कभी-कभी तो यह लगता है कि दुनियादारी की होड़ में अब दया भी बिकाऊ हो चली है। यह वहाँ नहीं, दिखती जहाँ वास्तव में इसकी जरुरत है, यह इच्छा के अनुरूप बाहर आती है। इंसानियत का मोल तो मर चुका है, लेकिन बस यही कहूँगा कि दया के मोल को कौड़ियों के दाम न बिकने दें.. दया वहाँ दिखाएँ, जहाँ वास्तव में इसकी जरुरत है, वहाँ नहीं, जहाँ इसके मोल से कोई मेल नहीं.. जरा सोचिए, यदि उस पेंटिंग पर हजारों रुपए खर्च करने के बजाए उन पैसों का इस्तेमाल किसी गरीब का पेट भरने के लिए किया जाता, तो इतने रुपयों से आप कितने जरूरतमंद लोगों का पेट भर चुके होते.. यकीन मानिए, वह पेंटिंग वाला देता या न देता, यह उसके अपने विचार हैं, लेकिन वो गरीब लोग और नन्हें मासूम आपको दिल से दुआएँ जरूर देते। संभालकर रखने वाला बेशकीमती उपहार हैं दुआएँ, जो कभी खाली नहीं जातीं.. और उस समय काम आती हैं, जब आपको इनकी सबसे अधिक जरुरत होती है.. एक हाथ दे, और एक हाथ ले.. बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह भूखे को आपने उस समय भोजन कराया, जब उसे इसकी सबसे अधिक जरुरत थी.. यदि हम सब मिलकर थोड़ी-थोड़ी भी मदद इन जरूरतमंदों की करें, तो हम इस दुनिया को रहने का सबसे बेहतर स्थान बना सकते हैं।

खादी महोत्सव 2024 का भव्य आगाज महोत्सव का उद्देश्य बेरोजगारी दूर करना: डॉ रन सिंह

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। महात्मा गांधी सेवा आश्रमके मुरैना, ग्वालियर, जौरा तथा श्योपुर के केंद्रों में खादी महोत्सव 2024 का भव्य आगाज हुआ। इस महोत्सव का उद्देश्य खादी वस्त्रों के महत्व को बढ़ावा देना और बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना है।

महोत्सव की शुरुआत

महोत्सव की शुरुआत महात्मा गांधी सेवा आश्रम के विभिन्न केंद्रों में हुई, जहां उपस्थित लोगों को खादी वस्त्रों को अपनाने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर संस्था के सचिव रन सिंह परमार ने खादी वस्त्रों के महत्व पर प्रकाश डाला और बेरोजगारी की मुक्ति के लिए खादी वस्त्रों को अपनाने का आव्हान किया।

खादी वस्त्रों का महत्व

रन सिंह परमार ने अपने संबोधन में कहा कि खादी वस्त्र न केवल भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक हैं, बल्कि यह आत्मनिर्भरता और स्वदेशी आंदोलन का भी प्रतीक है। उन्होंने बताया कि खादी वस्त्रों के उत्पादन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या का समाधान हो सकता है।.

महोत्सव के मुख्य आकर्षण

1. प्रदर्शनीः महोत्सव में खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें विभिन्न प्रकार के खादी वस्त्र और उनके निर्माण की प्रक्रिया को दर्शाया गया।

2. कार्यशालाएं खादी वस्त्रों के निर्माण और उनके उपयोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

3. सांस्कृतिक कार्यक्रमः महोत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं।

जिंदगी...

ऐ जिंदगी,हमको भी बता दे,
ये क्या तेरा खेल है?
विस्तार से समझा दे।
या तो रुला दे,
या तो हँसा दे।
एक बार तो हमें भी
जिन्दगी से मिला दे।
खत्म कर दे मायूसी की इस इमारत को,
हमें भी खुशियों के महल में पनाह दे।
मिटा दे इन अश्रुओं की धारा को,
हमें भी तो हँसी की फुहार में रमा दे।
हम भी हो जायेंगे कृतज्ञ तेरे,
बस हमें भी छोटी- छोटी ख्वाहिशों का तोहफा दिला दे।
ऐ जिंदगी इक बार तो हमें भी,
जिंदगी से मिला दे।

स्वरचित- रचना शर्मा

धूमधाम से मनी महाराजा अग्रसेन जयंती

- सुबह प्रभात फेरी और शाम को निकला चल समारोह

ग्वालियर। महाराजा अग्रसेन जयंती गुरुवार को शहर में कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर धूमधाम से मनाई गई। सुबह प्रभात फेरी और शाम को महाराजा अग्रसेन के छायाचित्र की शोभा यात्रा निकाली गई। स्थान स्थान पर अग्रबंधुओं ने अग्रसेनजी की पूजा अर्चना कर स्वागत किया।

अग्रवाल नवयुवक संघ लश्कर के तत्वावधान में सुबह आठ बजे अग्रसेन पार्क दौलतगंज से प्रभात फेरी निकाली गई, जो महाराज बाड़ा, सराफा बाजार डीडवाना ओली, पाटनकर बाजार होते हुए दौलतगंज पहुंची। वहीं करोलीवालान पंचायत मंदिर मदनमोहन नया बाजार की प्रभात फेरी नया बाजार से दाल बाजार ,घोड़ा चौक, पुराना हाईकोर्ट, लोहिया बाजार होते हुए वापस नया बाजार पहुंगी। इस अवसर पर जिला न्यायाधीश पीसी गुप्ता ने आरती कर यात्रा को हरी झंडी दिखाई। पंचायत के महासचिव सुनील अग्रवाल, ओमप्रकाश अग्रवाल लल्ला, अशोक गोयल की अगुवाई में स्वागत

संजय अग्रवाल, अरविंद दूदावत, मोहन लाल अग्रवाल आदि अग्रसेन महाराज और केसरिया ध्वज के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। प्रभात फेरी में महाराजा अग्रसेन के छायाचित्र के साथ बैंड भी था। प्रभात फेरी का अग्रसेन भवन दाल बाजार में श्रीअग्रवाल महासभा के अध्यक्ष किया गया।

महिलाओं ने किया डांडिया

वहीं अग्रवाल नवयुवक संघ लश्कर द्वारा सायं पांच बजे अग्रसेन उद्यान दौलतगंज से महाआरती के पश्चात शोभायात्रा निकाली। शोभा यात्रा में महालक्ष्मी और अग्रसेन जी के रथ के अलावा बैंड और ढोल धुनें बिखेरते रहे। यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं पीताम्बर वस्त्र पहनकर गरबा डांडिया कर रही थीं। इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष सुनील गर्ग बबलू, अजय गोयल, मनोज सरावगी, पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल, अशोक गोयल, विजय गोयल, विजय गर्ग, हरीबाबू गोयल, ओमप्रकाश अग्रवाल, नरेंद्र सिंहल,राधा किशन खेतान, संजय सिंहल, संदीप सांघी,पवन गर्ग,संजीव अग्रवाल कुक्कू, सुनील अग्रवाल, स्वतंत्र गोयल, मनोज गोयल, संजीव सिंहल, दीप्ति सरावगी, सुनीता गोयल, ललिता बंसल आदि मौजूद रहे। वहीं उपनगर में ग्वालियर में अग्रवाल नवयुवक संघ ग्वालियर द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई। ज्योति अग्रवाल के अनुसार प्रभात फेरी घासमंडी से शुरू होकर किला गेट, हजीरा, रामटापुरा होते हुए अग्रसेन भवन हलवाट खाना पर समाप्त हुई।

सगाई टूटने पर पूर्व मंगेतर के भाइयों ने मारी गोली

ग्वालियर। सगाई तोड़े जाने के बाद जब युवक के परिजनों ने दिया सामान वापस मांगा तो युवती के भाई रिश्तेदार के साथ युवक के घर पहुंचे और फायरिंग कर दी। घटना जनकगंज थाना क्षेत्र स्थित श्रीराम कॉलोनी में गुरुवार की तड़के करीब पौने तीन बजे की है। गोली मारने के बाद हमलावर भाग निकले। घटना के शिकार पीडित ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को उपचार के लिए भर्ती कराकर आरोपियों के खिलाफमामला दर्ज कर लिया है।

जनकगंज थाना क्षेत्र के अयोध्या कॉलोनी निवासी 22 वर्षीय आदेश परिहार पुत्र रमेश परिहार प्राइवेट जॉब करता है। बीती रात वह अपने घर पर अकेला था, तभी उसके घर पर तीन बदमाश सोनू परिहार, अशोक परिहार व उनके रिश्तेदार हरिओम परिहार ने उसके पेट में गोली मार दी। गोली मारने के बाद हमलावर भाग निकले। गोली लगने से घायल आदेश ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद घायल को उपचार के लिए भर्ती कराया। पुलिस ने जब घायल से पूछताछ की तो उसने बताया कि दो दिन पहले गांव में पटा होने के कारण पूरा परिवार गांव गया था, जबकि वह घर पर था। रात करीब पौने तीन बजे उसके पूर्व मंगेतर के भाई अशोक परिहार, सोनू परिहार व उनका रिश्तेदार हरिओम आए और तीनों ने कट्टे से तीन फायर किए, जिसमें एक गोली उसके पेट में लगी और दो गोली कमरे की दीवार में लगी। पुलिस को घायल ने बताया कि करीब आठ माह पूर्व उसकी सगाई बड़ेरा निवासी सविता परिहार से हुई थी और उनके बीच बातचीत होने लगी। इसी बीच एक रिश्तेदार के घर जाने पर आदेश ने उसे रोका था, क्योंकि उनके घर का माहौल खराब था। इससे युवती नाराज हो गई और अपने परिजनों से रोक-टोक करने की शिकायत की। इसके बाद बात बिगड़ती चली गई और इसके बाद युवती के परिजनों ने रिश्ता तोड़ दिया। रिश्ता तोड़े जाने के बाद युवक के परिजनों ने सगाई में दिए गए जेवर और नगदी की मांग की, जिस पर विवाद चल रहा था।

हादसे में घायल दूसरे दोस्त ने भी जेरे इलाज तोड़ा दम

- एक दोस्त की दो दिन पहले हुई थी मौत

ग्वालियर। कार की टक्कर से हादसे का शिकार हुए युवक के दूसरे साथी ने भी दो दिन जिंदगी और मौत से संघर्ष कर मौत को गले लगा लिया। पुलिस ने युवक की मौत के बाद उसका शव पीएम हाउस भेजकर मर्ग कायम कर लिया है। पुलिस ने आरोपी वाहन चालक की तलाश के लिए सीसीटीवी कैमरे खंगालने शुरू कर दिए है। जिससे उसकी तलाश की जा सकें।

मुरार के बारादरी निवासी अतुल रोतेले पुत्र हेमराज रोतेले छात्र है और बीती 28 सितम्बर की रात अपने दोस्त अभिषेक तोमर के साथ बाइक से बहोड़ापुर से कुंज विहार जा रहा था। अभी वह सुरज सुंदरम मैरिज गार्डन के पास पहुंचे थे तो एक तेज रफ्तार कार चालक ने लापरवाही से चलाते हुए उनकी बाइक को कट मार दिया। जिससे वह अनियंत्रित होकर सड़क पर गिरकर गंभीर घायल हो गए। हादसे का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को उपचार के लिए पहुंचाया। जहां पर घटना के कुछ ही घंटों बाद अभिषेक की मौत हो गई, वहीं अतुल की हालत गंभीर बनी हुई थी। दो दिन जिन्दगी और मौत के बीच संघर्ष के बाद अतुल ने भी दम तोड़ दिया। दोनों छात्रों की मौत के लिए जिम्मेदार कार की तलाश के लिए पुलिस अब इस इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाल रही है, जिससे हमलावर कार को पकड़ा जा सके। कुछ स्थानों पर धुंधले फोटो मिले है।

टक्कर से युवक की मौत

पुरानी छावनी थाना क्षेत्र के नायरा पेट्रोल पंप के पास डंपर की टक्कर से घायल युवक ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया है। युवक की मौत का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद अज्ञात वाहन चालक के खिलाफमामला दर्ज कर लिया है। पुलिस ने बताया कि बानमोर निवासी 30 वर्षीय शैलेन्द्र सिंह पुत्र गंगा सिंह दो दिन पहले बाइक से जा रहा था। अभी वह नायरा पेट्रोल पंप के पास पहुंचा ही था कि अज्ञात ट्रक चालक उसे टक्कर मार गया था। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद उपचार के लिए भर्ती कराया था। जहां पर उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस मर्ग कायम कर मामले की जांच कर रही है।

महाराजा अग्रसेन जयंती पर उपनगर में प्रभात फेरी निकली

ग्वालियर। उपनगर ग्वालियर में गुरूवार सुबह महाराजा श्री अग्रसेन जयंती महोत्सव प्रभात फेरी के साथ शुरू हो गया। अग्रवाल नवयुवक संघ के बैनर तले निकली इस प्रभात फेरी में अग्रवाल समाज और उनसे जुड़े लोग भारी संख्या में शामिल हुये। प्रभात फेरी ध्वजा पूजन के साथ प्रातः 6 बजे घासमंडी चौराहे से प्रारंभ होकर किलागेट, हजीरा, तानसेन नगर, रमटापुरा, लोहामंडी होकर अग्रसेन भवन हलवाट खाना पहुंची। जहां महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पूजा अर्चना की गई। इसके बाद प्रसाद वितरण किया गया। प्रभात फेरी में मुख्य रूप से अग्रवाल नवयुवक संघ के अध्यक्ष सुदामा अग्रवाल, उपाध्यक्ष शिवकुमार अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, कमलकिशोर बंसल, दिलीप मित्तल, अजय अग्रवाल, विष्णु गर्ग, महामंत्री दीपक अग्रवाल, सहमंत्री हर्ष जैन, प्रदीप मंगल, ध्रुव मित्तल, मुकेश अग्रवाल, शैलेन्द्र अग्रवाल, ऋषभ जैन, भंडारी पारस जैन, कोषाध्यक्ष चंद्रप्रकाश गोयल, सह भंडारी अंकुश अग्रवाल, विकास सिंघल, दिनेश अग्रवाल, सुरेन्द्र बंसल, मीडिया प्रमुख केदार जैन, नेमीचंद अग्रवाल, चंद्र अग्रवाल प्रेमी, अशोक जैन, रामरतन गर्ग, उमेशचंद्र गुप्ता, किशन कुमार अग्रवाल, महेश कुमार जैन व डा. रामबाबू गोयल आदि प्रमुख रूप से शामिल हुये।

प्रभारी मंत्री सिलावट ने भाजपा नेता व पूर्व सरपंच के पिता का हालचाल जाना

ग्वालियर। पूर्व सरपंच मालनपुर व भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा के पिताजी बीते दिनों से महलगांव स्थित सहारा हॉस्पिटल में भर्ती हैं। उनका हाल-चाल जानने व स्वास्थ्य की जानकारी लेने के लिए गुरुवार को जल संसाधन मंत्री व प्रभारी ग्वालियर तुलसी सिलावट पहुंचे। उन्होंने चर्चा कर उनका हेल्थ चेकअप तथा उनकी जानकारी प्राप्त की। यहां बता दें कि भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष व पूर्व सरपंच सुरेंद्र शर्मा के पिताजी रामस्वरूप पटेल जो की मालनपुर में सरपंच भी रहे हैं वह बीते 2 माह से अस्वस्थ हैं। इसलिए सहारा हॉस्पिटल में भर्ती रहकर स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। जैसे ही जानकारी ग्वालियर प्रभारी मंत्री श्री सिलावट को मिली तो उन्होंने गुरुवार को समय निकालकर उनका हाल-चाल जानने के लिए अस्पताल पहुंचे। इस अवसर पर उन्होंने उनके पुत्र व भाजपा नेता सुरेंद्र शर्मा से भी चर्चा की और भगवान से जल्द स्वस्थ होने की कामना की। इस दौरान भाजपा ग्रामीण जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा, वरिष्ठ नेता पुरुषोत्तम भार्गव, महामंत्री विनोद शर्मा, उपाध्यक्ष दीपक शर्मा, बृजेश शर्मा एवं डॉक्टर एएस भला आदि मौजूद रहे।

कई बीमारियों का कारण बन रहा मोटापा

सर्जरी से स्थाई समाधान, पूरी तरह स्वस्थ्य हो जाता है मरीज

ग्वालियर। मोटापे से कई बीमारियों बढ़ रही है, जिससे हर किसी को बहुत सारी परेशानी होती है। हालांकि दवायें लेने से वनज तो कम हो जाता है लेकिन यह स्थाई इलाज नहीं है। क्योंकि जब भी कोई व्यक्ति दवायें बंद कर देता है तो फिर वजन पुनः बढ़ने लगता है। यह बात मैक्स सुपर हास्पीटल पटपडगंज रोबोटिक सर्जरी विभाग के सीनियर कंसल्टेंट डा. धनंजय पाण्डे ने गुरूवार को पत्रकारों से चर्चा करते हुये कही।

डा. धनंजय पाण्डे ने बताया कि ग्वालियर में हर माह के पहले गुरूवार को ओपीडी सेवा शुरू की जायेगी। इसके चलते विशेष बैरिस्ट्रिक सर्जरी और रोबोटिक सर्जरी का यहां के मोटापा मरीजों को लाभ मिल सकेगा। डा. पाण्डे ने बताया कि ग्वालियर व अंचलवासियों को लम्बी दूरी तय नहीं करना पड़ेगा। अक्सर डायबिटीज उच्च रक्तचाप और ह्रदय रोग जैसी गंभीर बीमारियां मोटापे के कारण हो रही है। सर्जरी के बाद मरीज पूरी तरह स्वस्थ हो जाता है।

रेलयात्रियों की समस्याओं को लेकर भाकपा ने स्टेशन पर प्रदर्शन कर ज्ञापन दिया

ग्वालियर। केन्द्र सरकार द्वारा भारतीय रेलवे को जानबूझकर यात्रियों के लिए कष्टदायक बनाया जा रहा है, ताकि रेलों के निजीकरण की शुरुआत की जा सकें। हालत यह है कि एक तरफ बुलेट ट्रेन चलाने की बात की जा रही है लेकिन दूसरी तरफ हर दिन सैकड़ों ट्रेनें कैंसिल या डायवर्ट कर दी जाती हैं जिससे लोग परेशान होते रहते हैं।

भारतीय रेल पिछले सौ साल से देश के प्रत्येक आम आदमी की जीवन रेखा रही है और वर्तमान सरकार उसे आम आदमी की पहुंच से दूर करती जा रही है। रेल यात्रियों की तकलीफें को ध्यान में रखते हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने गुरूवार को राज्यव्यापी आंदोलन किया। इसी तारतम्य मे रेलवे स्टेशन पर पार्टी के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन कर केंद्रीय रेलमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन रेलवे मैनेजर को दिया। ज्ञापन मे मेहनतकश गरीब आम जनता को हो रही परेशानियों को दूर करने के लिए मांगों को शीघ्र पूरा करने की मांग की

गई। रेलवे स्टेशन पर पार्टी एवं आम जनता को कॉमरेड कौशल शर्मा एडवोकेट, कॉमरेड अशोक पाठक, कॉमरेड हरिशंकर माहौर, कॉमरेड शैलेश परमार ने संबोधित किया और चेतावनी दी कि शीघ्र ही जनता की समस्याओं का समाधान किया जाये अन्यथा पार्टी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर जनता को इकट्ठा कर बड़ा आंदोलन के लिए मजबूर होगी। प्रदर्शन में कॉमरेड कौशल शर्मा एडवोकेट, अशोक पाठक, हरिशंकर माहौर, शैलेश परमार, प्रकाश वर्मा, जालिम सिंह, रमेश सविता, अब्दुल शाहीद, कॉमरेड मयंक रावत, बिरखा राम, बारेलाल पाल, संतोष आर्या, राजाराम संखवार, बीडी धूपर, सौरभ श्रीवास्तव, इंजीनियर आरआर गुप्ता, वीरेंद्र सिंह जादौन, संदीप जाटव, श्रीमती अंजलि परमार, शीला चौहान, ज्ञान देवी वर्मा, श्रीमती प्रेमलता के अलावा बड़ी संख्या में महिला पुरुषों ने भाग लिया।

तीन दिन में डेंगू के 78 मरीज और मिल गए

ग्वालियर। सितंबर माह की तरह अक्टूबर माह में भी हर रोज दो दर्जन से अधिक डेंगू के मरीज सामने आ रहे हैं। केवल तीन दिन में ग्वालियर में 78 मरीज और मिल चुके हैं। जबकि अन्य शहरों के भी बड़ी संख्या में हैं।

जिला मलेरिया विभाग के अनुसार गुरुवार को 497 नमूनों की जांच हुई। जांच में कुल 53 मरीज पॉजिटिव मिले । जिसमें ग्वालियर जिले के 29 मरीज हैं ।सर्वाधिक पुरुष रहे हैं। उल्लेखनीय है कि बीते दिन बुधवार को 212 नमूनो की जांच हुई थी। जिसमें 34 मरीज पॉजिटिव मिले थे। ग्वालियर के 21 मरीज बताए गए। जबकि गुरुवार को ग्वालियर जिले के मिले 29 मरीज सहित इस साल 1 जनवरी से अब तक डेंगू के डंक से पीड़ित मरीजों की संख्या 851 से ऊपर हो गई है जो कि बीते साल से सर्वाधिक है। वहीं इस साल एक बच्चा व बुजुर्ग सहित कुल चार लोगों की मौत भी हो चुकी है।

कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए दुबे और इकबाल

ग्वालियर। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अशोक शर्मा के समक्ष कांग्रेस के जिला महामंत्री ओमप्रकाश दुबे और सेवादल के पूर्व संगठन मंत्री इकबाल ने गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस दौरान अशोक शर्मा ने कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में शामिल हुए।

ओमप्रकाश दुबे को पुष्पहार और पार्टी का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर मुकेश गोस्वामी, शंभूदयाल शर्मा, योगेंद्र सिंह तोमर मंडल अध्यक्ष, बृजमोहन शर्मा मंडल अध्यक्ष, सुरेंद्र चौहान, भूदेव शर्मा आदि मौजूद रहे।

शहर में डेंगू से बचाव के लिए दवाओं का किया जा रहा है छिड़काव

ग्वालियर। शहर में डेंगू एवं मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर लार्वा व मच्छरों के खात्मे के लिए संसाधन भी बढ़ाए गए हैं। शहर के विभिन्न वार्डों में फॉगिंग मशीनों के साथ-साथ अब स्प्रे पम्प के जरिए भी टेमिफॉस सहित अन्य दवाओं का छिड़काव किया जा रहा है। इस कड़ी में गुरुवार को शहर के वार्ड क्रमांक 60 तथा वार्ड क्रमांक 20 में स्प्रे पंप द्वारा टेमोफास दवा का छिड़काव

कराया गया। इसके अलावा शहर के अन्य सभी वार्डों में नियमित टीमों द्वारा लार्वा सर्वे तथा जमा पानी में दवा डालने की कार्रवाई भी जारी रही। स्वास्थ्य विभाग के द्वारा जन जागरूकता के लिए ई-रिक्शा मोबाइल रथ के माध्यम से डेंगू से बचाव व रोकथाम के लिए प्रचार प्रसार कराया जा रहा है। डेंगू से अधिक प्रभावित क्षेत्र डीडी नगर, शताब्दीपुरम, पिंटो पार्क, मुरार व गोले का मंदिर आदि क्षेत्रों में गुरुवार को माइक के जरिए प्रचार प्रसार किया गया। साथ ही पेम्प्लेट भी वितरित किए गए।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पटवारी आज आएंगे

ग्वालियर। मप्र कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी आज 4 अक्टूबर को ग्वालियर आएंगे। श्री पटवारी नई दिल्ली से शताब्दी एक्सप्रेस से चलकर प्रातः 9:15 बजे ग्वालियर आएंगे, जहां पर कांग्रेसजनों द्वारा स्वागत कर उनकी अगवानी की जाएगी। कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा ने बताया कि 4 अक्टूबर को ग्वालियर आएंगे। श्री पटवारी प्रातः 9:15 पर नई दिल्ली से शताब्दी एक्सप्रेस से ग्वालियर आगमन पर स्वागत कर अगवानी की जाएगी।

कलश यात्रा के साथ कालका देवी मंदिर में भागवत कथा शुरू

ग्वालियर। जय मां कालका देवी नवयुवक समिति की ओर से नायक साहब की बजरिया नया बाजार स्थित कालका देवी मंदिर में गुरुवार को भागवत कथा से पूर्व भव्य कलश यात्रा निकाली गई। जिसमें 108 माता, बहनें पीले वस्त्र धारण कर सिर पर कलश लेकर चलीं। कलश यात्रा सनातन धर्म मंदिर से कलश पूजन के पश्चात आरंभ हुई, जिसमें कथा व्यास आचार्य विनयकांत त्रिपाठी बग्घी पर सवार होकर निकले। श्रद्धालु महिला, पुरुष डीजे पर गूंज रहे भजनों की मधुर धुन पर आनंदित होते हुए चल रहे थे। कलश यात्रा इंदरगंज चौराहा, दाल बाजार, नया बाजार से निकली तो वहां के वाशिंदे उसकी मनोहारी छवि को देखने के लिए घरों से बाहर निकल आए। किसी ने जलपान तो किसी ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। प्रथम दिवस की कथा

का श्रवण कराते हुए आचार्य विनयकांत त्रिपाठी ने कहा कि भागवत कथा वो भागीरथी है, जो श्रवण मात्र से भक्तों को पापमुक्त करा देती है। इसके लिए हम लोकधर्म का त्याग कर दें, मैं और मेरा का अहंकार छोड़ संतों का संग कर उनकी सेवा कर लें, तो उद्धार होना निश्चित है। उन्होंने भक्तों से कहा कि लोग समय का बहाना बनाकर भक्ति से दूर होते जा रहे हैं। हमें प्रभु की आराधना के लिए भी समय प्रतिदिन निकालना चाहिए। यदि हम घर में बुजुर्गों का आदर और स्त्रियों का सम्मान करेंगे तो घर में कभी विवाद नहीं होंगे और परिवार आदर्श कहलाएगा। इसके लिए जरूरी है कि हम बच्चों को बचपन से ही धर्म और संस्कारों की शिक्षा दें। इस अवसर पर परीक्षत पद्मा श्याम सेन, महेश राठौर, सुधीर राठौर, विजय सिंह, संजीव राठौर, गिरीश साहू, आदित्य भार्गव, सोनू नामदेव, सुमित राठौर, विकास शर्मा, नीरज चौरसिया, चेतन सेन, स्वतंत्र राठौर, मनीष राठौर, प्रवीण शर्मा, मोनू नामदेव, मोंटी राठौर, शैलेंद्र राठौर, नरेंद्र सिंह, सौरभ राठौर, उमेश तिवारी, विशाल शर्मा, अभिषेक राठौर, देवेश राठौर सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे।

सिंधी कॉलोनी में श्रीमद देवी भागवत कथा का शुभारंभ

ग्वालियर। शरद नवरात्रि के पहले दिन सिंधी कॉलोनी कंपू में जयशंकर मंदिर परिसर में श्रीमद देवी भागवत कथा का शुभारंभ गुरूवार को कलश यात्रा के साथ हुआ। कलश यात्रा गुरुवार सुबह बटालियन हनुमान मंदिर से प्रारंभ होकर कथा स्थल तक पहुंची। कथा का समापन 11 अक्टूबर को महाप्रसाद के साथ होगा। प्रतिदिन समय दोपहर एक बजे से पांच बजे तक रहेगा। श्रीमद भागवत कथा के मुख्य आयोजक पूर्व पार्षद सुजीत सिंह भदौरिया ने सभी से कथा श्रवण करने का निवेदन किया है।

देवी प्रतिमा आगमन को लेकर की सभी मार्गों पर पेच रिपेयरिंग

ग्वालियर। नगर निगम द्वारा नागरिकों की सुविधा एवं सुगम

यातायात के लिए तथा नवदुर्गा महोत्सव प्रारंभ होने पर देवी प्रतिमा आगमन के सभी प्रमुख मार्गों पर युद्ध स्तर पर पेंच रिपेयरिंग का कार्य कराया गया तथा अनेक स्थानों पर निरंतर पेंच रिपेयरिंग का कार्य चल रहा है।

नोडल अधिकारी पेच रिपेयरिंग प्रदीप जादौन एवं सहायक यंत्री हसीन अख्तर ने बताया कि निगम के अमले द्वारा निरंतर सुगम यातायात एवं आम नागरिकों की सुविधा के लिए विभिन्न सड़कों पर पेच रिपेयरिंग का काम किया जा रहा है। वहीं अब पूरे देश में नवदुर्गा महोत्सव प्रारंभ हो गया तथा नवदुर्गा महोत्सव पर शहरवासियों को उत्साह को देखते हुए नागरिकों की सुविधा एवं सुगम यातायात के लिए हनुमान चौराहा से महाराज बाडा, शिन्दे की छावनी से कटी घाटी, तिवारी नर्सिंग होम मुख्य मार्ग से शिंदे की छावनी रोड, आपागंज मुख्य मार्ग, सिरोल पृथ्वीपुर रोड, गुप्तेश्वर माता का मंदिर, सिरोल, सिंधिया स्टेच्यू शताब्दीपुरम, पीएनटी कॉलोनी में रामलीला मैदान के आसपास, दीनदयाल नगर के विभिन्न क्षेत्रों में, आनंद नगर बी ब्लॉक, सुरेश नगर मुख्य मार्ग, शताब्दीपुरम, सीरोल चौराहे से हुरावली तक, बीसी बंगला से सिरोल गोलंबर तक, नया बाजार मैन रोड, सागर ताल चौराहा, तारागंज पुल के पास बगल में, चंद्रबनी नाका, बरुआ गांव, ट्रांसपोर्ट नगर बहोड़ापुर, आदित्यपुरम आदित्याज होटल के पीछे, सिरोल गांव सेंगर जी के घर के पास, इंदिरा नगर पीली कोठी, आस्तिव देव नगर, प्रसाद नगर चार शहर का नाका, शब्द प्रताप आश्रम के पास प्रेम नगर सहित शहर के अन्य सभी प्रमुख मार्गों पर पेच रिपेयरिंग कर यातायात को सुगम बनाया गया।

डॉ. चतुर्वेदी एवं डॉ. सिंह को सेवानिवृत्त होने पर दी विदाई

ग्वालियर। चिकित्सा युग के चिकित्सक डॉ. आरके चतुर्वेदी एवं डॉ

एके सिंह के मंगलवार को सेवानिवृत होने पर हाईकोर्ट डिस्पेंसरी स्टाफ द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवाएं ग्वालियर चंबल संभाग डॉ नीलम सक्सेना उपस्थित रही। कार्यक्रम में स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के जिला महामंत्री दिनेश गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष हरिमोहन शर्मा, म.प्र. कर्मचारी कांग्रेस के जिला सचिव सुनील पटेरिया, समीर गुप्ता, वरिष्ठ फार्मासिस्ट मनोज राठौर, प्रशांत सक्सेना, जगदीश सिंह, शोभा शर्मा, पुष्पा भगत, किशोर तिवारी, सुधीर नंदोड़े, संतोष यादव, संतोष नागर, रामावतार, अरविंद, नीतू आदि के साथ ही अभिभाषकगण एवं अन्य गणमान्य नागरिक भी शामिल हुए।

भक्तों ने हजीरा क्षेत्र में नाचते गाते निकाली हरिनाम प्रभात फेरी

ग्वालियर। आशाराम बापू आश्रम ग्वालियर के तत्वाधान में हजीरा क्षेत्र में भव्य हरिनाम प्रभात फेरी का आयोजन पितृ पक्ष के निमित किया गया।हरिनाम प्रभात फेरी प्रातः हजीरा से शुरू होकर चार शहर का नाका गदाईपुरा लाइन नंबर 9 होते हुए वापिस हजीरा चौराहे पर समाप्त हुई।

मीडिया प्रभारी बलबीर सिंह परमार ने बताया कि चलित वाहन पर साउंड व्यवस्था से युक्त व्यास पीठ पर विराजे संत आशारामजी बापू के विग्रह फोटो का जगह जगह भक्तों ने पुष्पहार से स्वागत किया गया । हरि नाम प्रभात फेरी में संत शिरोमणि परम पूज्य संत आशारामजी बापू महाराज का स्वागत किया गया।रास्ते भर पुष्प वर्षा कर गली मोहल्ले को हरि नाम के रस से सराबोर कर दिया ।पितृ पक्ष में गदाईपुरा हजीरा क्षेत्र में भक्तों को आशीर्वाद देने पधारे गुरुदेव स्वरूप हरिनाम प्रभात फेरी के स्वागत अभिनंदन पलक पांवड़े बिछा कर किया। पितरों की सद्गति निमित आयोजित हरिनाम प्रभात फेरी में घर घर मंगल आरती कर भक्तों ने खूब आशीर्वाद ग्रहण किए। हरिनाम प्रभात फेरी में भक्तों द्वारा हजारों ऋषि प्रसाद सत्साहित् पत्रिका उपहार स्वरूप जन साधारण में वितरित की गई। आश्रम संचालक अर्जुन भाई सतराम भाई कमल भाई के अलावा संत पाल सिंह तोमर, अंशु तोमर, कमल राजीव शिवहरे, अमर सिंह चौहान, बीपीएस सेंगर, सीबी शर्मा, हरी सिंह, सुमित शर्मा, रामवीर, हितेश चितोरिया, दिलीप हुंदवानी, हरीश ढींगरा, बलबीर सिंह परमार के अलावा मातृ शक्ति स्वरूपा श्रीमती विमला कुशवाह, कमला तोमर, शंकुतला चौहान, कुसुम चंदेल, योगिता इत्यादि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

स्काउट गाइड ने मनाई गांधी एवं शास्त्री जयंती, जनजागरण रैली भी निकाली

ग्वालियर। भारत स्काउट एवं गाइड मध्य प्रदेश जिला संघ ने महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर जिला मुख्यालय पड़ाव पर याद किया। कार्यक्रम में जिला मुख्य आयुक्त बृजेंद्र सिंह जादौन, जिला शिक्षा अधिकारी अजय कटियार, जिला सचिव सुरेंद्र भदौरिया, जयप्रकाश मिश्रा एडवोकेट, शिवनारायण गुप्ता, आरडी सिंघल, श्रीमती रेशु राजावत उपाध्यक्ष जिला संघ, विनय अग्रवाल सहायक जिला कमिश्नर,

सुरेश चंद्र शर्मा, श्रीमती साधना अग्निहोत्री डीटीसी, एसडी उपाधाय कोषाध्यक्ष, आरएस ठाकुर सहायक आयुक्त स्काउट, विष्णु अग्रवाल, आशीष मिश्रा, प्रताप माहौर, नरेंद्र पीप्पल, राजू वर्मा, लेखराज कुशवाहा उपस्थित थे। कार्यक्रम में सर्वप्रथम सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन मुख्यालय स्काउट पर किया गया। सर्वधर्म प्रार्थना के पश्चात गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी के छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात एक जन जागरण रैली का आयोजन किया गया। रैली को हरी झंडी बृजेंद्र सिंह जादौन जिला मुख्य आयुक्त द्वारा दिखाकर प्रारंभ किया गया। रैली में स्काउट गाइड बड़े उत्साह के साथ बैनर एवं स्लोगन लिखी पट्टी को लेकर चल रहे थे एवं उत्साह के साथ नारे लगाते हुए जनमानस को स्वच्छता नशा मुक्ति पर्यावरण बचाओ आदि नारे लगाते हुए चल रहे थे। रैली का समापन जिला मुख्यालय पड़ाव पर किया गया। आभार व्यक्त एसडी उपाध्याय जिला संघ एवं कार्यक्रम का संचालन शंकर सिंह एएसओसी द्वारा किया गया।

संपादकीय

ऐसे ही नहीं मिल जाती 'राम रहीम' को पैरोल, पर्दे के पीछे चल रही अलग ही कहानी

बताया जाता है कि राम रहीम का हरियाणा के कुछ जिलों में खासा प्रभाव है। तो क्या वह हर बार अपने अनुयायियों को कोई राजनीतिक संदेश देने बाहर आता है? हरियाणा विधानसभा चुनाव के समय गुरमीत राम रहीम के पैरोल पर बाहर आने को लेकर स्वाभाविक ही सवाल उठने लगे हैं। एक ऐसा व्यक्ति, जो हत्या और बलात्कार जैसे संगीन जुर्म में उम्रकैद की सजा काट रहा हो, वह बार-बार सलाखों से बाहर कैसे चला आता है, यह बड़ा सवाल है। ऐसा अनेक बार हो चुका है। अब तक वह करीब दो सौ पचहत्तर दिन पैरोल या फरलो पर बाहर रह चुका है। इसे महज संयोग नहीं कहा जा सकता कि वह प्रायः उन्हीं दिनों जेल से बाहर आया, जब कहीं न कहीं चुनाव चल रहे थे। हालांकि इस बार हरियाणा के निर्वाचन आयोग ने उसे हरियाणा से बाहर रहने को कहा है, मगर इतने भर से उसके पैरोल पर सवाल उठने बंद नहीं हो जाते। करीब महीना भर पहले ही पैरोल पर रह कर वह जेल गया था। पूछा जा रहा है कि एक तरफ संगीन मामलों में सजायाफ्ता कैदी को पैरोल मिल जाता है, वहीं बहुत सारे आरोपियों को जमानत नहीं मिल पाती। बहुत सारे कैदियों को नितांत आकस्मिक स्थितियों में भी पैरोल नहीं मिल पाती। क्या राम रहीम के लिए जेल नियमावली अलग है।

बताया जाता है कि राम रहीम का हरियाणा के कुछ जिलों में खासा प्रभाव है। तो क्या वह हर बार अपने अनुयायियों को कोई राजनीतिक संदेश देने बाहर आता है? इससे पहले वह हरियाणा नगर निकाय चुनाव के समय तीस दिन की पैरोल पर बाहर आया था। आदमपुर विधानसभा उपचुनाव से पहले उसे चालीस दिन की पैरोल मिली थी। हरियाणा पंचायत चुनाव से पहले भी उसे पैरोल मिली थी। राजस्थान विधानसभा चुनाव से पहले उसे उनतीस दिन की फरलो दी गई थी। इस तरह बार-बार उसके जेल से बाहर आने पर राज्य सरकार की मंशा पर उचित ही सवाल उठ रहे हैं। इसी तरह गुजरात में बिलकिस बानो के बलात्कारियों को भी पैरोल और फरलो पर बार-बार बाहर भेजा जाता रहा और अंततः केंद्र की सहमति से राज्य सरकार ने उनकी सजा माफ कर दी थी। सर्वोच्च न्यायालय की फटकार के बाद फिर उन्हें जेल भेजा गया। शायद सरकारों को कानून की तो कोई परवाह नहीं रह गई है, वे लोकलाज और राजनीतिक मर्यादा भी भूल गई हैं।

हमारे सुख का आधार भौतिक वस्तुओं के अलावा और भी बहुत-सी चीजें हैं। पेड़, पहाड़, आकाश, धरती, नदियां, झील, तारे- ये सब सुंदर हैं। इनकी सुंदरता हमारे मन में सुंदर भाव जगाती है। इसी तरह शब्द भी सुंदर होते हैं। किसी के मीठे शब्दों के माधुर्य और उसे सुनने या पढ़ने के बाद मिलने वाले सुख से ज्यादा कुछ भी सुंदर नहीं है। उसमें बहती मीठी रस-सरिता से ज्यादा किसी वस्तु में माधुर्य रस नहीं है। ऐसी सरिता जिस भी कान तक पहुंचती है, वहां प्रेम, लगाव की चाशनी घोल देती है। मन के भीतर तक आह्लादित कर देती है। रिश्तों को प्रेम के मीठे बंधन में बांध देती है। मीठे शब्द मनुष्य के मन पर चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं और बोलने वाले के प्रति एक विशेष अनुराग उत्पन्न करते हैं। शब्द मीठे और कड़वे, दोनों होते हैं। मीठे शब्द मनुष्य को मनुष्य का हितैषी बनाते हैं, तो कड़वे शब्द मनुष्य को मनुष्य का शत्रु भी बना देते हैं।

'शब्दों' से होती है हमारी पहचान जीवन में करता है ऊर्जा का संचार

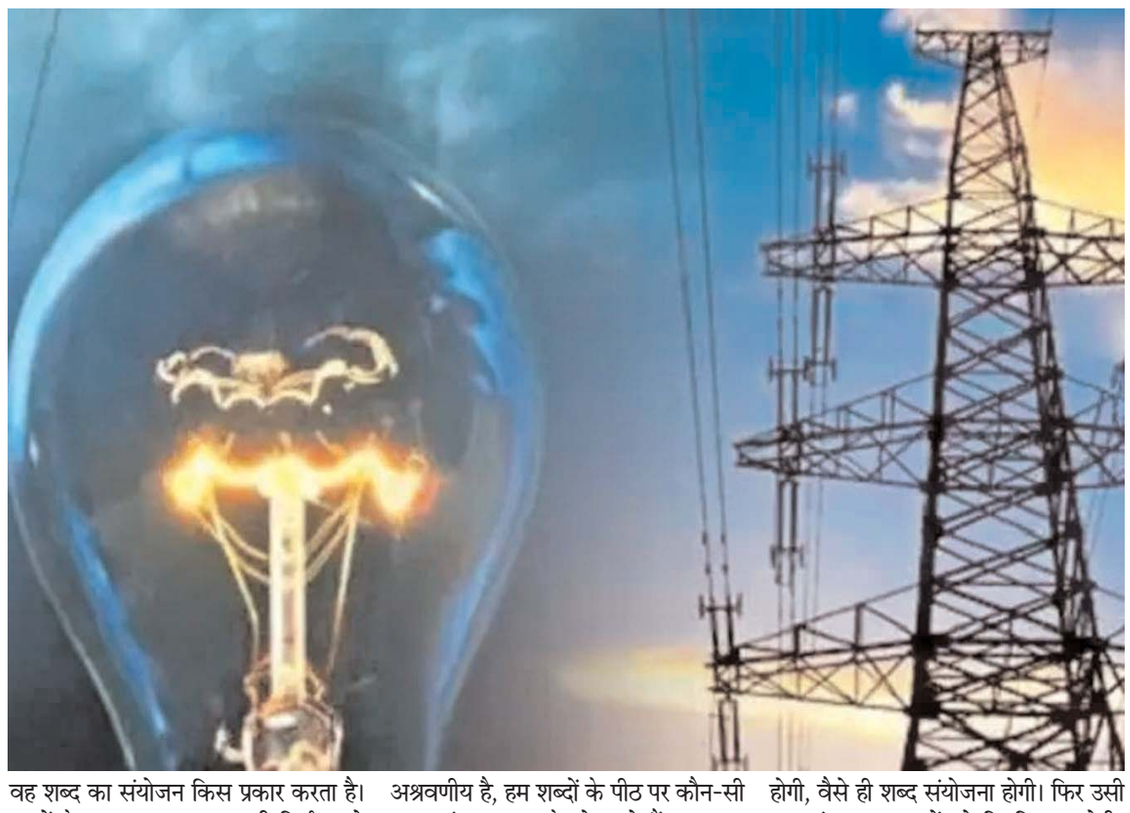

कोई भी शब्द जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक की यात्रा करता है, तो वह खाली हाथ नहीं जाता है। कुछ भाव और भावनाएं, संवेदना लेकर यात्रा करते हैं। अब वह कठोर है या मधुर है, श्रवणीय है या अश्रवणीय है, हम शब्दों के पीठ पर कौन-सी भावनाएं सवार करके भेज रहे हैं, यह सब हमारी मानसिक सुंदरता पर निर्भर करता है। जीवन बहुत सुंदर है और इसकी सुंदरता का आकलन हम धरती पर मिले केवल भौतिक वस्तुओं और सुख-सुविधा से नहीं कर सकते हैं। हमारे सुख का आधार भौतिक वस्तुओं के अलावा और भी बहुत-सी चीजें हैं। पेड़, पहाड़, आकाश, धरती, नदियां, झील, तारे- ये सब सुंदर हैं। इनकी सुंदरता हमारे मन में सुंदर भाव जगाती है। इसी तरह शब्द भी सुंदर होते हैं। किसी के मीठे शब्दों के माधुर्य और उसे सुनने या पढ़ने के बाद मिलने वाले सुख से ज्यादा कुछ भी सुंदर नहीं है। उसमें बहती मीठी रस-सरिता से ज्यादा किसी वस्तु में माधुर्य रस नहीं है। ऐसी सरिता जिस भी कान तक पहुंचती है, वहां प्रेम, लगाव की चाशनी घोल देती है। मन के भीतर तक आह्लादित कर देती है। रिश्तों को प्रेम के मीठे बंधन में बांध देती है। मीठे शब्द मनुष्य के मन पर चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं और बोलने वाले के प्रति एक विशेष अनुराग उत्पन्न करते हैं। शब्द मीठे और कड़वे, दोनों होते हैं। मीठे शब्द मनुष्य को मनुष्य का हितैषी बनाते हैं, तो कड़वे शब्द मनुष्य को मनुष्य का शत्रु भी बना देते हैं। शब्दों के इतने प्रभाव हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि जब भी किसी से हम बातचीत करें तो हमारे शब्द मर्यादित और मीठे रहें, क्योंकि हमारे शब्द हमारे संस्कार, हमारे परिवेश, हमारे रहन-सहन आदि बहुत सारी चीजों को दर्शाते हैं। हम सब किसी की भाषा देखकर आसानी से यह अंदाजा लगा लेते हैं कि यह व्यक्ति किस परिवेश से आया है। इसके ज्ञान का स्तर क्या है, इसकी संगति कैसी है और इसके संस्कार कैसे हैं। हमारे शब्द किसी व्यक्ति पर क्या प्रभाव उत्पन्न करेंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे और किस प्रकार शब्दों का संयोजन करते हैं। और यह सब मनुष्य की बुद्धि और विवेक पर निर्भर करता है कि वह शब्द का संयोजन किस प्रकार करता है। शब्दों के प्रभाव इस बात पर भी निर्भर रहते हैं कि शब्दों का संयोजन करते समय हमारे खुद के मन में कौन-से भाव रहते हैं, कितना हमारे अंदर प्रेम, घृणा, वात्सल्य, छल, कपट या माधुर्य था। शब्द तो स्वयं में जड़ है लेकिन हम अपने भाव और शब्द संयोजन द्वारा ही उसमें चेतना भरते प्राण फूंकते हैं। इसके बाद उनकी यात्राएं आरंभ होती हैं। फिर हमारे शब्द हमसे होते हुए दूसरे, तीसरे, चौथे तक हमसे भी ज्यादा तीव्र गति से यात्रा करने की क्षमता रखते हैं। जिस-जिस व्यक्ति तक हमारे शब्द पहुंचते हैं, वह व्यक्ति हमारे शब्दों के आधार पर ही हमारे व्यक्तित्व का अपने मन में एक छवि तैयार कर लेता है। यानी हमारे शब्द हमारे पूरे व्यक्तित्व के परिचायक बन जाते हैं। कोई भी शब्द जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक की यात्रा करता है, तो वह खाली हाथ नहीं जाता है। कुछ भाव और भावनाएं, संवेदना लेकर यात्रा करता है। अब वह कठोर है या मधुर है, श्रवणीय है या अश्रवणीय है, हम शब्दों के पीठ पर कौन-सी भावनाएं सवार करके भेज रहे हैं, यह सब हमारी मानसिक सुंदरता पर निर्भर करता है। प्रयास रहना चाहिए कि शब्दों के साथ सुंदर और मृदु भावनाएं ही यात्रा करें, क्योंकि कहा जाता है कि अस्त्रों के बल पर कुछ लोगों पर प्रभाव जमाया जा सकता है, लेकिन अपने मृदु शब्दों के बल पर पूरी दुनिया पर अपना प्रभाव जमाया जा सकता है। इसलिए जब कहीं भी हम अपने शब्द भेज रहे हों, तो इस बात का विशेष खयाल रखना चाहिए कि शब्द जब अपने गंतव्य तक पहुंचें तो उन शब्दों को पाने वाले को वह शब्द अपरिचित और अवांछित न लगे, बल्कि पाने वाले के मन को प्रफुल्लित करे, प्रेम और उल्लास उत्पन्न करे। जब शब्द अपने गंतव्य पर पहुंचे तो वहां पर उसको यथोचित आदर और सत्कार मिले। शब्द को गंतव्य पर आदर सत्कार मिलना दरअसल, भेजने वाले की नीयत और उसकी मनोदशा पर निर्भर करता है, क्योंकि भेजते समय जैसी मन में भावना होगी, वैसे ही शब्द संयोजना होगी। फिर उसी तरह गंतव्य पर शब्दों को नियति प्राप्त होगी। क्या यह रुचिकर लगेगा कि कहीं की यात्रा करें और गंतव्य पर निरादर और अपमान का सामना करना पड़े? ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं चाहेगा कि उसको अपमान और अनादर का सामना करना पड़े। शब्द भी बिल्कुल यही चाहते हैं कि वे जहां भी जाएं, उन्हें सम्मान मिले। मगर इसके लिए भेजने वाले की सुंदर, कोमल भावनाओं का रहना नितांत जरूरी है। भाषा और शब्द कई बार दवा और जहर दोनों प्रभाव भी आत्मसात करके चलते हैं, जो देह की मृत्यु के भले ही कारण न बने, लेकिन संबंधों की मृत्यु के कारण जरूर बन जाते हैं। इसीलिए शब्दों का चुनाव और संयोजन करते हुए बेहद सोच-समझकर अपनी विद्वत्ता का इस्तेमाल करना चाहिए। शब्दों के साथ-साथ एक तरह से भेजने वाला भी उन शब्दों के साथ यात्रा करता है। और चाहे मनुष्य की यात्रा हो या शब्दों की यात्रा हो, सभी यात्राएं मंगलमय होनी चाहिए।

निराश करता राजनीतिक विमर्श, झेलने पड़ेंगे दुष्प्रभाव

राजनीतिक विमर्श में गिरावट के कारणों की पड़ताल करें तो पाएंगे कि राजनीति बहुत प्रतिस्पर्धी हो चली है। पूर्व में लोग सेवा भाव से ही राजनीति का रुख करते थे और मूल रूप से अपने किसी प्रकल्प में व्यस्त रहते थे किंतु अब स्थिति यह है कि लोग अब अपना मूल काम छोड़कर पूर्णकालिक रूप से राजनीति में लगे हैं। बीते दिनों कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को एक पत्र लिखकर कहा कि वह अपने उन नेताओं पर लगाम लगाएं, जो राहुल गांधी के प्रति अनर्गल बयानबाजी में लगे हुए हैं। इसके जवाब में लिखी चिट्ठी में जेपी नड्डा ने खरगे को उन 'गालियों' की याद दिलाई, जो कांग्रेस नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देते रहते हैं। देश के दो सबसे बड़े राजनीतिक दलों के राष्ट्रीय अध्यक्षों के इस पत्राचार से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि भारतीय राजनीति में लोकाचार की दशा-दिशा कितनी दयनीय हो गई है। शीर्ष पर ऐसी स्थिति से इतर दूसरी-तीसरी पांत के नेताओं से जुड़े ऐसे वाकयों के अंतहीन उदाहरण मिल जाएंगे। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय राजनीति में विमर्श का स्तर कितना गिरता जा रहा है। देर-सबेर देश को इसके दुष्प्रभाव झेलने ही पड़ेंगे। राजनीतिक विमर्श में तल्खी कोई नई बात नहीं है। अतीत में भी यह बहुत आम रहा है, लेकिन कड़वी बातों के तीर प्रायः चुनावी रण में ही चलते थे। उनकी एक मर्यादा भी होती थी। अब राजनीतिक बयानबाजी में कड़वाहट बारहमासी हो चली है और उसका स्तर भी निम्न से निम्नतर होता जा रहा है। हालांकि ऐसा नहीं है कि केवल भारत में ही यह देखने को मिल रहा हो। विश्व के सबसे पुराने एवं परिपक्व लोकतंत्र का दावा करने वाले अमेरिका में भी राष्ट्रपति चुनाव के दौरान तीखे राजनीतिक हमले हो रहे हैं और रिपब्लिकन प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप और डेमोक्रेटिक दावेदार कमला हैरिस एक दूसरे को नीचा दिखाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे। जहां तक भारत की बात है तो देश में सार्थक राजनीतिक विमर्श का एक समृद्ध इतिहास रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सभी नेता बहुत पढ़े-लिखे एवं चिंतनशील थे। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय नेताओं की पीढ़ी भी विद्वता से परिपूर्ण एवं विचारशील रही। तमाम नेता समाचार पत्रों में नियमित स्तंभ लिखते रहे। कुछ नेताओं ने समाचार पत्रों का संपादन भी किया। विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखीं। नए-नए विचारों के तेज से जनता को जागरूक किया। कई आंदोलन खड़े किए। ऐसे इतिहास को देखते हुए वर्तमान की भाषाई एवं वैचारिक दुर्दशा बड़ा दयनीय चित्र प्रस्तुत करती है। संभव है कि वर्तमान पीढ़ी के नेताओं के पास पुराने नेताओं से अधिक डिग्रियां और व्यापक वैश्विक अनुभव हो, लेकिन उनमें मौलिकता के अभाव के साथ ही अनावश्यक आक्रामकता भी दिखती है। उनमें गहराई का अभाव दिखता है और गर्जन-तर्जन के स्वर अधिक सुनाई पड़ते हैं। राजनीतिक विमर्श में गिरावट के कारणों की पड़ताल करें तो पाएंगे कि राजनीति बहुत प्रतिस्पर्धी हो चली है। पूर्व में लोग सेवा भाव से ही राजनीति का रुख करते थे और मूल रूप से अपने किसी प्रकल्प में व्यस्त रहते थे, किंतु अब स्थिति यह है कि लोग अब अपना मूल काम छोड़कर पूर्णकालिक रूप से राजनीति में लगे हैं। पहले टेलीविजन और अब सोशल नेटवर्क साइट्स की वजह से नेताओं में दिखावे की भावना भी बढ़ी है। कई ऐसे शोध सामने आए हैं, जिन्होंने यह पुष्ट किया है कि टेलीविजन और डिजिटल मीडिया ने नेताओं की भाषा से लेकर भाव-भंगिमाओं को प्रभावित किया है। भारत में भी यही देखने में आया है कि जब से संसदीय कार्यवाही का सीधा प्रसारण होना आरंभ हुआ है, तबसे कार्यवाही का स्तर सुधरने के बजाय और बिगड़ता जा रहा है। कई नेता संसद में विधि निर्माता के बजाय चुनावी रैली को संबोधित करते नेता अधिक नजर आते हैं। इसी तरह डिजिटल मीडिया पर भी चूंकि अनाप-शनाप बातें ही अधिक वायरल होती हैं तो तमाम नेता उसे देखते हुए अपनी भाषा और लहजे में मर्यादा नहीं रख रहे। यह चिंताजनक है। वैश्विक पटल पर भारत को सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, किंतु यदि राजनीतिक विमर्श में गिरावट का सिलसिला चलता रहा तो भारत की यह प्रतिष्ठा समय के साथ धूल-धूसरित होती जाएगी। राष्ट्र-समाज को भी इसके नुकसान उठाने पड़ेंगे। सबसे बड़ा नुकसान तो संस्थानों की छीजती आभा के रूप में सामने आएगा। सार्वजनिक जीवन में भाषा और विचारों की टूटती मर्यादा का असर सुप्रीम कोर्ट से लेकर संसद तक देखने को मिल रहा है। इससे राजनीतिक दलों में भी दुराव बढ़ेगा, जिससे कार्यकर्ताओं में टकराव होगा। परिणामस्वरूप सामाजिक असंतोष की स्थिति निर्मित होगी। विकसित होने की राह पर बढ़ रहे भारत को अपने समक्ष कायम चुनौतियों का समाधान ढूंढ़ना आवश्यक है, जिसके लिए सुधार करने ही होंगे, लेकिन राजनीतिक वर्ग में तकरार से असहमति की स्थिति खेल बिगाड़ने वाली साबित हो सकती है। कृषि कानूनों से लेकर आरक्षण का विषय और उत्तर भारत बनाम दक्षिण भारत का मुद्दा इसकी मिसाल है कि नीतियों को लेकर अनर्गल प्रलाप का ऐसा दौर शुरू हो चुका है कि सच और झूठ के बीच के अंतर को समाप्त करने की कोशिश हो रही है। ऐसे में, यदि विमर्श का स्तर नहीं सुधरा तो चुनौतियों को लेकर राजनीतिक समाधान तलाशना मुश्किल होता जाएगा।झ

देश पहले से ही जाति, मजहब, क्षेत्र, भाषा आदि विभाजक रेखाओं से त्रस्त है और कुछ नेता निहित स्वार्थों के चलते इन रेखाओं को और गहरा कर रहे हैं, जिसका देश को दीर्घकाल में बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा। जब भारत में विभिन्न मुद्दों पर मतभेद दिखेंगे तो विदेशी ताकतें इसका लाभ उठाने के लिए अपने दांव चलेंगी। वैसे भी भारत अपनी तरक्की के चलते कई देशों की आंखों में चुभ रहा है और पड़ोस में भी स्थितियां हमेशा अनुकूल नहीं रही हैं तो आंतरिक विभाजन की स्थिति प्रतिस्पर्धी देशों के लिए अवसर बनाएगी। इस पूरे परिदृश्य में देश राजनीतिक अस्थिरता का भी शिकार हो सकता है, जो आर्थिक संभावनाओं पर तुषारापात करेगा। यह बहुत स्वाभाविक है, क्योंकि विदेशी निवेशक और दिग्गज अंतरराष्ट्रीय कंपनियां किसी भी देश में निवेश के लिए स्थिरता और राजनीतिक स्थायित्व को ध्यान में रखती हैं। आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और वह जल्द ही तीसरी सबसे बड़ी आर्थिकी बनना चाहता है। यदि आर्थिक समृद्धि के इस सपने को साकार करना है तो राजनीति मोर्चे के महारथियों को भी अपनी भूमिका गंभीरता से समझनी होगी।

(लेखक सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं।)

इजरायल-ईरान हमले को लेकर पूरी दुनिया की नजर भारत पर, अमेरिका और रूस के बीच निकालना है रास्ता

मगर जब इजराइल ने लेबनान पर हमला कर हिजबुल्लाह प्रमुख हसन नसरल्लाह और दूसरे नेताओं को मार गिराया तो इजराइल की चेतावनियों को धता बताते हुए ईरान ने उस पर जवाबी मिसाइलें दाग दीं। हालांकि अभी तक इस बात की पुष्टि नहीं हो सकी है कि इस हमले से इजराइल में कितना नुकसान हुआ है, मगर इससे इजराइल के पक्ष और विपक्ष में दुनिया के बंट जाने और संघर्ष बढ़ने की आशंकाएं गहरा गई हैं। अमेरिका शुरू से इजराइल का समर्थन करता रहा है। ईरान के हमले के बाद उसने खुल कर कह दिया कि जब भी जरूरत पड़ेगी, उसकी सेनाएं इजराइल की मदद के लिए उतरने को तैयार हैं।

हालांकि ऐसी स्थितियों में दुनिया की नजर भारत पर बनी रहती है और उम्मीद की जाती है कि वह मध्यस्थता कर युद्धविराम का रास्ता तैयार कर सकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने के लिए भारत लगातार प्रयास करता भी रहा है। आखिरकार ईरान ने इजराइल पर मिसाइलें दाग कर उसे चुनौती दे दी। अभी तक हमास के विरुद्ध इजराइल की जंग को लेकर वह चुप्पी साधे हुए था। मगर जब इजराइल ने लेबनान पर हमला कर हिजबुल्लाह प्रमुख हसन नसरल्लाह और दूसरे नेताओं को मार गिराया तो इजराइल की चेतावनियों को धता बताते हुए ईरान ने उस पर जवाबी मिसाइलें दाग दीं। हालांकि अभी तक इस बात की पुष्टि नहीं हो सकी है कि इस हमले से इजराइल में कितना नुकसान हुआ है, मगर इससे इजराइल के पक्ष और विपक्ष में दुनिया के बंट जाने और संघर्ष बढ़ने की आशंकाएं गहरा गई हैं। अमेरिका शुरू से इजराइल का समर्थन करता रहा है। ईरान के हमले के बाद उसने खुल कर कह दिया कि जब भी जरूरत पड़ेगी, उसकी सेनाएं इजराइल की मदद के लिए उतरने को तैयार हैं। कुछ दिनों पहले रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन ने इजराइल को चेतावनी दी थी कि वह लेबनान पर हमले से बाज आए। बताया जा रहा है कि ईरान ने रूस से बातचीत के बाद ही इजराइल पर मिलसाइलें दागीं। इस तरह यह आशंका बढ़ गई है कि अगर इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष बढ़ा, तो विश्वयुद्ध की स्थिति बन सकती है। दरअसल, यह संघर्ष फिलिस्तीन को लेकर शुरू हुआ था। लंबे समय से यह विवाद चला आ रहा है, मगर जब हमास के लड़ाकों ने इजराइल की सीमा में उतर कर हमले किए तो इजराइल ने उसके खिलाफ जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। इजराइल ने पहले ही फिलिस्तीन का लगभग सारा हिस्सा हथिया लिया था। अब उसने बचे हुए गाजा पट्टी पर भी हमले शुरू कर दिए और एक तरह से फिलिस्तीन का नामोनिशान मिटाने पर तुला है। हमास पर काबू पाने के बाद उसने लेबनान के हिजबुल्ला और यमन के हूती विद्रोहियों को नेस्तनाबूद करने की कोशिशें तेज कर दीं। सब जानते हैं कि हमास, हिजबुल्लाह और हूती- तीनों संगठनों को ईरान ने पाला-पोसा है। इजराइल इन्हें आतंकी संगठन बताता है, जबकि ईरान उन्हें स्वतंत्रता सेनानी कहता है। जैसा कि इजराइल के रुख से जाहिर है, वह अपने विरुद्ध उठने वाले किसी भी कदम को सख्ती से कुचलने को प्रतिबद्ध है। इसकी खुली चेतावनी भी वह दे चुका है। कुछ दिनों पहले इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान की जनता को सीधे संबोधित करते हुए वहां के शाह के खिलाफ उन्हें भड़काने की भी कोशिश की थी। अगर इजराइल और ईरान में संघर्ष बढ़ता है, तो इसके कई घातक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। इन हालात में भारत संतुलन बनाकर चल रहा है। भारत के संबंध अमेरिका और इजराइल से बहुत अच्छे हैं, तो ईरान और रूस से भी रणनीतिक संबंध हैं। दो दिन पहले प्रधानमंत्री ने इजराइल के प्रधानमंत्री से फोन पर बातचीत कर पश्चिम एशिया में शांति बहाली और बंधकों की सुरक्षित रिहाई की अपील की थी। मगर ईरान के हमले के बाद स्थिति बदल गई है। हालांकि ऐसी स्थितियों में दुनिया की नजर भारत पर बनी रहती है और उम्मीद की जाती है कि वह मध्यस्थता कर युद्धविराम का रास्ता तैयार कर सकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने के लिए भारत लगातार प्रयास करता भी रहा है। मगर इजराइल के मामले में यह काम थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो गया है। इजराइल अपनी जिद पर अड़ा हुआ है और अब ईरान ने उसे चुनौती दे दी है। इस संघर्ष को और बढ़ने से रोकने का रास्ता फिलहाल इजराइल और अमेरिका को ही निकालना है।

हिंदू मंदिरों के संचालन का सवाल

इस मांग के विरोध में यह कहा जा रहा है कि अगर मंदिरों से सरकारी नियंत्रण हट गया तो क्या वे फिर से ब्राह्मण वर्चस्व में नहीं चले जाएंगे? इसी के साथ यह भी कहा जा रहा है कि ये ब्राह्मण ही थे, जिन्होंने सारे मंदिरों पर कब्जा कर लिया और उनमें दलितों और पिछड़ों की भागीदारी सीमित कर दी। यह सही है कि भारत में अधिकांश मंदिरों के पुजारी जन्मना ब्राह्मण होते रहे। शायद आज भी अधिकांश मंदिरों में वही हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि शत-प्रतिशत मंदिरों के पुजारी ब्राह्मण होते हैं। अनुसूचित जाति और जनजाति के पुरोहित उनकी अपनी जाति के होते हैं और उनके मंदिरों के पुजारी भी, खासकर दलितों के यहां। जनजातियों का सिस्टम अलग है।

देश में आर्य समाज कबीर पंथ ब्रह्म समाज इत्यादि के हजारों मंदिर हैं जिनमें ब्राह्मण पुरोहित नहीं हैं। शहरों में तो खैर पता ही नहीं चलता कि किस मंदिर में ब्राह्मण या गैर-ब्राह्मण पुरोहित हैं। आधुनिक काल में ऐसे बहुत से संप्रदाय बने हैं- खासकर इस्कान साईं मंदिर समूह गायत्री परिवार आदि जिनमें सभी जातियों के पुरोहित हैं। पुजारी और पुरोहित में फर्क करना जरूरी है। तिरुपति बालाजी मंदिर में पशुओं के चर्बीयुक्त घी से बने प्रसाद पर विवाद के बीच यह मांग उठ रही है कि मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त किया जाए। इस मांग के विरोध में यह कहा जा रहा है कि अगर मंदिरों से सरकारी नियंत्रण हट गया तो क्या वे फिर से ब्राह्मण वर्चस्व में नहीं चले जाएंगे? इसी के साथ यह भी कहा जा रहा है कि ये ब्राह्मण ही थे, जिन्होंने सारे मंदिरों पर कब्जा कर लिया और उनमें दलितों और पिछड़ों की भागीदारी सीमित कर दी। यह सही है कि भारत में अधिकांश मंदिरों के पुजारी जन्मना ब्राह्मण होते रहे। शायद आज भी अधिकांश मंदिरों में वही हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि शत-प्रतिशत मंदिरों के पुजारी ब्राह्मण होते हैं। अनुसूचित जाति और जनजाति के पुरोहित उनकी अपनी जाति के होते हैं और उनके मंदिरों के पुजारी भी, खासकर दलितों के यहां। जनजातियों का सिस्टम अलग है। हिंदू व्यवस्था में ब्राह्मण उन्हीं के पुरोहित थे, जिनसे उनका 'पानी पीने का संबंध' था यानी अभी की अधिकांश कथित सवर्ण और पिछड़ी जातियों के यहां, जो सकल आबादी की करीब 50 प्रतिशत हैं। सवाल है कि क्या दलितों के यहां पूजा न करवाने का फैसला अकेले ब्राह्मणों का था? क्या देश के दो-तीन प्रतिशत ब्राह्मण और उसमें भी 0.01 प्रतिशत पुरोहित ऐसा अपने मन से थोप सकते थे? स्पष्ट है कि इसमें सवर्ण और पिछड़ा सहित पूरा समाज शामिल था। 2011 की जनगणना में देश में करीब 26 लाख धार्मिक संस्थान/ मंदिर-मस्जिद-चर्च इत्यादि होने की बात कही गई। इसमें करीब 19 लाख हिंदू संस्थान थे। यह मान लें कि पिछले सौ साल में अनेक मंदिर सड़कों के किनारे निहित स्वार्थों के लिए भी बने हों तो यह ध्यान रहे कि उन्हें बनवाने वाले ऐसे बहुत सारे लोग थे, जो ब्राह्मण नहीं थे। करीब 15 लाख मंदिर सैकड़ों-हजारों सालों से देश में हैं, वे राजाओं, जमींदारों और सेठों द्वारा बनाए गए और उन्होंने उसमें ब्राह्मण पुरोहित नियुक्त किए। ऐसा परंपरा से हुआ। किसी ब्राह्मण ने कोई मीटिंग या जलसा नहीं किया कि उसे ही पुरोहित बनाया जाए। इन 15 लाख मंदिरों में से लाखों ऐसे मंदिर भी हैं, जो ब्राह्मणों से इतर मठ हैं। आप गोरखपुर मठ का नाम लें या कर्नाटक में लिंगायत/वोक्कालिगा मठों के, इनके स्वामी गैर-ब्राह्मण होते हैं। हाल में जिस 'सेंगोल' नामक राजदंड का प्रधानमंत्री मोदी ने प्रचार किया और जिसकी जड़ें चोल राजवंश तक जाती हैं, उनके मठाधीश गैर-ब्राह्मण हैं। देश में आर्य समाज, कबीर पंथ, ब्रह्म समाज इत्यादि के हजारों मंदिर हैं, जिनमें ब्राह्मण पुरोहित नहीं हैं। शहरों में तो खैर पता ही नहीं चलता कि किस मंदिर में ब्राह्मण या गैर-ब्राह्मण पुरोहित हैं। आधुनिक काल में ऐसे बहुत से संप्रदाय बने हैं-खासकर इस्कान, साईं मंदिर समूह, गायत्री परिवार आदि जिनमें सभी जातियों के पुरोहित हैं। पुजारी और पुरोहित में फर्क करना जरूरी है। पुजारी वह है, जो दैनिक पूजा-अर्चना या भोग लगाता है। पुरोहित वह है, जो खास अंतराल पर पारिवारिक कर्मकांड करता है। सवर्णों या पिछड़ों के बीच कर्मकांड पर तो ब्राह्मणों का वर्चस्व है, लेकिन पुजारी होने पर नहीं। यह फर्क हमें समझना चाहिए। कुछ तो पुरोहित भी गैर-ब्राह्मण हैं। बिहार के सबसे प्रसिद्ध पटना के हनुमान मंदिर में करीब 40 प्रतिशत गैर-ब्राह्मण पुरोहित हैं, जो पूर्व आइपीएस अफसर द्वारा संचालित है। वह भूमिहार हैं। देश के कुछ हिस्सों में 'राज्य' ने मंदिरों में गैर-ब्राह्मण पुरोहितों को नियुक्त करना शुरू किया है। इन मंदिरों पर राज्य का नियंत्रण है। तमिलनाडु इसमें अग्रणी है। तमिलनाडु की ब्राह्मण विरोधी राजनीति के बावजूद मंदिरों में गैर-ब्राह्मण पुजारी ज्यादा नहीं हैं। संभवतः इसका एक कारण यह है कि पुजारी बनने का लाभ कम है और जीवनशैली कठिन है। फिर भी प्रतीकात्मक रूप में इसे समतावाद के तौर पर लिया जा रहा है। यह कहना कि ब्राह्मणों ने एक समूह बनाकर धर्मस्थलों पर कब्जा कर लिया, सत्य से परे है। यह कहना वैसे ही है, जैसे यह प्रचार करना कि मारवाड़ियों ने देश की अर्थव्यवस्था पर कब्जा कर लिया है! यह भी उल्लेखनीय है कि सामान्य मंदिर अलग हैं, मठ अलग हैं और लोकदेवताओं के मंदिर अलग हैं।

कड़ी सुरक्षा के बीच प्रैक्टिस करने स्टेडियम पहुंची टीमें

- 100 प्वाइंट पर तैनात रहे डेढ़ हजार जवान, जगह जगह रोका गया यातायात

ग्वालियर। शंकरपुर स्थित श्रीमंत माधवराव सिंधिया स्टेडियम में छह अक्टूबर को भारत व बांग्लादेश के बीच होने वाले टी-20 मैच के लिए दोनों टीमों ने कमर कसना शुरू कर दी है और गुरूवार को बांग्लादेश की टीम प्रैक्टिस करने के लिए मैदान में पहुंची। जबकि भारत की टीम शाम को पसीना बहाने पहुंची। कुछ संगठनों के विरोध को देखते हुए बांग्लादेश की टीम को गुरूवार को कड़ी सुरक्षा में स्टेडियम पहुंचाया गया। जिसमें सड़क, चौराहों व स्टेडियम में कुल डेढ़ हजार जवान लगाए गए। टीम के स्टेडियम पहुंचने के दौरान जहां-जहां से टीम निकली वहां का यातायात रोक दिया गया था।

बांग्लादेश की टीम के स्टेडियम जाने के दौरान पुलिस ने रास्ते में पड़ने वाले चौराहों के साथ ही उन गलियों के मुहाने पर जवान बैठा दिए थे, जहां से खिलाड़ियों का दल निकलने वाला था, जिससे इनके आगमन के दौरान इन गलियों से निकलने वाले वाहन बीच में ना आने पाएं। होटल रेडिसन से बांग्लादेश की टीम निकलकर आकाशवाणी होते हुए गोला का मंदिर, संजय नगर पुल होते हुए मलगढ़ा चौराहा होते हुए सागरताल, पहुआ वाली माता मंदिर से मोतीझील तिराहा, ट्रांसपोर्ट नगर होते हुए शंकरपुर स्थित स्टेडियम पहुंची। बांग्लादेशी क्रिकेट टीम के निकलने के दौरान पुलिस ने पंद्रह मिनट पहले यातायात को रोक दिया था, जिससे इन चौराहों पर जाम के हालात बन गए और रास्ता बंद होने के कारण कुछ वाहन चालक जल्दी पहुंचने के फेर में गलियों में घुस गए, जिससे गलियों में भी जाम लग गया और लोग परेशान हुए। जैसे ही लोगों को पता चला कि बांग्लादेश की क्रिकेट टीम का काफिला आने वाला है तो सड़क पर खिलाडियों की एक झलक पाने के लिए एकत्रित हो गए और उस समय मायूस हो गए, जब पता चला कि क्रिकेट टीम तो बस में है और खिड़कियों पर पर्दे पड़े हुए हैं।

स्टेडियम में टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट मैच के लिए भारत - बांग्लादेश की टीमें गुरूवार को प्रेक्टिस के लिये पहुंची। गुरुवार दोपहर 2 बजे बांग्लादेश के कैप्टन नजमुल हुसैन शांतो और उनकी टीम ने ग्राउंड पर प्रैक्टिस की। बांग्लादेशी टीम ने वार्मअप रनिंग के बाद 1 घंटे तक नेट प्रैक्टिस की। बैटिंग, बॉलिंग और कैचिंग प्रैक्टिस में खिलाड़ियों ने खूब पसीना बहाया। ग्राउंड पर मेहदी हसन के साथ रकीबुल हसन और रिशाद हुसैन भी नजर आए। इसके बाद शाम 4 बजे से टीम इंडिया ग्राउंड पर पहुंची और पसीना बहाया। टीम के पूर्व कप्तान हार्दिक पांड्या, रवि बिश्नोई, मयंक यादव, जितेश शर्मा, मयंक यादव, रियान पराग और अभिषेक शर्मा सहित अन्य खिलाड़ियों ने स्टेडियम में खूब पसीना बहाया।

आधा सैकड़ा अफसरों पर सुरक्षा का जिम्मा

दोनों टीमों की सुरक्षा के लिए कुल दो हजार जवान लगाए गए हैं, गुरूवार को सड़क और स्टेडियम की सुरक्षा में करीब डेढ़ हजार जवानों को लगाकर अपनी सुरक्षा तैयारी की समीक्षा की। इस दौरान आधा सैकड़ा अफसर, जिसमें 25 एएसपी व डीएसपी के साथ ही करीब बीस निरीक्षकों को लगाया गया था।

एक सैकड़ा प्वाइंट पर यातायात पुलिस

खिलडियों को आने-जाने के मार्ग पर यातायात पुलिस ने एक सैकड़ा प्वाइंट बनाए हैं, जिसमें पुलिस जवान और अफसर तैनात रहेंगे। जिसमें मुख्य चौराहों के साथ ही उन गलियों के मुहाने पर तैनात किया गया है, जो मुख्य मार्ग से मिलती हैं, जिससे खिलाड़ियों के आने-जाने के रास्ते में वाहन उनके काफिले के बीच ना आ सकें।

होटलों की सुरक्षा अभेद

भारत और बांग्लादेश की टीम की सुरक्षा के लिए पुलिस ने होटलों की सुरक्षा अभेद कर दी है। यहां पर सिर्फपुलिस के कदमों की आवाज होती है। यहां आने और जाने वालों को कड़ी पूछताछ और चेकिंग के बाद ही होटल में प्रवेश दिया जा रहा है। होटल के अंदर भी पुलिस जवान और अफसर तैनात रहकर हर एक पर नजर रखे हुए है। सुरक्षा की स्थिति यह है कि होटल के मुख्य गेट तक अनाधिकृत व्यक्ति पहुंच ही नहीं सकता है।

मोदी ने नीरज चोपड़ा की मां को पत्र लिखा, चूरमा के लिए धन्यवाद दिया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को जैवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा की मां सरोज देवी को पत्र लिखकर चूरमे के लिए धन्यवाद दिया। पीएम ने 1 अक्टूबर को जमैका के प्रधानमंत्री के लिए रात्रि भोज रखा था। भोज में नीरज भी शामिल हुए थे, इस दौरान उन्होंने अपनी मां के हाथ का बना चूरमा पीएम को खाने को दिया था। दरअसल, ओलिंपिक के लिए पेरिस जाने से पहले नीरज ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मोदी से बात की

थी। यहां मोदी ने नीरज से उनकी मां के हाथ का चूरमा खिलाने का आग्रह किया था।

पत्र की शुरुआत आदरणीया सरोज देवी जी से की

मोदी ने अपने पत्र की शुरुआत आदरणीया सरोज देवी जी से की। उन्होंने आगे लिखा, सादर प्रणाम! आशा है आप स्वस्थ, सकुशल और सानंद होंगी।

कल भोज में मुझे भाई नीरज से मिलने का अवसर मिला। उनसे चर्चाओं के बीच मेरी खुशी तब और बढ़ गई, जब उन्होंने मुझे आपके हाथों से बना स्वादिष्ट चूरमा दिया।%

मोदी ने कहा, नीरज अक्सर उनसे इस चूरमे की चर्चा करते हैं, लेकिन आज इसे खाकर वह भावुक हो गया। आपके अपार स्नेह और अपनेपन से भरे इस उपहार ने, मुझे मेरी मां की याद दिला दी।

आरसीबी को तरह रोहित शर्मा को मना लेना चाहिए. व उन्हें कप्तान बनाना चाहिए. - मौहम्मद कैफ

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन से पहले टीमें खिलाड़ियों की रिटेन और रिलीज लिस्ट जारी करेंगी. मुंबई इंडियंस भी कई चौंकाने वाले फैसले ले सकती है. रोहित शर्मा टीम के साथ रहेंगे या नहीं, इस पर अभी कुछ नहीं कहा जा सकता. लेकिन इस बीच पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद कैफ का दिलचस्प सुझाव सामने आया है. कैफ का कहना है कि रोहित को अब सिर्फ कप्तान बनकर ही खेलना चाहिए. कैफ ने रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को लेकर भी प्रतिक्रिया दी है.

कैफ का मानना है कि आरसीबी को रोहित शर्मा के लिए अपना खजाना खोलना चाहिए. कैफ ने स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए कहा, रोहित महान कप्तान हैं और उन्हें आईपीएल में अब सिर्फ कप्तान बनकर खेलना चाहिए. उन्होंने टी20 विश्व कप का खिताब जीता है. उनके पास कई ऑफर्स हैं. लोग उन्हें फोन भी करते हैं

कैफ ने कहा, आरसीबी को चांस लेना चाहिए और किसी भी तरह रोहित शर्मा को मना लेना चाहिए. उन्हें टीम का कप्तान बनाना चाहिए. हो सकता है कि वे एक बल्लेबाज की तरह बहुत ज्यादा रन न बना पाएं. लेकिन वे जानते हैं कि प्लेइंग इलेवन किस तरह से बनानी है।

दरअसल आरसीबी के फिलहाल कोई स्थाई कप्तान नहीं है. विराट कोहली ने आईपीएल 2022 से ठीक पहले कप्तानी छोड़ दी थी. इसके बाद फाफ डु प्लेसिस को कप्तानी सौंपी गई. लेकिन डुप्लेसिस अब 40 साल के हो चुके हैं. अगर रोहित की बात करें तो वे फिलहाल 37 साल के हैं. लेकिन वे कप्तानी के अनुभव के मामले में बाकी प्लेयर्स पर भारी हैं. मुंबई इंडियंस ने रोहित की कप्तानी में पांच बार आईपीएल का खिताब जीता.

मुंबई ने पिछले सीजन से ठीक पहले रोहित को कप्तानी से हटा दिया था. अहम बात यह थी कि मुंबई ने रोहित को पहले बताया भी नहीं था. रोहित को हटाने के बाद हार्दिक पांड्या को टीम की कप्तानी सौंपी गई. लेकिन अब आईपीएल 2025 के लिए भी बड़ा फेरबदल हो सकता है.

व्यापार

रिलायंस ट्रेंड्स ने किफायती दामों पर ऑटम विंटर कलेक्शन लॉन्च किया

नई दिल्ली। रिलायंस ट्रेंड्स ने फेस्टिवल सीजन के लिए नया ऑटम विंटर कलेक्शन लॉन्च किया है। 'एवरी डे लोअर प्राइज' कॉन्सेप्ट के साथ पेश यह कलेक्शन सभी तरह के ग्राहकों के लिए डिजाइन किया गया है। ऑनलाइन खरीददार हो या स्टोर से सीधे खरीददारी करने वाले ग्राहक, यह कलेक्शन किफायती दामों पर बेहतरीन फैशन प्रोडक्ट उपलब्ध कराएगा। कंपनी का दावा है कि 199 रुपये की कीमत से कपड़े उपलब्ध होंगे। कलेक्शन पूरी तरह प्रकृति के सुंदरता से प्रभावित है। परिधानों में खिलते फूल, बहती नदिया और शांत पहाड़ की भव्यता को देखा जा सकता है। आधुनिक महिलाओं के लिए कलेक्शन को खास भारतीय शिल्प कला कौशल से निखारा गया है। साइड गेदर कुर्ते से लेकर लेयर्ड कुर्ते, को-ऑर्ड सेट और एथनिक ड्रेस तक, प्रत्येक पीस एक बेहतरीन फैशन स्टेटमेंट है। एंटीक मेटैलिक लुक को समकालीन डिज़ाइनों के साथ मिलाकर डिजाइन किया गया है। त्यौहारी खरीदारी को और भी शानदार बनाने के लिए, कंपनी नए कलेक्शन पर विशेष छूट और प्रमोशन दे रही है। चाहे आप स्टोर में खरीदारी करें या ऑनलाइन, आप ऑफ़र का फायदा उठा सकते हैं।

सेंसेक्स 1,769 अंक गिरकर 82,497 पर बंद, निफ्टी भी 546 अंक फिसला

मुंबई। शेयर बाजार में आज यानी 3 अक्टूबर को साल की चौथी बड़ी गिरावट देखने को मिली है। सेंसेक्स 1,769 अंक (2.10त्न) की गिरावट के साथ 82,497 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी में भी 546 अंक (2.12त्न) की गिरावट रही, ये 25,250 के स्तर पर बंद हुआ। शेयर बाजार में बिकवाली से निवेशकों की वेल्थ 10.7 लाख करोड़ रुपए घट गई। गुरुवार, 3 अक्टूबर को क्रस्श्च पर लिस्टेड कंपनियों का ओवरऑल मार्केट कैप 465 लाख करोड़ रुपए रहा गया। 1 अक्टूबर को यह लगभग 475 लाख करोड़ रुपए था। आज ऑटो,एनर्जी, फाइनेंस और बैंकिंग शेयर्स में ज्यादा गिरावट रही। बीपीसीएल, श्रीराम फाइनेंस और एल×टी के शेयर्स में 4 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट देखने को मिली। ये निफ्टी के टॉप लूजर रहे। वहीं जेएसडब्लू स्टील का शेयर 1.33 प्रतिशत की तेजी के साथ निफ्टी टॉप

गेनर रहा। ईरान और इजराइल के बीच युद्ध की आशंका के कारण ग्लोबल मार्केट में निगेटिव सेंटिमेंट है। इसी का असर भारतीय शेयर बाजार पर भी देखने को मिला है। भारतीय शेयर बाजार के मौजूदा वैल्यूएशन बढ़े हुए हैं। खासकर मिड और स्मॉल-कैप सेगमेंट में। बाजार में इस कारण अच्छा-खासा करेक्शन दिख सकता है। अमेरिका में मंदी की आशंका बढ़ गई है, जिसके कारण पिछले कारोबारी दिन अमेरिकी बाजार में गिरावट रही। इसका असर दुनियाभर के बाजारों में दिख रहा है। एशियाई बाजार में जापान के निक्केई में 1.97 प्रतिशत की तेजी रही। वहीं हॉन्गकॉन्ग के हैंगसेंग इंडेक्स में 1.47 प्रतिशत और कोरिया के कोस्पी इंडेक्स में 1.22 प्रतिशत की गिरावट रही। 2 अक्टूबर को अमेरिका का डाओ जोंस 0.09 प्रतिशत चढ़कर 42,196 पर और नैस्डैक 0.08 प्रतिशत चढ़कर 17,925 पर बंद हुआ। एल×टी 500 भी 0.01 प्रतिशत बढ़कर 5,709 पर बंद हुआ। एनएसई के डेटा के अनुसार, विदेशी निवेशकों ने 1 अक्टूबर को 5,579 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। इस दौरान घरेलू निवेशकों ने 4,60 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे।

गरुड़ कंस्ट्रक्शन एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड का इनिशियल पब्लिक ऑफर यानी आईपीओ 8 अक्टूबर को ओपन होगा। निवेशक इस इश्यू के लिए 10 अक्टूबर तक बिडिंग कर सकेंगे। 15 अक्टूबर को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी के शेयर लिस्ट होंगे। पूरी खबर पढ़े इससे पहले मंगलवार यानी 1 अक्टूबर को सेंसेक्स 33 अंक की गिरावट के साथ 84,266 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं, निफ्टी में भी 15 अंक की गिरावट रही, ये 25,796 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं 2 अक्टूबर को गांधी जयंती पर बाजार बंद था।

एथेनॉल निर्माताओं की लिवाली से मक्का में उछाल

जयपुर। एथेनॉल बनाने वाली कंपनियों की मांग निकलने से इन दिनों मक्का की कीमतें तेज बोली जा रही हैं। बिहार की हरियाणा डिलीवरी मक्का के भाव वर्तमान में 2780 रुपए प्रति क्विंटल चल रहे हैं। मक्की के भावों में आए उछाल को लेकर जानकारों का कहना है कि पौल्ट्री व्यवसाय की बढ़ती मांग और एथेनॉल बनाने में मक्का के उपयोग के कारण इसकी कीमतों में तेजी आई है। यही कारण है कि वर्तमान में मक्का के भाव एमएसपी से काफी ऊंचे चल रहे हैं। वर्ष 2023-24 के लिए सरकार ने मक्के का एमएसपी 2090 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया हुआ है। भीलवाड़ा से ब्रोकर संजय अजमेरा ने बताया कि उत्तर प्रदेश की हरियाणा डिलीवरी मक्का के भाव 2660 रुपए प्रति क्विंटल में

व्यापार हो रहा है। इस बीच राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की नई मक्का भी शुरू हो गई है। महाराष्ट्र एवं गुजरात में नई मक्का की आवक हो रही है। लिहाजा मक्का की कीमतों में अब लंबी तेजी के आसार समाप्त हो गए हैं।

पिछले दो साल की तुलना में दुगुने दाम मिल रहे

वर्ष 2022 में मक्का के भाव 1200 रुपए प्रति क्विंटल के आसपास थे, जबकि वर्तमान में मक्का 2600 रुपए प्रति क्विंटल से ऊपर बिक रही है। जानकार बताते हैं कि मक्की का उपयोग कपड़ा, स्टार्च, कुक्कुट समेत अन्य उद्योगों में लगातार बढ़ता जा रहा है।

किसान खुश, पॉल्ट्री उद्योग परेशान

जहां एक ओर मक्के का दाम बढ़ने से किसान खुश हैं, वहीं मक्का की सप्लाई कम होने से पॉल्ट्री (मुर्गी पालन) उद्योग और स्टार्च कंपनियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। पॉल्ट्री उद्योग और स्टार्च निर्माताओं ने सरकार से मक्के की उपलब्धता बढ़ाने के उपाय करने की मांग की है। जानकारों का कहना है कि देश में मक्का के दाने और मक्का की खली का उपयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। मक्के का जहां पॉल्ट्री क्षेत्र में ज्यादा उपयोग होता है, वहीं मक्का की खली को दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी माना जाता है।

गुगल पे पर अब गोल्ड लोन भी मिलेगा, जेमिनी एआई हिंदी सहित 8 अन्य भारतीय भाषाओं में लॉन्च

नई दिल्ली। टेक कंपनी गूगल ने आज यानी, 3 अक्टूबर को अपने एनुअल इवेंट में गूगल पे पर गोल्ड लोन सुविधा उपलब्ध कराने की घोषणा की। गूगल फॉर इंडिया इवेंट का यह 10वां साल है। इस इवेंट में जेमिनी एआई के हिंदी और 8 अन्य भारतीय भाषाओं में मिलने की घोषणा भी की गई। देशभर में Google Pay यूजर्स के लिए अब से गोल्ड लोन उपलब्ध होगा। इसके लिए गूगल ने मुथूट फाइनेंस के साथ पार्टनरशिप की है। लोन के लिए क्या प्रोसेस होगी अभी इसकी जानकारी कंपनी ने हीं दी है। गूगल पे ने अपनी लोन लिमिट को भी 5 लाख रुपए तक बढ़ा दिया है। गूगल ने भारत में अपने सस्टेनेबिलिटी गोल्स को अचीव करने के लिए अडाणी ग्रुप और क्लियरमैक्स के साथ पार्टनरशिप की है। इसके तहत गुजरात के खावड़ा में 61.4 मेगावाट का सोलर-विंड हाइब्रिड प्लांट, राजस्थान में 6 मेगावाट का सोलर प्लांट और कर्नाटक में 59.4 मेगावाट का विंड प्लांट लगाया जाएगा। गूगल ने कहा कि इससे 2026 तक भारतीय ग्रिड में 186 मेगावाट की न्यू क्लीन एनर्जी जनरेशन कैपेसिटी जुड़ने की उम्मीद है।

गूगल ने अपनी ऑनलाइन पेमेंट सर्विस गूगल पे में एक नए फीचर यूपीआई सर्किल को रिलीज किया है। यूपीआई सर्किल के जरिए पेमेंट करने वाला यूजर यूपीआई अकाउंट से किसी व्यक्ति को जरूरी लिमिट के साथ ट्रांजैक्शन की परमिशन दे सकता है। हाल ही में सरकार ने यूपीआई सर्किल डेलिगेटेड पेमेंट सर्विस को लॉन्च किया था। अभी तक यह फीचर केवल भीम एप में उपलब्ध था। इसके जरिए एक महीने में अधिकतम 15 हजार तक का ट्रांजैक्शन किया जा सकता है। जेमिनी लाइव हिंदी में शुरू- जेमिनी लाइव को गूगल ने हिंदी लैंग्वेज में शुरू कर दिया है, जिसे इसी साल अगस्त में पहली बार पिक्सल फोन में पेश किया गया था। इसके साथ ही आने वाले हफ्तों में कंपनी बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, तेलुगु, तमिल और उर्दू लैंग्वेज का भी सपोर्ट जेमिनी लाइव में एड करेगी।

कल्याण सेवा आश्रम में नवरात्रि के प्रथम दिवस निकली जगत जननी मैया की भव्य शोभा यात्रा

पांच प्रदेश की नृत्य पार्टियां हुई शामिल , ढोल नगाड़ों की धुन पर झूम उठे श्रद्धालुगण

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। अमरकंटक मां नर्मदा जी की उद्गम स्थली पवित्र नगरी अमरकंटक में परमपूज्य तपस्वी बाबा कल्याण दास जी के सानिध्य में कल्याण सेवा आश्रम वर्ष 1984 से निर्मित मंदिर में विराजमान मां भगवती दुर्गा जी की लगातार हर वर्ष नवरात्रि का पवन पर्व मनाते आ रहे है । वर्षों की भांति इस साल भी नवरात्रि के पावन अवसर के प्रथम दिवस मां भगवती दुर्गा जी की प्रतिमा की पूजा अर्चना कर रथ पर विराजित कर खड्ग , चंवर , छत्र के साथ तथा देवी स्वरुपा 108 बच्चियों के माथे कलश लिए ढोल नगाड़ों की ध्वनि के बीच भव्य दिव्य शोभा यात्रा नगर भ्रमण करते हुए माता नर्मदा जी की उद्गम स्थली पहुंची। यहाँ मंदिर के प्रधान पुजारियों से पूजन अर्चन करवाकर नर्मदा उद्गम कुण्ड का नर्मदा जल कलश में लेकर नर्मदा मंदिर दर्शन तथा परिक्रमा करने के बाद वापस नगर भ्रमण करते हुए कल्याण सेवा आश्रम मंदिर पहुंचे । यहाँ काशी (बनारस) से पधारे विद्वान 61 ब्राम्हणों द्वारा कलश स्थापना कर नवरात्रि पूजन प्रारंभ किया गया। दशहरा तक इस महापर्व की धूम देखी जा सकती है ।

काशी (बनारस) से पहुंचे 61 ब्राम्हण

पंडित कमलेश्वर नाथ त्रिपाठी वेदाचार्य ने बतलाया की हम कल्याण सेवा आश्रम में लगभग 25 वर्षो से लगातार अमरकंटक प्रतिवर्ष नवरात्रि में आगमन होता आ रहा है । नव दिवस मां दुर्गा जी की पूजन अर्चन , आवरण , हवन , रात्रि सप्तशती निशा हवन , इत्यादि पूजन होते है जिन्हे साथ आए सभी ब्राम्हणो द्वारा कराया जाता है ।

पांच प्रदेशों की पहुंची धमाल पार्टियां

स्वामी धर्मानंद महाराज ने बताया कि अमरकंटक में पहली बार केरला की चंदा मेलम कला दल का आगमन हुआ। जिसमे 12 कलाकार , ओड़िसा की पूरन मांसी घंट पार्टी मे 75 लोग , उत्तराखंड से सुप्रसिद्ध छोलिया नृत्य 14 की टीम , छत्तीसगढ़ के रायगढ़ से शैला नृत्य 65 लोग , अनूपपुर जिले के क्षेत्रिय बैगा जनजातीय की कर्मा नृत्य जिसमे 40 की टीम, छत्तीसगढ़ पेंड्रा की मधुसूदन धमाल पार्टी और मंडला से एक ही परिवार के साथ आए धमाल ढोल पार्टी नौ दिवसीय रहकर सेवा देते रहेंगे ।

108 कलश कन्याओं द्वारा जल भर कर स्थापना

स्वामी हिमांद्री मुनि जी महाराज ने बताया की पूज्यपाद तपस्वी बाबा जी के मार्गदर्शन व उनके सानिध्य में नवरात्रि पूजन प्रारंभ से पहले 108 कन्याओं द्वारा आश्रम से कलश लेकर यात्रा साथ चलकर नर्मदा जल लेकर आते है तथा प्रथम नर्मदा पूजन उपरांत ही आश्रम मंदिर में नवरात्रि पूजन प्रारंभ की जाती है । प्रत्येक वर्ष कलश यात्रा निकाली जाती है जिसमे विशाल रथ पर मां भगवती मां दुर्गा के साथ 108 कन्याएं कलश के साथ अनेक प्रदेशों से आए नृत्य पार्टियां व साधु संत, भक्तगण , नगरवासी आदि सम्मलित होकर नगर भ्रमण करते हुए मां नर्मदा उद्गम मंदिर जा कर वापस आश्रम पहुंचते है । काशी के विद्वान ब्राह्मणों द्वारा नवरात्रि का पावन पर्व पूजन आराधना के साथ मनाया जाता है और दशहरा के अवसर पर नगर भंडारा भी किया जाता है जिसमे क्षेत्र के बैगा जनजातीय समुदाय के लोग ज्यादा संख्या में परिवार के साथ वर्षो से आश्रम में आते है जिन्हे भंडारा के साथ वस्त्र , दक्षिणा आदि प्रदान कर उनका प्रेम उत्साह मिलता है ।

संस्कृति संरक्षण, अध्यात्म और समाजसेवा में अग्रणी है कल्याण आश्रम

लगभग चार दशक से अमरकंटक का श्री कल्याण सेवा आश्रम परमपूज्य श्री कल्याण बाबा जी के कृपा और समाजसेवी संत हिमाद्री मुनि जी के नेतृत्व में आध्यात्म और संस्कृति संरक्षण की परंपरा को बनाए रख कर समाज सेवा में जुटी हुई है। यह आश्रम यहाँ आने वाले हजारों श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

बाईपास सड़क निर्माण कार्य में लाएं तेजी: कलेक्टर

कलेक्टर ने की बाईपास सड़क निर्माण कार्य के प्रगति की समीक्षा, अधिकारियों को दिए निर्देश

अनूपपुर। कलेक्टर हर्षल पंचोली ने आज कलेक्ट्रेट कक्ष में अनूपपुर में बनाए जा रहे बाईपास सड़क के प्रगति की समीक्षा कर अधिकारियों को सड़क निर्माण कार्य में गंभीरता लाने तथा तेजी से कार्य कराने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने प्रतिदिन कार्य की मॉनिटरिंग करने के निर्देश अनुविभागीय अधिकारी अनूपपुर एवं तहसीलदार को दिए। बैठक में कलेक्टर ने बाईपास निर्माण से संबंधित समस्याओं के संबंध में भी अधिकारियों से चर्चा कर आवश्यक दिशानिर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने अनूपपुर बायपास रोड के प्रारूप (नोटिस) पीडब्ल्यूडी को दिए तथा ठेकेदार से

को अतिशीघ्र वितरित करने के निर्देश अनुविभागीय अधिकारी बेहतर समन्वय स्थापित कर अनुबंध के अनुसार समय में कार्य पूर्ण कराने के भी निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने वृक्षों की कटाई, सड़क की परिसीमन, किसानो की अधिग्रहण भूमि, मार्ग में कार्य की प्रगति सहित और विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए।

बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा, संयुक्त कलेक्टर दिलीप कुमार पांडेय, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनूपपुर दीपशिखा भगत सहित संबंधित विभाग के विभागीय अधिकारी एवं ठेकेदार उपस्थित थे।

कोतमा निगवानी मार्ग के सुधार हेतु मंत्री दिलीप जायसवाल ने कलेक्टर को लिखा पत्र

- मोजर बेयर कंपनी के भारी वाहनों के चलते सड़क हुई खराब

अनूपपुर। जिले के कोतमा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत कोतमा से निगवानी पहुंच मार्ग मोजर बेयर कंपनी के चलने वाले राखड़ के भारी वाहनों के कारण सड़क जगह-जगह टूटकर खराब हो गई है। खराब सड़क पर ग्रामीण क्षेत्र की जनता को आवागमन करने में असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है जिसकी शिकायत लगातार मध्य प्रदेश शासन के कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिलीप जायसवाल के पास ग्रामीण क्षेत्र की जनता द्वारा की जा रही है शिकायत को गंभीरता से लेते हुए मंत्री दिलीप जायसवाल ने अनूपपुर कलेक्टर को 30 सितंबर 2024 को पत्र लिखकर कोतमा निगवानी खराब हुई सड़क का सुधार करने हेतु प्रकलन तैयार कर मोजर बेयर कंपनी से निर्माण कार्य जाने हेतु पत्र प्रेषित किया गया है ,जिससे कि खराब सड़क निर्माण का कार्य समय पर ठीक कराया जा सके और क्षेत्र की जनता को आवागमन करने में सुविधा हो सके।

सोनी सब के सितारों ने नवरात्रि की अपनी परंपराओं और यादों को साझा किया

मुंबई। नवरात्रि का त्यौहार जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, यह पूरे भारत में कई लोगों के लिए खुशी, भक्ति और उत्सव का समय है। देवी दुर्गा की पूजा और बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने के लिए समर्पित यह त्यौहार सभी वर्गों के लोगों के दिलों में एक खास जगह रखता है। इस भावना का जश्न मनाते हुए सोनी सब के कलाकार नवरात्रि मनाने की अपनी प्यारी यादें और निजी अनुभव साझा करते हैं। परिवार के साथ उपवास करने से लेकर गरबा कार्यक्रम में रात भर नाचने तक, ये दिल को छू लेने वाली यादें त्यौहार के महत्व और इन चली आ रही परंपराओं के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाती हैं।

श्रीमद् रामायण में सीता की भूमिका निभाने वाली प्राची बंसल ने कहा, 'नवरात्रि मेरे दिल में एक खास जगह रखती है। मेरी माँ हमेशा पूजा करती हैं और मैं बचपन से ही देवी माँ की समर्पित भक्त रही हूँ। अपनी माँ के साथ उपवास करना और उत्सव में भाग लेना, जैसे छोटी लड़कियों को खाना खिलाना, मेरे लिए यादगार यादें हैं। हालांकि, मैं श्रीमद् रामायण की शूटिंग के कारण इस साल दोस्तों के

साथ गरबा नाइट्स का आनंद नहीं ले पाऊंगी, लेकिन नवरात्रि की सकारात्मक ऊर्जा और देवी मां के प्रति मेरी भक्ति इस त्योहार को वास्तव में अविस्मरणीय बनाती है।'

वागले की दुनिया में वंदना की भूमिका निभाने वाली परीवा प्रणति ने कहा, 'नवरात्रि चारों ओर एक अद्भुत उत्सव का माहौल लेकर आती है, और यह वास्तव में सुंदर है। मेरे लिए त्योहारों का सार सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होना है। मुझे शांत क्षणों में भगवान से जुड़ने में खुशी मिलती है। मेरे माता-पिता के घर पर एक हवन होता है जो शुद्ध करने वाला लगता है, और इस समय के दौरान निहित खुशी कुछ ऐसी है जिसे मैं वास्तव में संजोती हूं।'बादल पे पांव है में पूनम खन्ना की भूमिका निभाने वाली शेफाली राणा ने कहा, 'नवरात्रि आस्था, संस्कृति और समुदाय का एक जीवंत उत्सव है। मुझे अपने घर को फूलों और रंगोली से सजाना, दीये जलाना और पारंपरिक व्यंजन बनाना बहुत पसंद है। नारी शक्ति की अवतार देवी दुर्गा की पूजा करना मुझे खुशी से भर देता है, खासकर जब मैं उनके सम्मान में गरबा और डांडिया में भाग लेती हूं। नवरात्रि केवल उत्सव के बारे में नहीं है; यह दिव्य स्त्रीत्व, महिला सशक्तिकरण और बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने के बारे में है। यह समुदाय के साथ बंधन का समय है और आध्यात्मिक विकास लाता है, जो इसे मेरे लिए वास्तव में एक विशेष त्योहार बनाता है।'

नवरात्री की शुरुआत रामानंद सागर की रामायण के साथ, शेमारू टीवी पर 3 अक्टूबर से शुरू हुआ

मुंबई। अपने दर्शकों की मांग पर इस नवरात्री शेमारू टीवी हिंदुस्तान की सबसे बड़ी धार्मिक गाथा रामानंद सागर की 'रामायण' का प्रसारण करने जा रहा है। इस राम कथा के माध्यम से समय के साथ दर्शकों को जीने का सही सार और ज्ञान मिल सके और दर्शकों के मनोरंजन में किसी प्रकार की बाधाएं न आएं। ऐसे में शेमारू टीवी पर रामानंद सागर द्वारा निर्मित रामायण का प्रसारण किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक पौराणिक धारावाहिक में राम, लक्ष्मण और सीता की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में अरुण गोविल, सुनील लहरी और दीपिका चिखलिया को देखा गया है जो भारतीय टेलीविजन के सबसे प्रतिष्ठित शो में से एक है। इस गाथा ने लोगों को भावनात्मक रूप से न सिर्फ जोड़ा

बल्कि कलाकारों के अभिनय ने उन्हें यह यकीन दिलाया कि साक्षात उन्होंने भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के दर्शन किए हैं। यह धार्मिक गाथा लोगों के बीच इतनी ज्यादा सराहनीय रही है कि दर्शक इसे देखने से पहले आरती की थाली लेकर बैठा करते थे।

भगवान राम की इस रामलीला और महाकाव्य गाथा में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है, जो आज भी सभी स्थितियों, आयु समूहों के लिए, जीवन जीने के सही सार को प्रस्तुत करता है। इस शो के प्रसारण से शेमारू टीवी ने दर्शकों के दिलों में बने रहने और उन्हें प्रेरणा देने का सही उपाय निकाला है। खैर, इन कलाकारों के अभिनय को दिल से चाहने वाले फैन्स के लिए इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या हो सकती है। देखिए हिंदुस्तान कि सबसे बड़ी धार्मिक गाथा, रामानंद सागर की 'रामायण' का प्रसारण, इस 03 अक्टूबर से हर सोमवार से रविवार, रात 8 बजे सिर्फ शेमारू टीवी पर।

उमंग एवं उत्साह के साथ मनी अग्रसेन जयंती, प्रभात फेरी निकाली गई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। श्री श्री 1008 महाराज अग्रसेन जी की 5148वीं जयंती को नगर में समाज बंधुओं द्वारा उमंग एवं उत्साह के साथ मनाया गया। 03 अक्टूबर को अग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में प्रातः 6:00 बजे से अग्रवाल धर्मशाला से प्रभात फेरी का श्रीगणेश किया गया। तहसील चौराहे के पास दीपक कॉस्मेटिक युवा समाजसेवी ने प्रभात फेरी में शामिल समाज बंधुओं का स्वागत कर जलपान भी कराया गया। पुराने थाने के पास प्रभात फेरी के पहुंचने पर माहेश्वरी परिवार द्वारा स्वागत कर चाय, जलपान कराया गया। पांच बीघा में सुशील कुमार-मुरारी लाल एवं विजय कुमार हरीबाबू गुड़ वाले द्वारा भी प्रभात फेरी का स्वागत किया गया। प्रभात फेरी में क्षेत्रीय विधायक पंकज उपाध्याय भी विशेष रूप से साथ-साथ चल रहे थे। प्रभात फेरी के अग्रसेन मंदिर पहुंचने पर महा आरती एवं छप्पन भोग, फूल बंगला के भी कार्यक्रम हुए। यहां पर अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष डॉ. अशोक सिंघल द्वारा अग्रसेन महाराज जी की पूजा आरती भी की गई। दोपहर में 3:00 बजे से अग्रवाल धर्मशाला में अग्रवाल महिलाओं समाजसेवियों द्वारा कीर्तनों का भी आयोजन किया गया। शाम 6:00 बजे से अग्रसेन मंदिर से झांकियां के साथ चल समारोह भी निकल गया, जो नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ रात में वापस अग्रसेन मंदिर पहुंचा। चल समारोह में डोली में विराजमान महाराजा अग्रसेन की जगह-जगह अग्रवाल समाज सहित अन्य समाज सेवियों द्वारा पूजा अर्चना भी की गई। कार्यक्रम में बृजमोहन बंसल, कैलाश मित्तल, कैलाश नारायण गुप्ता, शांतिलाल अग्रवाल, राजेंद्र गुप्ता, अशोक गुप्ता एरोली, डॉ. अरविंद गर्ग, पंकज गुप्ता, दीपक सिंघल अनिल फैशन बाजार, गिर्राज बंसल, रवि गोयल बालाजी साड़ी सेंटर, मुकेश बंसल, गिरिराज बंसल, सतीश आकाश सिंघल, हवाई, रिंकू, महेश गर्ग संचालक आरजू मॉल, अनिल बंसल अनु, रमन बंसल, संदीप अग्रवाल युवा समाजसेवी, राजकिशोर गर्ग, पूरन चंद गोयल, दीपांशु गोयल, एसके अग्रवाल, गिरीश सिंघल, बनवारी लाल सिंघल, निक्की गोयल, श्याम गर्ग, अशोक गर्ग, बनवारी लाल, आनंद प्रकाश गर्ग, राजेश सिंघल, राजू मंत्री, बनवारी लाल बंटी, सुनील कुमार गोयल, लालू पत्रकार, अखिलेश गर्ग, दीपक सोनी, प्रमोद गर्ग, मनीष गर्ग, कालू गर्ग सहित काफी संख्या में अग्रवाल बंधु महिला समय से भी भी उपस्थित रहे।

सहयोग के लिए सभी का आभारः सिंघल

अग्रसेन जयंती चल समारोह सहित प्रभात फेरी एवं अन्य सभी कार्यक्रमों में समाज बंधुओ द्वारा दिए गए सहयोग के लिए अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष डॉ. अशोक सिंघल ने आभार व्यक्त कर सभी समाज बंधुओ को धन्यवाद दिया।

अमिताभ बच्चन ने 'कौन बनेगा करोड़पति 16' में पैरालंपिक गोल्ड मेडल विजेताओं से कहा, 'हम अपने आप को इतना छोटा समझ रहे हैं'

मुंबई। इस शुक्रवार, अमिताभ बच्चन की मेज़बानी में सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न पर 'कौन बनेगा करोड़पति' तीन लाजवाब पैरालंपिक एथलीट्सः नवदीप सिंह, सुमित अंतिल और अवनि लेखरा का स्वागत करेगा। ये एथलीट, जिन्होंने न केवल वैश्विक मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है बल्कि देश को बेहद गौरवान्वित भी किया है, इस स्पेशल एपिसोड में अपने सामने आई चुनौतियों और शानदार जीत की कहानियां साझा करेंगे।

नवदीप सिंह के साथ बातचीत करते हुए, अमिताभ बच्चन ने नवदीप की शुरुआती ज़िंदगी और उनके संघर्षों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कैसे

वह अपने करियर को आगे बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का प्रतिनिधित्व करने में कामयाब रहे। नवदीप ने कॉलेज की एक खास घटना के बारे में बताया, जब उनकी ऊंचाई के कारण उन्हें लाइन में आगे खड़ा कर दिया गया था। उन्होंने खुद पर इस बात का असर नहीं पड़ने दिया, बल्कि वह गर्व से अपनी बात रखते हुए बच्चन स्टाइल में कहते थे, 'जहां हम खड़े होते हैं, लाइन वहीं से शुरू होती है।' उनके इस भाव से प्रभावित होकर एबी ने ज़ोरदार तालियां बजाई और कहा, 'हम सभी आपसे बहुत कुछ सीख रहे हैं। मुझे लगता है कि मैं आपके साथ बैठा रहूं और बातें करता रहूं। आपकी कहानी सुनने से हमें जो प्रेरणा मिली है वह अद्भुत है।'

पैरालंपिक विजेताओं के धैर्य और दृढ़ संकल्प से प्रभावित होकर, दिग्गज अभिनेता ने यह भी कहा, ÷हम अपने आप को इतना छोटा समझ रख रहे हैं; आपने देश का नाम इतना उज्जवल किया। मैं आपको इतनी कम उम्र में ये मेडल जीतने के लिए बधाई देता हूं। हम सभी आपका बहुत सम्मान करते हैं।'

इस शुक्रवार को सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले कौन बनेगा करोड़पति के इस प्रेरक एपिसोड को देखना न भूलें।

संयुक्त कलेक्टर ने किया कन्या विद्यालय का औचक निरीक्षण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। विद्यालयों में शिक्षक शिक्षकों की उपस्थिति पढ़ाई का स्तर छात्र-छात्राओं की उपस्थिति को लेकर कलेक्टर अंकित अस्थाना द्वारा दिए गए निर्देशों के पालन में संयुक्त कलेक्टर द्वारा कन्या गढ़ी विद्यालय का वाचन निरीक्षण किया गया। संयुक्त कलेक्टर शुभम शर्मा 03 अक्टूबर को लगभग 3:00 बजे अचानक शासकीय कन्या गढ़ी विद्यालय निरीक्षण करने आ पहुंचे। निरीक्षण के दौरान संयुक्त कलेक्टर को विद्यालय में सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं को उपस्थित मिले छात्र-छात्राएं भी अपने-अपने कक्षाओं में पढ़ते हुए मिले। दैनिक नंदिनी डायरी पूर्ण नहीं थी। डायरी के अपूर्ण पाए जाने पर प्राचार्य को नोटिस देने की बात भी संयुक्त कलेक्टर ने कही है।

शोभायात्रा के साथ रामकथा प्रारंभ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/पोरसा। श्री नागाजी सरोवर में रामकथा शुरू हुई, जिसकी भव्य शोभा यात्रा श्री नागाजी मंदिर से शुरू हुई, जो सदर बाजार, अम्बाह रोड, तालाब रोड होते हुए श्री नागाजी सरोवर परिसर में पहुंची। शोभा यात्रा में महामंडलेश्वर महंत रामलखन दास महाराज, संत ब्रजकिशोर पागल दास बाबा, सुरभी दास, रामेश्वर राठौर, राजेश श्रीवास्तव, राधेश्याम श्रीवास्तव, हरि शरण तिवारी, कमल सिंह तोमर, विकास तोमर, जगपाल सिंह तोमर, श्रीमती शीला देवी, शकुंतला देवी, मधु श्रीवास्तव, डॉ. श्रवणलाल वर्मा चल रहे थे। प्रथम दिन कथा वाचक पंडित देवेंद्र शास्त्री के द्वारा रामकथा सुनने के महत्व पर प्रकाश डाला गया। शोभायात्रा का जगह-जगह स्वागत हुआ।

54वीं शलाका जनजातीय चित्र प्रदर्शनी प्रारंभ, 30 अक्टूबर तक जारी रहेगी

भोपाल। जनजातीय संग्रहालय द्वारा प्रदेश के जनजातीय चित्रकारों को अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाकर इनकी बिक्री के लिये सार्थक मंच उपलब्ध कराया जा रहा है। हर माह %लिखन्दरा प्रदर्शनी दीर्घा% में किसी एक जनजातीय चित्रकार की प्रदर्शनी सह विक्रय का आयोजन किया जाता है। 'शलाका' के नाम से आयोजित इस चित्र प्रदर्शन मंच में गुरूवार (3 अक्टूबर) से गोण्ड समुदाय की जानी-मानी चित्रकार सुश्री संतोषी श्याम के चित्रों की प्रदर्शनी सह-विक्रय का आयोजित की गई। 54वीं शलाका चित्र प्रदर्शनी आगामी 30 अक्टूबर (मंगलवार से रविवार) तक जारी रहेगी।

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के समापन पर नपा पोरसा ने किया सफाई मित्रों का सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/पोरसा। नगर पालिका पोरसा द्वारा स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के समापन कार्यक्रम में आज श्रमदान एवं सफाई मित्रों का सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वच्छता पखवाड़े के समापन पर पोरसा द्वारा नागाजी सरोबर पर श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती कुशमा देवी एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी अवधेश सिंह सेंगर द्वारा नागाजी सरोबर पर श्रमदान किया गया। उसके बाद सभी सफाई मित्रों का सम्मान समारोह नगर पालिका के पास आयोजित किया गया, जिसमें सभी सफाई मित्रों का श्रीफल और शॉल देकर सम्मान किया गया और स्वच्छता के प्रति उनके द्वारा किये जा रहे कार्य की सराहना की गई।

इस कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमति कुशमा देवी, मुख्य नगर पालिका अधिकारी अबधेश सिंह सेंगर, नगर पालिका उपाध्यक्ष प्रतिनिधि, अमन तोमर, सभी पार्षदगण, सभी सफाई मित्र आदि उपस्थित रहे।

कन्या रत्न प्राप्ति पर बैंडबाजों व आतिशबाजी से किया गया स्वागत, गांव में बांटी मिठाई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/पोरसा। अक्सर लोग कन्या के जन्म पर उत्सव व खुशी नहीं मनाते, पर पोरसा से 15 किलोमीटर दूर ग्राम कुरैठा में ग्याप्रसाद गोटे उपाध्याय के परिवार में कन्या का जन्म हुआ, जिसका बैंडबाजों के साथ स्वागत कर गांव में मिठाई बांटकर उत्सव मनाया गया। गत दिन पूर्व श्रीमती आशकी उर्फ निक्की अजय उपाध्याय को कन्या रत्न प्राप्ति हुई। कन्या अस्पताल से जब घर के लिए आई तब कन्या के दादा-दादी श्रीमती मनीषा ग्याप्रसाद उपाध्याय एवं बड़ी दादी छोटी बिटिया उपाध्याय ने बच्ची के जन्म पर खुशी का इज़हार कर घर पर शुभ आगमन के अवसर पर घर को सजाया गया एवं बैंडबाजों व आतिशबाजी चलाकर खुशी का इज़हार कर गांव में मिठाई वितरण की गई। बैंड बाजे ताऊ-ताई श्रीमती सपना-धर्मेंद्र उपाध्याय पूर्व जिला उपाध्यक्ष भारतीय जनता युवा मोर्चा एवं बुआ-फूफा श्रीमती राखी-गौरव दंडोतिया के द्वारा बैंड

बाजों के साथ नृत्य करते हुए पूरे गांव में खुशी का इज़हार किया गया एवं कन्या के जन्म पर भाई अनमोल उपाध्याय व यूवी उपाध्याय के द्वारा कन्या को पुष्प हार पहनाया गया। इस खुशी के माहौल में समूचा गांव शामिल हुआ।

देवाराः पार्ट 1 ने अमेरिकी बॉक्स ऑफिस पर फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की मेगालोपोलिस को पछाड़ दिया

मुंबई। देवराः पार्ट 1 ने न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा दिया है। मैन ऑफ मासेस एनटीआर जूनियर अभिनेता इस फिल्म ने उत्तरी अमेरिका में जबरदस्त प्री-सेल्स की कमाई की, जो इसकी रिलीज को लेकर जबरदस्त चर्चा का संकेत है। अब, देवराः पार्ट 1 ने यूएस बॉक्स ऑफिस पर फ्रांसिस फोर्ड कोपोला की महत्वाकांक्षी मेगालोपोलिस को पीछे छोड़कर अपनी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ ली है। यह फिल्म कोपोला की हॉलीवुड ब्लॉकबस्टर से टकराई और कॉमस्कोर के अनुसार, मेगालोपोलिस को मिली-जुली समीक्षाएं मिलीं, जिसने उत्तरी अमेरिका में अपने शुरुआती सप्ताहांत में केवल 4 मिलियन डॉलर की कमाई की। इसके विपरीत, देवराः पार्ट 1 ने उसी अवधि में उसी क्षेत्र में प्रभावशाली 5.1 मिलियन डॉलर कमाए। एनटीआर जूनियर, जिन्हें 'मैन ऑफ मास' के नाम से जाना जाता है, के इर्द-गिर्द ग्लोबल क्रेज बढ़ता जा रहा है, और फिल्म की गति धीमी होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है। बॉक्स ऑफिस की सफलता केवल अमेरिका तक ही सीमित नहीं है; देवरा यूके और ऑस्ट्रेलिया में भी रिकॉर्ड तोड़ रही है, जहाँ इसे दर्शकों ने गर्मजोशी से प्राप्त किया है। युवसुधा आर्ट्स और एनटीआर आर्ट्स द्वारा निर्मित और नंदमुरी कल्याण राम द्वारा प्रस्तुत देवरा में एनटीआर जूनियर के साथ जान्हवी कपूर और सैफ अली खान प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

घट स्थापना के साथ आश्विन नवरात्रि महोत्सव प्रारंभ

भव्य शोभायात्रा के बाद पाण्डालों में विराजीं दुर्गा प्रतिमाएं

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। शारदीय नवरात्र गुरुवार से शुरू हो गए। घट स्थापना के साथ मां दुर्गा की भक्ति-साधना शुरू हो गई है। मातारानी की प्रतिमाओं की भक्त मण्डलों ने बैण्ड-बाजों के साथ शोभायात्रा निकाली। जिसके बाद प्रतिमाओं को पाण्डालों में स्थापित किया गया।

नवरात्र शुरू होते ही शहर भक्तिमय हो गया है। नवरात्र के प्रथम दिन लोगों ने स्नानादि से निवृत्त होकर घट स्थापना की, धूप-दीप और नैवेद्य से मैय्या की पूजा-अर्चना की और दुर्गा सप्तशती, दुर्गा चालीसा, दुर्गा मंत्रों का पाठ किया। शहर के देवी मंदिरों पर मातारानी पर जल चढ़ाने के लिए सुबह पांच बजे से ही श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। गुरुवार को सुबह से ही भक्तों ने देवी प्रतिमाओं को ट्रैक्टर-ट्रालियों में रखकर शोभायात्रा निकाली। जिसके बाद सजाए गए पाण्डालों में विधि-विधान के साथ प्रतिमाओं की स्थापना की गई। नवरात्र के प्रथम दिन अंचल के प्राचीन देवी मंदिर जिनमें बहरारा माता मंदिर, बसैया माता मंदिर, बड़ोखर माता मंदिर हरिसिद्धी मंदिर कुतवार में बड़ी संख्या में भक्त मातारानी के दर्शन करने के लिए पहुंचे।

महामाया मंदिर पर प्रारंभ हुआ नवदुर्गा महोत्सव

महामाया मंदिर पर शारदीय नवरात्रि महोत्सव गुरूवार से प्रारंभ हुआ। महोत्सव के प्रथम दिन माँ शैलपुत्री की झाँकी लगाई गई। यहां पर प्रातः से ही भक्तिगण आना प्रारंभ हो गए, जिन्होंने माता की पूजा अर्चना की। 10 अक्टूबर को मंदिर पर महाअष्टमी मनायेगी जायेगी। यहां पर रात्रि 11 बजे से पं. बनवारी लाल शर्मा द्वारा हवन कराया जाएगा। उक्ताशय की जानकारी देते हुए प्रबंध समिति के अध्यक्ष सुरेश सिंह राजपूत ने सभी भक्तों से माता के दरबार में उपस्थित रहने की अपील की है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। दिमनी थाना क्षेत्र के अंतर्गत मिरघान चौकी के पास किसी अज्ञात वाहन के चालक ने बाइक सवार अधेड़ व्यक्ति को टक्कर मार दी। जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

मिली जानकारी के मुताबिक पोरसा क्षेत्र के ग्राम गढ़िया निवासी रमेश सिंह तोमर 59 पुत्र जयराम सिंह तोमर गुरुवार को किसी व्यक्ति को मुरैना छोड़ने के लिए बाइक लेकर आए थे। उसे मुरैना छोड़ने के बाद रमेश तोमर बाइक पर सवार होकर गांव लौट रहे थे। इसी दौरान जब वे दिमनी थाना क्षेत्र अंतर्गत सिहौनिया के रास्ते पोरसा जा रहे थे, तभी मिरघान चौकी के पास अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। लहूलुहान अवस्था में रमेश को जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर विवेचना शुरू कर दी है।

नागाजी गौशाला का ब्लॉक वैटनरी अधिकारी ने किया निरीक्षण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। कलेक्टर अंकित अस्थाना ने निर्देश पर ब्लॉक वैटनरी अधिकारी पोरसा बिलकेश शर्मा और गौशाला के मैनेजर धर्मवीर सिंह तोमर ने नागाजी समिति की अशासकीय गौशाला पोरसा का आकस्मिक निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान पाया गया कि इस गौशाला में दो अलग-अलग जगह कुल 135 गौवंश विकलांग, निराश्रित, वृद्ध, बिना दूध देने वाले गौवंश है। निरीक्षण के उपरांत पोरसा जनपद सीईओ श्री देवेन्द्र जैन को अवगत कराया कि विगत दिवस जिला गौसंवर्धन बोर्ड की बैठक कलेक्टर की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। बैठक में कलेक्टर ने निर्देश दिये थे कि शासकीय गौशालाओं की सभी कमियां जैसे गौवंश के लिये पेयजल, गौशाला में बिजली कनेक्शन, पहुंच मार्ग आदि व्यवस्थायें ग्राम पंचायत तथा जनपद पंचायत से ही की जाये। आवारा गौवंश को पकड़कर ग्राम पंचायत, नगर पालिकाओं की तरफ से खाली पड़ी गौशालाओं में भिजवायें जाने के निर्देश कलेक्टर ने दिये थे। इस गौशाला संचालन के लिये ग्राम पंचायत, एनआरएलएम के महिला एसएचजी के साथ अनुबंध करायें। अनुबंध की एक प्रति पशुपालन विभाग के पास भेजें। जिससे रजिस्ट्रेशन के लिये प्रस्ताव गौसंवर्धन बोर्ड भोपाल को भेजा जा सके।

अधिकारियों ने शासकीय गौशाला धनेला का किया निरीक्षण

कलेक्टर के निर्देश पर बैटनरी विभाग के प्रभारी उप संचालक आरएम स्वामी ने करह धाम गौशाला के सचिव बिसम्भर दयाल गुप्ता ने धनेला गौशाला औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण में पशु एम्बूलेंस, पशु परिवहन आदि के संबंध में खराब पड़ी वाहन को तत्काल ठीक कराने, निगम को लिखा गया है। वहीं निराश्रित गौवंश को देवरी एवं अन्य शासकीय गौशालाओं में उपलब्ध जगह के अनुसार शिफ्ट कराया जाना है। मुरैना शहर के 50 नंदी करह धाम गौशाला में रखा जाना है। इसके लिये उन्होंने निरीक्षण किया। एनआरएलएम के एचएसजी धनेला समूह की श्रीमती वर्षा सेधनेला गौशाला का संचालन कराया जायेगा।

जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन वन स्टॉप सेंटर में किया गया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। यदि मैं पुरुषों में महिलाओं के समान शुद्ध और पूर्ण समर्पण का भाव उत्प्रेरित कर सका तो एक वर्ष में ही भारत अकल्पनीय ऊंचाई पर पहुंच सकता है। महिला स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण पर महात्मा गांधी जी के ये विचार भारत के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान देते हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से 02 अक्टूबर से 11 अक्टूबर 2024 तक शक्ति अभिनंदन अभियान अंतर्गत 2 अक्टूबर को प्रदेश में महिला एवं बालिका सम्मान के लिये सामाजिक जागरूकता की पहल के तहत महात्मा गांधी जी की जयंती के अवसर पर जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन वन स्टॉप सेंटर मुरैना में किया गया।

महिलाओं के सशक्तिकरण एवं नारी उत्थान पर महात्मा गांधी जी के समाज में योगदान के लिये अधिकारियों, कर्मचारियों एवं गणमान्य नागरिकों के मध्य जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन कर विचार विमर्श किया गया। इस संगोष्ठी में परियोजना अधिकारी निशा शंखवार ने 02 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक होने वाले समस्त कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। महात्मा गांधी का योगदान नारी उत्थान एवं नारी सशक्तिकरण में किस प्रकार रहा है एवं देश को नारी सशक्तिकरण के माध्यम से ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए किस प्रकार से शक्ति अभिनंदन अभियान को जागरूकता के रूप में लोगों तक पहुंचाया जाना है, इसके बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर परियोजना अधिकारी जौरा आरती राजपूत, पर्यवेक्षक रश्मि शर्मा, ममता गुप्ता, सुशीला यादव, मधुबाला गोयल, शशि शर्मा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

गौशाला में रात्रि को पशु चिकित्सक की ड्यूटी लगाये जाने की मांग को लेकर दिया ज्ञापन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। गौ संसद के पदाधिकारियों द्वारा गत दिवस विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर को एक ज्ञापन दिया गया। सौंपे गए ज्ञापन में गौशाला में रात्रि के समय पशु चिकित्सक की ड्यूटी लगाने तथा पॉलीथिन पर रोक लगाने की मांग की गई। सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि कुछ लोगों द्वारा करंट लगाकर गौ वंश को मारा जा रहा है। लेकिन कार्यवाही का अभाव बना हुआ है। हमारी मांग है कि रात्रि के समय जिला पशु चिकित्सालय में पशु चिकित्सक की ड्यूटी लगाई जाए, पॉलीथिन पर रोक लगाई जाए, देवरी गौशाला में रात्रि के समय पशु चिकित्सक की ड्यूटी लगाई जाए, पशु चिकित्सालय में दिन के समय जो चिकित्सक नहीं आते हैं उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाए, नगर के किसी भी चौराहे पर गाय की प्रतिमा लगाई जाए और उसे गौ माता चौक का नाम दिया जाए। छोटे जानवरों के लिए शेल्टर बनाया जाए, खुले पड़े कुंओं को बंद कराया जाए। ज्ञापन देने वालों में रुद्रप्रताप सिंह, मोहित, संतोष, राहुल राठौर आदि शामिल हैं।

मेरे मरने के बाद मृत्युभोज किया तो आत्मा दुःखी होगीः नारायण सिंह दद्दू

100वें वर्ष में प्रवेश करने पर क्षत्रिय समाज बंधुओं ने किया सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। समाज सुधार समिति के अध्यक्ष रहकर लम्बे समय तक सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए मृत्युभोज, नशाखोरी, शराबबंदी के खिलाफ जन जागरुकता पैदा करने के लिए काम करने वाले नारायण सिंह सिकरवार दद्दू का क्षत्रिय समाज के समाजसेवियों ने 100वां जन्मदिन मनाया। 02 अक्टूबर को पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित निवास पर उनका जन्मदिन बड़े ही उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर क्षत्रिय समाज के प्रमुख पदाधिकारियों एवं समाज सुधार समिति के सदस्यों ने उनका सम्मान भी किया।

इस अवसर पर बोलते हुए नारायण सिंह दद्दू ने कहा कि मेरा सबसे हाथ जोड़कर निवेदन है कि मृत्युभोज को पूरी तरह से बंद किया जाए। यह सामाजिक बुराई है। इसके खिलाफ लम्बे समय से काम चल रहा है और आने वाले दिनों में भी इसी तरह से काम चलेगा। उन्होंने उपस्थित सभी परिवारीजन व समाज के लोगों से अपील करते हुए कहा कि मेरे करने के बाद मृत्युभोज बिल्कुल नहीं होगा। यदि ऐसा हुआ तो मेरी आत्मा दुःखी होगी। उन्होंने कहा कि न ही गरुड़ पुराण पढ़ा जायेगा। सिर्फ कन्या, ब्राह्मण की परंपरा शुरू करनी चाहिए और यदि किसी को अधिक लोगों को भोजन कराना है तो वह कुछ समय बाद रामायण पाठ जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से धार्मिक स्थलों पर भण्डारा कर सकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से गांव-गांव जाकर लोगों के बीच में जिस तरह से मृत्युभोज पर पाबंदी लगाने के लिए काम किया गया है इसमें अभी और ज्यादा काम करने की ज़रूरत है। सामाजिक बुराईयों से लडने के लिए समाज के प्रबुद्ध लोगों को आगे आना ही पड़ेगा, तभी हम इन बुराईयों से लड़कर जीत सकते हैं। इस अवसर पर क्षत्रिय महासभा के प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष गजेन्द्र सिंह राठौड़, सोबरन सिंह सिकरवार गुर्जा, कदम सिंह तोमर कक्का, गंगा सिंह तोमर, दरबार सिंह सिकरवार, केदार सिंह, शम्भू सिंह, मप्र शिक्षक संघ के संभागीय अध्यक्ष डॉ. नरेश सिंह सिकरवार, रामबल सिंह सहित समाज के अन्य प्रमुख पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि निश्चित रूप से दद्दू ने जिस उम्र के पड़ाव पर आकर सामाजिक क्षेत्र में कार्य किया है वह सराहनीय है।

इस अवसर पर शॉल, श्रीफल से उनका सम्मान करते हुए फूल मालाओं से स्वागत किया गया। इस अवसर पर पं. जगदीश प्रसाद शर्मा, जिलाध्यक्ष रामनिवास सिकरवार नहरावली, बदन सिंह सिकरवार, शम्भू सिंह सिकरवार, ओमवीर सिंह, कलियान सिंह तोमर, गजेन्द्र सिंह परमार, रामअवतार सिंह, शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष पवन परिहार, रघुराज परमार, रामबाबू सिंह, रामनिवास सिंह फौजी, विनोद कुशवाह, उम्मेद सिंह, हवलदार सिंह, कप्तान सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

मनोविकारों को जीतना ही नवरात्रि मनाना है: कृष्णा दीदी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सुख शांति भवन सब्जी मंडी रोड पोरसा में नवरात्रि का उत्सव धूमधाम से मनाया गया, जिसमें सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी ने सभी को नवरात्रि पर्व की बधाई देते हुए कहा कि भारत में परंपरागत तरीके से नवरात्रि मनाई जाती है, जिसमें माँ दुर्गा के नौ रूपों की नौ दिनों तक पूजा-अर्चना की जाती है। नवरात्रि का आध्यात्मिक अर्थ है नए युग में प्रवेश करने से ठीक पहले की ऐसी घोर अंधियारी रात जिसमें शिव अवतरण लेकर मनुष्य आत्मा के पतित अवचेतन मन का ज्ञान अमृत द्वारा उद्धार कर देते हैं और ऐसी तरित आत्माएं फिर चैतन्य देवियों के रूप में प्रत्यक्ष होकर कलयुगी मनुष्य का उद्धार करते हैं। इस प्रकार पहले शिवरात्रि होती है फिर नवरात्रि और फिर नवयुग (दीपावली) आता है। महाविनाश से यह वसुंधरा जलमग्न होकर कल्पांत में अद्भुत स्नान करती है, फिर स्वच्छ होकर नौ लाख देवी- देवताओं के रूप में नौलखा हार धारण करती है।

नवरात्रि का पहला दिन मां दुर्गा देवी के रूप में मनाया जाता है वह 'शैलपुत्री' के नाम से पूजी जाती हैं। बताया जाता है कि यह पर्वत राज हिमालय की पुत्री थी इसलिए पर्वत की पुत्री 'पार्वती या शैलपुत्री' बनीं, दुर्गा को शिव शक्ति कहा जाता है। हाथ में माला अर्थात् परमात्मा की याद का प्रतीक है जब परमात्मा को याद करेंगे तो जीवन में सामना करने की, निर्णय करने की, सहन करने की, समाने की, परखने की, सहयोग करने की इत्यादि शक्तियां प्राप्त होती है इसलिए दुर्गा को अष्टभुजा दिखाते हैं। हाथ में बाण दिखाते हैं अर्थात ज्ञान रुपी बाण मुख द्वारा चलाकर विकारों का संहार किया। जब कलयुग का अर्थात पतित दुनिया का अंत होता है तब सभी आत्माएं आसुरी अवगुणों से पीड़ित अज्ञान निद्रा में सोई हुई शक्ति से हीन होती हैं। कार्यक्रम में माता की झांकी लगायी गई और माता को भोग स्वीकार कराया गया। और प्रसाद वितरण किया। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी निकेता दीदी, ब्रह्माकुमारी प्रियंका दीदी, ब्रह्माकुमार नीतेश भाई, कुमारी तपस्या, रजनी गुप्ता, नीलम बहन मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

गढ़ी धमकन की ग्राम सभा में दी गई एच.आई.वी. एड्स की जानकारी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। महात्मा गांधी जी की जयंती के अवसर पर 02 अक्टूबर को ग्राम पंचायत घड़ी धमकन में आयोजित की गई। ग्राम सभा में उपस्थित लोगों को आईसीटीसी परामर्शदाता संदीप सेंगर एवं एएनएम श्रीमती प्रीति गौड़ द्वारा एचआईवी एड्स के प्रति जागरूक किया गया। ग्राम सभा में ग्राम के सचिव प्रकाश चंद्र शर्मा, सहायक सचिव श्री अरुण कुमार शर्मा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शशि शर्मा,रेखा जादौन, सरोज कुशवाह, रेखा शाक्य, आशा कार्यकर्ता रजनी कुशवाह, रुखसाना बानो सहित ग्राम सभा के पदाधिकारी एवं सदस्य मौजूद थे।

संदीप सेंगर द्वारा आईसीटीसी एवं सघन जागरूकता अभियान की जानकारी देते हुए एचआईवी एड्स के प्रति जागरूक करते हुए एचआईवी संक्रमण के चार कारणों पर विस्तार से चर्चा की गई। एचआईवी जांच के फायदे समझाते हुए ग्राम के सभी लोगों को एचआईवी एड्स के प्रति जागरूक करने, जांच कराने हेतु प्रेरित करने की बात कही।

सफाई मित्रों को शील्ड और स्वच्छता सहभागिता प्रमाण पत्र वितरित किये

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। स्वच्छता ही सेवा आयोजन अंतर्गत नगर पालिका परिषद अम्बाह कार्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाइव प्रसारण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान निकाय के कर्मचारीगण एवं स्वच्छता सफाई मित्रों का शील्ड और स्वच्छता सहभागिता प्रमाण पत्र वितरण किये गए, साथ ही पीएचई कैंपस सहित आस पास जगहों पर श्रमदान कार्य किया गया। जिसमें मुख्य नगर पालिका अधिकारी शारिब कौशर, स्वच्छता ब्रांड एंबेसडर सुधीर आचार्य, जनप्रतिनिधि सत्यवीर कपासिया, कविंद्र तोमर, मोनू तोमर,अवधेश राठौर, एवं कर्मचारीगण जावेद खान, रवि शर्मा, रामनरेश दरोगा, रोहित सिंह,मुंशी सिंह, दानिश बेग, महावीर सिंह, सुमित राठौर, विधाराम, विशाल छरी, दीपक लक्षाकार, शिवा शर्मा, निसरत खान, नीलिमा श्रीवास्तव, दीपक शर्मा, आदि लोग उपस्थित रहे।

मोटराइज ट्राईसाइकिल के लिये चिन्हांकन शिविर का आयोजन आज

मुरैना। सामाजिक न्याय विभाग मुरैना के सहयोग से दिव्यांगजनों को मोटराइज ट्राईसाइकिल के लिये चिन्हांकन शिविर का आयोजन जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र मुरैना वीआईपी रोड संजय कॉलोनी मुरैना में शुक्रवार को किया जायेगा। जिसमें 80 प्रतिशत दिव्यांगता वाले दिव्यांग अपना परीक्षण करवा कर इस शिविर का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें।

भव्य रैली के साथ हुआ माय भारत स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का समापन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय माय भारत नेहरू युवा केन्द्र मुरैना द्वारा 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2024 तक चलाए जा रहे स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का समापन गांधी जयंती पर अम्बाह थाना परिसर में हुआ। इस अवसर पर नगर में स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता थीम पर आधारित जन जागरुकता रैली निकाली गई। कार्यक्रम की शुरुआत एमएलडी स्कूल में महात्मा गांधी के छायाचित्र पर माल्यार्पण से हुई। तत्पश्चात नगर में भव्य रैली निकाली गई।

रैली के दौरान युवा माय भारत लिखी हुई टी-शर्ट और टोपी पहने हुए तथा हाथों में बैनर थामे और स्वच्छता संबंधी नारे लगाते हुए चल रहे थे। एमएलडी स्कूल से शुरू हुई रैली को पूर्व प्राचार्य श्री हरदत्त शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जो नगर के प्रमुख बाजारों से गुजरते हुए पचासा ग्राउंड पर पहुंच कर सम्पन्न हुई। जहां युवाओं ने थाना परिसर एवं पचासा ग्राउंड की साफ-सफाई की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि टीआई सतेन्द्र सिंह कुशवाह थे। उन्होंने इस अवसर पर युवाओं से स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाने को कहा।एसआई रितु भदौरिया ने स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की चर्चा करते हुए महिला सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। नेहरू युवा केन्द्र के कार्यक्रम पर्यवेक्षक दिलीप सुमन ने माय भारत पोर्टल विभाग की जानकारी देते हुए पोर्टल पर पंजीकरण कराने को कहा।

कार्यक्रम के दौरान युवाओं ने जन जागरुकता के लिए वृताकार मानव श्रृंखला बनाकर स्वच्छता का संकल्प लिया। रैली में शामिल हुए सभी युवाओं को पुरस्कार स्वरूप माय भारत डायरी और पैन प्रदान किए गए। कार्यक्रम में विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी श्रीनिवास गुर्जर, सहायक प्राध्यापिका श्रीमती सुमिता चौहान, रासेयो अधिकारी विजय शर्मा, हरिओम शर्मा, समाजसेवी राजकुमार तोमर, रामसेवक शर्मा और अम्बाह विकास खण्ड के विभिन्न युवा मण्डल, महिला मण्डलों के पदाधिकारी मौजूद थे।

मलेरिया की जांच एवं दवाईयां सभी शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं पर निःशुल्क उपलब्ध

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। बदलते मौसम के कारण मच्छरजनित बीमारियों का खतरा बना रहता है। मच्छरजनित बीमारियों में मलेरिया सबसे प्रचलित बीमारी है। यह बीमारी मादा एनाफिलीज़ मच्छर के काटने से होती है। ठंड लगकर बुखार आना मलेरिया का प्रमुख लक्षण हैं। मलेरिया की जांच एवं दवाईयां सभी शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में निःशुल्क प्रदान की जाती है। साथ ही आशा कार्यकर्ताओं से संपर्क कर भी जांच करवाई जा सकती है।

सिविल सर्जन डॉ. गजेन्द्र सिंह तोमर ने बताया कि मलेरिया के इलाज के लिए प्रमाणिक एवं सुरक्षित दवाएं उपलब्ध हैं। मच्छरों से होने वाली बीमारी डेंगू की पहचान सही समय पर न किये जाने पर घातक रूप ले सकती है। यह बीमारी एडीज मच्छर के काटने से फेलती है। जब कोई एडीज मच्छर डेंगू के किसी रोगी को काटता है तो वह उस रोगी का खून चूसता है। खून के साथ डेंगू वायरस भी मच्छर के शरीर में प्रवेश कर जाता है। मच्छर के शरीर में डेंगू वायरस का कुछ और दिनों तक विकास होता है। जब डेंगू वायरस युक्त मच्छर किसी अन्य स्वस्थ व्यक्ति को काटता है तो वह डेंगू वायरस को उस व्यक्ति के शरीर में पहुँचा देता है। इस प्रकार वह व्यक्ति डेंगू वायरस से संक्रमित हो जाता है तथा कुछ दिनों के बाद उसमें डेंगू बुखार रोग के लक्षण प्रकट हो सकते हैं। जिस दिन डेंगू वायरस से संक्रमित कोई मच्छर किसी व्यक्ति को काटता है तो उसके लगभग 3-5 दिनों बाद ऐसे व्यक्ति में डेंगू बुखार के लक्षण प्रकट हो सकते हैं। यह संक्रामक काल 3-10 दिनों तक भी हो सकता है।

सिविल सर्जन डॉ. गजेन्द्र सिंह तोमर ने बताया कि बदलते मौसम के कारण कई बीमारियों के लिए खतरा बनता है, जिनमें मच्छरों से होने वाली बीमारियां प्रमुख हैं। बारिश के मौसम में पानी के जमा होने एवं गंदगी होने के कारण मच्छरों का पनपना आसान होता है। मच्छरों के काटने से डेंगू, मलेरिया, चिकिनगुनिया जैसी बीमारियां होती हैं जो कि कई बार गंभीर भी हो सकती हैं। जिसके अंतर्गत डेंगू, चिकिनगुनिया, मलेरिया जैसी संक्रमण बीमारियों से बचाव के उपाय बताए जाएंगे। डेंगू बुखार के लक्षण डेंगू बुखार के प्रकार परनिर्भर करता है। किस प्रकार का है। डेंगू बुखार तीन प्रकार के होते हैं। साधारण डेंगू बुखार, डेंगू हेनरेजिक बुखार, डेंगू शॉक सिन्ड्रोम, यदि डेंगू हेमरेजिक बुखार, डेंगू शॉक सिन्ड्रोम का तुरन्त उपचार शुरू नहीं किया जाता है तो वे जानलेवा सिद्ध हो सकते हैं। चिकिनगुनिया भी एडिज मच्छर से होने वाली बीमारी है। मच्छर को पनपने से रोकना एवं मच्छरों से स्वयं को बचाना इन बीमारियों से बचने का सबसे आसान उपाय है। पानी के भराव को रोकना, आसपास के परिवेश में स्वच्छता का निर्माण, मच्छरदानी का उपयोग आदि बेहद सरल उपाय हैं, जो कि मच्छरों से एवं उनसे होने वाली बीमारियों से बचाव कर सकता है।

कार्यालय नगरपालिक निगम, मुरैना (म.प्र.)
Office of the Municipal Corporation, Morena (M.P.)

Address - Town Hall Parishar Jiwaji Ganj Morena (M.P.)- 476001
Email :- commmorena@mpurban.gov.in
Phone No. : 07532-226020

क्रमांक/वि.पं./2024/4617 मुरैना, दिनांक - 03/10/2024

इश्तहार सूचना

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि आवेदक (वर) हिमांशु अग्रवाल पुत्र श्री सुरेन्द्र अग्रवाल निवासी- दर्जी गली श्रीराम कॉलोनी दतपुरा मुरैना द्वारा विवाह पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। वधु पूजा गर्ग पुत्री पवन कुमार गर्ग निवासी- शास्त्री नगर सेक्टर नं.2 धौलपुर का विवाह दिनांक 08.12.2022 स्थान- संजय पैलेस माधौपुरा की पुलियर बेयर हाउस रोड मुरैना पर हिन्दू रीति-रिवाज से सम्पन्न विवाह के आधार पर इस निगम में नियमानुसार विवाह का पंजीयन किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त संबंध में अगर किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह 07 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति निगम कार्यालय में प्रस्तुत कर सकता है। नियत अवधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति मान्य नहीं होगी, और प्रस्तुत आवेदन के आधार पर विवाह पंजीयन कर दिया जावेगा।

रजिस्ट्रार
विवाह पंजीयन
नगरपालिक निगम, मुरैना

बस्तियों के विकास के लिए धन की कमी नहीं आने दी जायेगी: मंत्री कुशवाह

ग्वालियर । लश्कर सहित ग्वालियर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र की सभी बस्तियों के सर्वांगीर्ण विकास में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जायेगी। इन बस्तियों में बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के लिए सरकार धन की कमी नहीं आने देगी। यह बात सामाजिक न्याय, दिव्यांगजन कल्याण, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्क्रण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने कही। श्री कुशवाह गुरुवार को लश्कर क्षेत्र में स्थित वार्ड क्रमांक-38 की बस्तियों में विकास कार्यों का

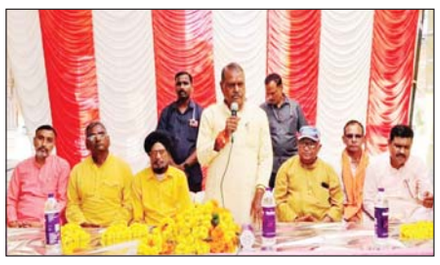

भूमिपूजन करने पहुँचे थे।मंत्री श्री कुशवाह ने वार्ड-38 के अंतर्गत बेलदारपुरा में पटेल हाउस के समीप लगभग 70 लाख रूपए की लागत से डलने जा रही नवीन सीवर लाइन का भूमिपूजन किया। उन्होंने इस अवसर पर मौजूद क्षेत्रवासियों को भरोसा दिलाया कि यह काम जल्द से जल्द पूर्ण कराया जायेगा। इससे यहाँ की बस्ती की सीवर समस्या का स्थायी समाधान हो जायेगा। इस अवसर पर भगवान सिंह कुशवाह, कार्यपालन यंत्री संजीव कुमार गुप्ता व सहायक यंत्री के.सी. अग्रवाल सहित अधिकारीगण तथा स्थानीय बस्ती के नागरिकगण मौजूद थे।

अतिवर्षा से प्रभावित परिवारों को आवास के लिये विशेष पैकेज दिलाया जायेगा: सिलावट

- प्रभारी मंत्री ने की राहत वितरण कार्य की समीक्षा

ग्वालियर । अतिवर्षा एवं जल भराव से जिले के ऐसे परिवार जिनके कच्चे-पक्के मकान पूर्णतरू क्षतिग्रस्त हो गए हैं और प्रधानमंत्री आवास योजना की सूची में उनका नाम नहीं है, उन्हें आवास बनाने के लिये स्पेशल पैकेज दिलाया जायेगा। यह बात जिले के प्रभारी एवं जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने जिले के अतिवर्षा से प्रभावित परिवारों के राहत वितरण कार्य की समीक्षा के लिए बुलाई गई बैठक में कही। उन्होंने अतिवर्षा से प्रभावित परिवारों तक जल्द से जल्द मदद व तत्परता से राहत राशि पहुँचाने के लिये प्रभारी मंत्री सिलावट ने जिला प्रशासन की पूरी टीम की सराहना की। खाद-बीज वितरण व्यवस्था, वर्षा से क्षतिग्रस्त सड़कों व विद्युत लाइनों की मरम्मत, बीमारियों की रोकथाम, यातायात व्यवस्था, खाद्य पदार्थों में मिलावट पर रोक, नवदुर्गा महोत्सव सहित अन्य त्यौहारों के दौरान कानून व्यवस्था इत्यादि विषयों की भी समीक्षा की गई।

बैठक में जानकारी दी गई कि जिले में कुल 1342 परिवारों के कच्चे-पक्के मकान पूर्णतरू क्षतिग्रस्त हुए थे। इनमें से 163 परिवारों के नाम प्रधानमंत्री आवास योजना की प्रतीक्षा सूची में शामिल हैं। शेष 1179 परिवारों की सूची बनाकर विशेष पैकेज का प्रस्ताव शासन को भेजा गया है। साथ ही पीएम आवास योजना की प्रतीक्षा सूची में शामिल 163 परिवारों को प्राथमिकता देकर आवास मंजूर करने की अनुमति भी शासन से मांगी गई है। बैठक में बताया गया कि अतिवर्षा एवं जल भराव से जिले में 12 हजार 575 परिवार प्रभावित हुए थे। इनके लिये राज्य शासन के राजस्व पुस्तक परिपत्र के प्रावधानों के तहत लगभग 6 करोड़ 71 लाख 85 हजार रूपए की राहत राशि मंजूर की गई थी। इसमें से 12 हजार 364 परिवारों के बैंक खातों में लगभग 6 करोड़ 55 लाख 63 हजार रूपए की आर्थिक सहायता पहुँच चुकी है। बैंक खातों की त्रुटि एवं अन्य तकनीकी कारणों से जिन लोगों के खाते में राशि नहीं पहुँची है, इसके लिये तत्परता से कार्रवाई की जा रही है। प्रभारी मंत्री सिलावट ने फसल सर्वे को भी जल्द से जल्द अंतिम रूप देकर शासन के प्रावधानों के तहत प्रभावित किसानों के खाते में राहत राशि पहुँचाने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि सर्वे का काम पूर्ण हो चुका है। केवल धान के उन्हीं खेतों में सर्वे को अंतिम रूप दिया जाना है, जो पानी से ऊपर तक भरे हैं।

प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट ने बैठक में विपणन संघ व कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि रबी मौसम के लिए खाद-बीज वितरण की व्यवस्था ऐसी हो, जिससे किसानों को खाद के लिए लाइन में न लगना पड़े। उन्होंने जोर देकर कहा कि खाद की कालाबाजारी करने की जुर्रत करने वालों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करें। इसके लिए टीम गठित कर जाँच कराएँ। सिलावट ने खाद वितरण केन्द्र चीनौर को सक्रिय करने के निर्देश भी दिए। बैठक में बताया गया कि जिले में पर्याप्त मात्रा में एनपीके व यूरिया उर्वरक उपलब्ध है। प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट ने अतिवर्षा और जल भराव से क्षतिग्रस्त हुई सड़कों को युद्ध स्तर पर दुरूस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने निगम आयुक्त से कहा कि ग्वालियर शहर की सड़कों की मरम्मत हर हाल में 20 दिन के भीतर पूर्ण कराएँ। सिलावट ने शहर की विभिन्न बस्तियों की चौक सीवर लाइनों को भी अभियान बतौर ठीक कराने के लिये कहा। साथ ही विशेष मुहिम चलाकर शहर के ऐसे सभी नालों से अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए जिनके कारण जल भराव की स्थिति निर्मित हुई थी। बैठक में कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में विधायक मोहन सिंह राठौर, संभाग आयुक्त मनोज खत्री, कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार, नगर निगम आयुक्त अमन वैष्णव, भाजपा जिला अध्यक्ष ग्रामीण कौशल शर्मा एवं राजेन्द्र पाल व विनोद शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार, कुमार सत्यम व टीएन सिंह सहित अनेक अधिकारी मौजूद थे।

मध्यप्रदेश के प्रतिभागियों ने विश्व कौशल प्रतियोगिता-2024 में रोशन किया प्रदेश का नाम

भोपाल। मध्यप्रदेश के प्रतिभागियों द्वारा विश्व कौशल प्रतियोगिता-2024 में उल्लेखनीय प्रदर्शन के उपलक्ष्य में गुरुवार को संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क में एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम टेटवाल ने प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

मंत्री गौतम टेटवाल ने विजेताओं के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ÷आप सभी ने अपनी मेहनत और अद्वितीय कौशल से न केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश का मान बढ़ाया है। आपकी यह उपलब्धि हमें गौरवान्वित करती है। यह कार्यक्रम न केवल आपके कौशल की पहचान है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण भी है कि यदि सही मार्गदर्शन और अवसर मिले तो हमारे युवा वैश्विक स्तर पर भी उत्कृष्टता का परिचय दे सकते हैं।मंत्री टेटवाल ने प्रतिभागियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ÷आपके इस समर्पण और कौशल से देश को एक नई दिशा मिलेगी। साथ ही प्रदेश के युवा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरित होंगे। आप सभी हमारे प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। प्रदेश सरकार आपके कौशल को और निखारने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी।प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। इसके अलावा, उन्हें मेडल ऑफ एक्सीलेंस के सम्मान से भी नवाजा गया, जिससे उनका उत्साह और बढ़ा। कार्यक्रम में सचिव रघुराज राजेन्द्रन, मुख्य कार्यपालन अधिकारी राज्य कौशल विकास एवं रोजगार बोर्ड गौतम सिंह और सीनियर डायरेक्टर संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क शमीम उद्दीन ने भी विजेताओं की सराहना की। पदक विजेता में राहुल विश्वकर्मा ने कारपेंट्री में स्वर्ण पदक एवं संस्कार शर्मा ने साइबर सुरक्षा में रजत पदक जीता। इसके अलावा कविश लोढ़ा को ऑटोनोमस मोबाइल रोबोटिक्स में, रशदीप कौर राजपाल को ब्यूटी थेरेपी में, नारायण दादू को कार पेंटिंग में रेशमी वर्मा को कस्टम टेलरिंग में, मिथिलेश तिवारी को साइबर सुरक्षा में, अवध सिंह को इलेक्ट्रॉनिक्स में, श्याश महेश्वरी को फैशन टेक्नोलॉजी में, विधान श्रीवास्तव को योग में मेडल ऑफ एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया।

भारत-बांग्लादेश टी-20 मैच की व्यवस्थाओं का खर्च क्या बीसीसीआई से वसूलेगा नगर निगम, पुलिस और जिला प्रशासन ?

ग्वालियर। भारत-बांग्लादेश टी-20 मैच की व्यवस्थाओं की तैयारियों में ग्वालियर का पुलिस और प्रशासन तो जुटा ही है साथ ही नगर निगम सहित अन्य विभागों का अमला भी झोंक दिया गया है। मैच की तैयारियों को लेकर प्रशासन के माध्यम से सरकार का लाखों रूपया खर्च हो रहा है। ये रूपया भी जनता की गाढ़ी कमाई का ही है अब सवाल ये है कि क्या जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, नगर निगम और अन्य विभाग बीसीसीआई से इस खर्च की वसूली करेंगें ? या फिर मैच के बाद खर्च का आंकलन कर बीसीसीआई को इसका बिल भेजा जाएगा। फिलहाल इसका जबाब देने के लिए कोई भी अधिकारी या जिम्मेदार जनप्रतिनिधि तैयार नहीं है। अनौपचारिक रूप से ये जरूर कहा जा रहा है कि हमें ज्यादा दिमाग लगाने की जरूरत नही है जो कहा गया है वो कर रहें है इससे ज्यादा सोचने की आवश्यकता नही हैं।

दरअसल शंकरपुर में नया क्रिकेट स्टेडियम बनने के बाद पहला इंटरनेशनल मैच 6 अक्टूबर को यहां होने जा रहा है। इस मैच को लेकर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया बेहद उत्साहित है। मैच की तैयारियों को लेकर वो स्टेडियम का दौरा भी कर चुके है। प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट ने भी मैच के तैयारियों का जायजा लिया है। ऐसे में मैच का आयोजन अघोषित रूप से सरकारी

सा हो गया है। मैच के लिए करीब 3 हजार पुलिस अधिकारी और जवान तैनात रहेंगे, तो जिला प्रशासन, नगर निगम सहित अन्य विभागों के सैकडों अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। वहीं अन्य व्यवस्थाओं में भी नगर निगम और अन्य विभागों के संसाधनों का पूरा इस्तेमाल हो रहा है। लेकिन इस खर्च की भरपाई किस मद से होगी, ये किसी को पता नही है। मैच के खिलाडियों के लिए होटल से स्टेडियम तक जाने वाली सड़कों को रातों रात चमका दिया गया है। चिन्हित रूट पर ट्रेफिक व्यवस्था भी टकाटक की जा रही है। स्टेडियम में भरे पानी को सुखाने के लिए कलेक्टर से लेकर निगम निगम कमिश्नर और स्मार्ट सिटी तक के अधिकारी चिंतित दिखे। लेकिन ग्वालियर की तमाम सड़कों का हाल किसी से छिपा नही है। शहर की ट्रेफिक व्यवस्था का हाल बेहाल बदस्तूर है। इस बार की बारिश में शहर के तमाम इलाके जलभराव की चपेट में थे, लेकिन तब अधिकारियों की ऐसी फुर्ती शायद नदरात थी।

बहरहाल ग्वालियर में इंटरनेशनल मैच होना अच्छी बात है और केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके पुत्र जीडीसीए उपाध्यक्ष महाआर्यमन सिंधिया के प्रयासों से ग्वालियर में हो रहे मैच को प्रसिद्धि भी मिल रही है। लेकिन इस पर होने वाला खर्च भी बीसीसीआई को देना चाहिए, क्योंकि बीसीसीआई विश्व की सबसे धनाढ्य क्रिकेट संस्था है तो मैच से होने वाली कमाई को व्यवस्थाओं पर खर्च भी करना चाहिए। आम जनता को इस मैच से क्या मिलेगा, इसका आंकलन तो नहीं किया जा सकता। लेकिन जनता के रूपयों को इस तरह के खर्चें ग्वालियर के लिहाज से तो ठीक नजर नही आते। यदि बीसीसीआई मैच के बाद नगर निगम और जिला प्रशासन को मैच के आयोजन में हुये खर्चें की राशि देता है तो यह राशि ग्वालियर के विकास में लगाई जा सकती है।

एलएनआईपीई का दसवां दीक्षांत समारोह आज

ग्वालियर। लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान (एलएनआईपीई) ग्वालियर का दसवां दीक्षांत समारोह आज शुक्रवार 4 अक्टूबर को संस्थान के बहुउददेश्यीय हाल में आयोजित होगा। दीक्षांत समारोह के अध्यक्ष केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डा. मनसुख मांडविया होंगे। जबकि दीक्षांत भाषण राजमाता विजयाराजे कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविन्द शुक्ला देंगे। यह जानकारी गुरूवार को पत्रकारों को प्रभारी कुलपति एलएनआईपीई इन्दु बोरा एवं दीक्षांत समारोह के कोर्डीनेटर कृष्णकांत साहू ने दी।एलएनआईपीई के पदाधिकारियों ने पत्रकारों को

बताया कि दीक्षांत समारोह में 2022-23 तक के 320 छात्रों को उपाधि प्रदान की जाएगी। साथ ही बीपीएड एवं एमपीएड पाठयक्रम में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को गोल्ड मैडल से सम्मानित किया जाएगा। इसके उपरांत केन्द्रीय खेल मंत्री द्वारा खेल मंत्रालय के रीसेट प्रोग्राम से सभी प्रतिभागियों का दीक्षा आरंभ किया जाएगा, वह देश के ऐसे सेवानिवृत खिलाडी है जो कभी ओलंपिक, कामनवेल्थ एवं एशियन खेल सहित खेल मंत्रालय से अधिकृत अंर्तराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुके हैं। इस अवसर पर केन्द्रीय खेल मंत्री एलएनआईपीई परिसर में नवनिर्मित 400 बिस्तर के हास्टल और संस्थान में नए डिजिटल स्टूडियो का भी उदघाटन करेंगे। पत्रकारवार्ता में डा मेघा साहू भी मौजूद थी।

नया बाजार करौली मंदिर से अग्रसेन जी महाराज की भव्य प्रभात फेरी निकली, हुआ स्वागत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। मंदिर श्री मदन मोहन जी महाराज नया बाजार से श्री अग्रवाल करौली वालान पंचायत द्वारा अग्र कुल प्रवर्तक भगवान श्री महाराजा अग्रसेन के जन्मोत्सव के उपलक्ष में एक भव्य प्रभात फेरी निकाली गई। पंचायत के महासचिव सुनील अग्रवाल सनी ने बताया कि प्रभात फेरी का शुभारंभ मुख्य जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री पी.सी. गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर किया, साथ ही वरिष्ठ एडवोकेट अरविंद दुदावत विशिष्ट अतिथि थे। अग्रवाल समाज के वरिष्ठजन एवं मातृशक्ति एवं सभी अग्रबंधु प्रभात फेरी में भारी संख्या में साथ चल रहे थे।

प्रभात फेरी नया बाजार स्थित करौली मंदिर से प्रारंभ होकर नया बाजार, दाल बाजार तिराहा, दाल बाजार, हाई कोर्ट और लोहिया बाजार होते हुए निकली। दाल बाजार, नया बाजार, लोहिया बाजार में अग्र बंधुओं एवं व्यापारियों द्वारा प्रभात फेरी का पुष्प वर्षा एवं जलपान के साथ भव्य स्वागत किया गया। जगह-जगह पर स्वागत हेतु सुंदर तोरण द्वार बनाए गए थे। प्रभात फेरी में सबसे आगे जयघोष वाहन के साथ भगवान अग्रसेन का ध्वज, उसके पीछे दयाल बैंड चल रहा था। भव्य रथ में महाराजा अग्रसेन का छायाचित्र विराजमान किया गया। सभी बाजारों में व्यापारी समूह बनाकर अपने घर एवं दुकान के बाहर पूजा की सामग्री एवं आरती की थाली लेकर प्रभात फेरी के इंतजार में खड़े हुए थे। अग्र बंधुओं एवं व्यापारियों ने ध्वज एवं महाराज अग्रसेन के चित्र पर माल्यार्पण कर पूजा अर्चना की एवं आरती उतारी। प्रभात फेरी में लोगों का भारी उत्साह देखने लायक था प्रभात फेरी का समापन मंदिर पर श्री मदन मोहन जी व श्री अग्रसेन जी की आरती के साथ प्रभात फेरी सम्पन्न हुई। अग्रवाल पंचायत के महासचिव सुनील अग्रवाल सनी ने बताया अग्रवाल पंचायत द्वारा अग्रसेन जयंती पर प्रभात फेरी का प्रथम प्रयास था, और इस प्रयास आशा से अत्यधिक सफलता मिली है, जो हमें आगामी वर्षों में यह जन्मोत्सव मनाते रहने को प्रोत्साहित करती है।

अग्रवाल करौलीवाला पंचायत अध्यक्ष रविंद्र सिंघल, महासचिव सुनील अग्रवाल सनी, उत्सव मंत्री संजय अग्रवाल ने इस सफल आयोजन के लिए सभी अग्रबंधुओं के प्रति आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर संजय सिंघल, ओम प्रकाश अग्रवाल लल्ला, मोहनलाल अग्रवाल, एमएलए हरीबाबू गोयल, गोपाल गोयल, समीर अग्रवाल, सतीश गर्ग, श्याम अग्रवाल, आशीष अग्रवाल, मयूरेश अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, ओमप्रकाश गर्ग, रामनाथ अग्रवाल, राजेश गर्ग, मनोज अग्रवाल बाबा जनरल, हितेंद्र अग्रवाल हीरा, महेश अग्रवाल, हर्ष अग्रवाल, अमर अग्रवाल, विजय जैन, मोहक अग्रवाल, चिराग अग्रवाल, कपिल अग्रवाल, मयंक अग्रवाल, मधुर मित्तल, सौरभ अग्रवाल, गौरव अग्रवाल आदि अनेकानेक अग्रबंधु मातृशक्ति बहनें, प्रभात फेरी में जयघोष करते हुए चल रहे थे।

लॉयन्स क्लब एलीट ने निकाली विश्व शांति रैली, किया स्वच्छता कर्मियों का सम्मान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती के अवसर पर लॉयन्स क्लब एलीट ने एक भव्य विश्व शांति रैली का आयोजन किया। इस अवसर पर क्लब की अध्यक्ष लाइन भारती मोदी ने बताया कि आज से लॉयन्स सेवा सप्ताह की शुरुआत हो गई है, जो 02 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक मनाया जाएगा। इस सेवा सप्ताह में मुरैना के सभी लॉयन्स क्लब भागीदारी करेंगे, और प्रत्येक दिन की गतिविधियों की जिम्मेदारी विभिन्न क्लबों को सौंपी गई है। इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में रीज़न चेयरपर्सन लॉयन डॉ. रितु राठी तथा विशिष्ट अतिथि रीज़न कोऑर्डिनेटर इंजीनियर राजेश बांदिल एवं ज़ोन चेयरपर्सन इंजीनियर नीता बांदिल शामिल हुए ।

रैली में लॉयन्स क्लब की विभिन्न इकाइयों के पदाधिकारियों और सदस्यों ने हिस्सा लिया। शाम 5 बजे शहीद संग्रहालय से शुरू होकर यह रैली नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई गांधी स्मारक बाल निकेतन रोड पर पहुँची। यहाँ पर सर्वप्रथम गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया तथा नगर निगम के 11 सफाई कर्मचारियों का माला, शॉल और उपहार देकर सम्मान किया गया। इस रैली के माध्यम से लॉयन्स क्लब मुरैना ने शांति, सेवा और सामुदायिक सहभागिता का महत्वपूर्ण संदेश दिया।

रैली में लॉयन्स क्लब एलीट की कोषाध्यक्ष मयूरी गुप्ता, क्लब एडमिन लॉयन डॉ. अनुभा माहेश्वरी, उपाध्यक्ष लॉयन भावना जैन एवं लॉयन डॉ. अनुपमा गर्ग, लॉयन शैली मंगल, लॉयन ममता बंसल, लॉयन प्रभा अग्रवाल, लॉयन मीरा मंगल, लॉयन रानी अग्रवाल, लॉयन डॉ. अनीता तुलसानी, लॉयन पारुल गुप्ता, लॉयन रेणुका नायर, लॉयन पूजा सिंघल, लॉयन अंशुल गोलस, लॉयंस क्लब वेस्ट के अध्यक्ष प्रमोद सिंघल, सचिव लायन राजेश गोयल, लॉयन्स क्लब समन्वय की अध्यक्ष लॉयन डॉ. मीरा बांदिल, सचिव लॉयन सपना मांडिल, लॉयन पूनम गांगिल, लॉयन मीना गुप्ता, लॉयन शालू गोयल, लॉयंस क्लब दिव्य की अध्यक्ष लाइन किरण गुप्ता, सचिव लॉयन मधु सिंघल, कोषाध्यक्ष लॉयन डोली वर्मा, लॉयंस क्लब मुरैना की अध्यक्ष लॉयन अल्पना गुप्ता, सचिव लॉयन जेपी पंडित जी, लॉयंस क्लब अम्बाह के अध्यक्ष लॉयन सुजीत सिंह मावई, लॉयंस क्लब कैलारस के अध्यक्ष लॉयन संदीप शर्मा, लॉयन सीमा सिंघल, लॉयन बबिता जैन, लॉयन रेणु गोयल, लॉयन ममता अग्रवाल आदि सदस्य शामिल हुए।

पुलिस ने गुड्डा गुर्जर गैंग के फरारी को पकड़ा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ (मापुसे) द्वारा ईनामी / फरारी बदमाशों एवं स्थायी-गिरफ्तारी वारंटियों की धरपकड़ हेतु सम्पूर्ण जिले में विशेष अभियान संचालित कराया जा रहा है। उक्त अभियान के तारतम्य में अति. पुलिस अधीक्षक डॉ. अरविन्द सिंह ठाकुर के निर्देशन एवं एसडीओपी कैलारस रवि सोनेर के मार्गदर्शन में थाना पहाड़गढ़ पुलिस द्वारा गुड्डा गुर्जर गैंग के साथी फरार स्थाई वारण्टी को 315 बोर की बंदूक व 02 जिंदा राउण्ड सहित गिरफ्तार किया गया।

दिनांक 02.10.2024 को कार्य. निरीक्षक राजेन्द्र सिंह परिहार थाना प्रभारी पहाड़गढ़ को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि गुड्डा गुर्जर गैंग का साथी एवं माननीय न्यायालय डकैती

कोर्ट जौरा के प्रकरण क्रमांक 07/23 में फरार स्थायी वारण्टी ग्राम नयागांव, थाना सुभाषपुरा जिला शिवपुरी में कहीं निवास कर रहा है। मुखबिर की सूचना की तस्दीक हेतु थाना प्रभारी पहाड़गढ़ द्वारा मय फोर्स के ग्राम नयागांव थाना सुभाषपुरा जिला शिवपुरी पहुंचकर तलाश किया गया, तो अखलेश जाटव की टपरिया के पास पेड़ के नीचे पत्थर की बाउंड्री पर मुखबिर द्वारा बताये हुलिये का एक व्यक्ति बैठा दिखा, जिसे घेराबंदी कर पकड़कर तलाशी ली गई तो उसके पास से 315 बोर के 02 जिंदा राउण्ड मिले, जिसके संबंध में पूछताछ की गई तो उसने बताया कि नयागांव में मैंने जमीन खरीद ली है। मैंने अपनी सुरक्षार्थ 315 बोर की बंदूक को खेत पर झाडियों में छुपा कर रखा है। जिसके उपरांत आरोपी की निशानदेही में उसके खेत पर पहुंचकर झाडियों से निकालकर एक बंदूक 315 हाथ की बनी हुई जप्त की गई। आरोपी की गिरफ्तारी उपरांत आज दिनांक 03.10.2024 को आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

जिले में महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु मुरैना पुलिस ने शुरू किया विशेष अभियान "मैं हूँ अभिमन्यु"

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। पुलिस मुख्यालय भोपाल (म.प्र.) द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक अलख जगाने व इस हेतु समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से 03 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक प्रत्येक जिले में विशेष जागरूकता अभियान 'मैं हूँ अभिमन्यु' संचालित किये जाने संबंधी दिशा-निर्देश दिए गए हैं। 'मैं हूँ अभिमन्यु' विशेष अभियान का मुख्य उद्देश्य महिलाओं एवं बालिकाओं के विरूद्ध होने वाले अपराधों पर नियंत्रण एवं समाज में लडका-लडकी को समान अवसर व हर स्तर पर व्याप्त लिंगभेद को समाप्त करना है। उक्त निर्देशों के तारतम्य में पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ (भापुसे) द्वारा जिले के समस्त थाना

प्रभारियों एवं राजपत्रित अधिकारियों (पुलिस) को 'मैं हूँ अभिमन्यु' विशेष अभियान के तहत थाना क्षेत्रांतर्गत कार्यक्रम आयोजित किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। जिसके पालन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. अरविन्द सिंह ठाकुर के निर्देशन एवं रवि सोनेर एसडीओपी कैलारस व प्रभारी नगर पुलिस अधीक्षक मुरैना, उप पुलिस अधीक्षक (महिला सुरक्षा शाखा) जिला मुरैना, श्रीमती बिन्दु परमार के कुशल मार्गदर्शन में दिनांक 03.10.2024 को कार्य. निरी. डिम्पल मौर्य थाना प्रभारी महिला थाना, संतोष भदौरिया थाना प्रभारी यातायात जिला मुरैना, कार्य. निरी. भूमिका दुबे द्वारा टी.आर. पुरम स्थित नील वर्ल्ड स्कूल में 'मैं हूँ अभिमन्यु' विशेष अभियान के तहत चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नील वर्ल्ड स्कूल में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में 400 विद्यार्थियों द्वारा भाग लिया गया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र व शील्ड प्रदान की गई। शेष सभी विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता उपरांत जागरूकता अभियान के दौरान पुलिस मुख्यालय द्वारा प्रदान की गई शॉर्ट क्लिप मूवीस भी बच्चों को दिखाई गई। मुरैना पुलिस का यह विशेष जागरूकता अभियान 'मैं हूँ अभिमन्यु' आज दिनांक 03.10. 2024 से शुभारंभ होकर दिनांक 12.10.2024 तक जारी रहेगा, इस दौरान विभिन्न माध्यमों से लोगों को महिला सशक्तिकरण हेतु जागरूक किया जावेगा।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. अंजली पब्लिकेशन एबी रोड़ मथुरा से मुद्रित, एवं ए-44-फस्ट फ्लोर, अशोका इन्क्लेव, पार्ट-2 सेक्टर- 37 फरीदाबाद हरियाणा (NCR) से प्रकाशित,
आरएनआई नं. एचएआरएचआईएन /2009/ 28496 संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे। मो. 9958434103 सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा।